मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
जून १९९२
सम्मोहन विशेषांक
मूल्य १५/-

अद्वितीय अनुपम

आजीवन सदस्यता

"मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" पत्रिका की आजीवन सदस्यता एक गौरव है, एक स्वाभिमान है, जीवन का सौभाग्य है और साधना की पूर्णता है, यह एक अनुपम गुरुदेव के हृदय के निकट पहुंचने की प्रिय पात्रता है, साधना में पूर्ण सिद्धि प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है ....

और आजीवन सदस्यता शुल्क मात्र ६६६६/- है जिसे एक मुश्त या तीन किश्तों में जमा कराकर यह सौभाग्य प्राप्त किया जा सकता है।

और फिर अप्रैल ९३ से तो पत्रिका व्यवस्थापकों ने आजीवन सदस्य बनने वाले को उपहारों का ढेर लगा दिया है -

- पूरे जीवन भर "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" पत्रिका सर्वथा निःशुल्क आपके घर पर डाक द्वारा
- सम्पूर्ण दीक्षा - रसेश्वरी दीक्षा - एक माह के भीतर भीतर निःशुल्क
- एक इक्कीस तोले का पारद शिवलिंग - जिसकी लागत न्यौछावर ही २५०० रू० है, पर आपको सर्वथा निःशुल्क
- एक १६ x २० साइज का प्राण ऊर्जा से चैतन्य, सिद्ध गुरुचित्र निःशुल्क
- प्रत्येक शिविर में अत्याधिक उपयोगी "शिविर सिद्धि पैकेट" १, धोती, २. माला, ३. पंच पात्र, ४. गुरुचित्र तथा ५. सिद्धासन - सर्वथा निःशुल्क
- "सूर्यकान्त उपरत्न" जो मंत्र सिद्ध है, उंगली में जड़वाकर पहिनने योग्य, सर्व कार्य सिद्धि दायक सर्वथा मुफ्त
- यह छूट केवल भारत में रहने वाले साधकों को ही प्राप्त होगी
- यह सुविधा ३ जुलाई ९३, गुरुपूर्णिमा तक बढ़ाई गई है (विशेष अनुरोध पर)।

आजीवन सदस्य

यों आप बिना उपरोक्त उपहारों के मात्र २४०० रू० देकर भी आजीवन सदस्य बन सकते हैं।

आपको जीवन भर "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" पत्रिका निःशुल्क घर बैठे प्राप्त होती रहेगी।

और

जो साधक या पाठक किसी को विशेष आजीवन सदस्य बनने के लिये प्रेरित करेगा उसे एक धातु युक्त पारद शिवलिंग निःशुल्क उपहार स्वरूप प्राप्त होगा।

विशेष

और फिर यह आपकी धरोहर धनराशि है जो पत्रिका कार्यालय में आपके नाम से जमा रहेगी, जब भी आप आजीवन सदस्य न रहना चाहें, आप रजिस्टर्ड डाक से इस प्रकार का पत्र भेज दें, (जिसका प्रमाणीकरण कार्यालय द्वारा हो) पत्र भेजने की तारीख से दस वर्ष बाद **यह धरोहर धनराशि, बिना ब्याज के आपको लौटा दी जायेगी।**

सम्पर्क

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

फोन : ०२९१-३२२०९

आयुष कुमार स्नातक बी० ए० इलाहाबाद विश्वविद्यालय

आनो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत:
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रार्थना

सम्मोहय भवतु वै परिपूर्ण सिद्धिं
सम्मोहय भवतु वै दैव्यानुग्रहाय वै
सम्मोहय धन धान्य ऐश्वर्य रूपं
सम्मोहय भवतु वै परिपूर्ण मोक्षं

सम्मोहन के द्वारा ही सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं सम्मोहन के द्वारा ही देवताओं का अनुग्रह प्राप्त होता है, सम्मोहन ही धन, धान्य, ऐश्वर्य व रूप का आधार है और यही अंत में मोक्ष तक ले जाने में समर्थ हैं।

नियम

विषय सूची

"वशीकरण यंत्र" पर मेरे सिद्ध सफल प्रयोग

इस यंत्र पर मैंने जितनी भी बार इन प्रयोगों को आजमाया है ये शत-प्रतिशत सफलतादायक सिद्ध हुए हैं, इन्हीं प्रयोगों को पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं।

१. यदि कोई स्त्री अपने गले में इसे धारण करे तो उसका पति या प्रेमी वश में रहता है।

२. इस प्रकार का वशीकरण यंत्र धारण कर प्रेमी या प्रेमिका का नाम उच्चारण कर उसका आह्वान किया जाए तो वह आ जाता है।

३. यदि इसे दुकान की चौखट पर बुधवार के दिन बांध दिया जाए तो व्यापार वृद्धि होती है और ग्राहक बढ़ते हैं।

४. यदि घर में बाँध दिया जाए तो घर में प्रेम भावना बनी रहती है।

५. यदि इण्टरव्यू के लिए जा रहे हों तो इसे धारण करके जाने पर निश्चित सफलता प्राप्त होती है।

६. किसी पर मुकदमा चल रहा हो तो वह यदि वशीकरण यंत्र अपने साथ ले कर जाये तो सफलता प्राप्त होती है।

७. यह वशीकरण यंत्र धारण कर यदि मन ही मन शत्रु को वशीभूत करने का विचार करें तो उसका शत्रु वश में हो जाता है और आँख उठाकर देखने की हिम्मत नहीं रखता।

८. यदि किसी बच्चे के गले में इसे पहना दिया जाय तो उसके ऊपर किसी टोटके का असर नहीं होता है।

९. जो व्यक्ति अपने जीवन से तंग आ कर आत्म-हत्या करने का विचार करता है उसको पहना देने से उसे अपने जीवन के प्रति लगाव हो जाता है और वह आत्म-हत्या का विचार छोड़ देता है।

१०. घर में बीमार व्यक्ति के ऊपर से पाँच बार वशीकरण यंत्र घुमाकर रोगी के पलंग से बाँध दे तो वह धीरे-धीरे ठीक होने लगता है।

मंथन

ज्योतिष विज्ञान के अनुपम अध्येता, जिन्होंने
ज्योतिष को न केवल स्वदेश में अपितु
विदेशों में भी पुनर्प्रतिष्ठित किया

पूज्यपाद गुरुदेव

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

सौ के लगभग ज्योतिष ग्रंथों के रचयिता, भारतीय ज्योतिष सम्मेलन के वर्षों तक रहे अध्यक्ष।

आप भी पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार, दिल्ली प्रवास के अवसर पर जन्म कुंडली एवं हस्तरेखा के द्वारा अपना भविष्य जानकर जीवन को सही दिशा दे सकते हैं।

न्यौछावर - २१००/-

३०६ कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा

नई दिल्ली-११००३४

फोन - ०११-७१८२२४८

नोट : आने से पूर्व टेलीफोन द्वारा सम्पर्क अवश्य कर लें।

वर्ष १३ अंक ६ **सम्पादक मंडल** **जून ९३**

पत्र व्यवहार : मंत्र-तंत्र-यंत्र कार्यालय डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान), टेलीफोन-०२९१-३२२०९

दिल्ली कार्यालय-गुरुधाम ३०६ कोहाट एन्कलेव, नई दिल्ली, टेलीफोन-०११-७१८२२४८

सम्पादक मंडल - डॉ० श्यामलकुमार बनर्जी, कृष्ण मुरारी श्रीवास्तव, गुरुसेवक

संयोजन - कैलाशचन्द्र श्रीमाली

वित्तीय सलाहकार - अरविन्द श्रीमाली

आवरण सज्जा - एस. के. बनर्जी, फैजाबाद

प्रधान सम्पादक

नन्दकिशोर श्रीमाली

अपनों से अपनी बात

एक सलोना सा रंग है रंगों की भीड़ में जामुनी। न इसमें लाल रंग की शोखी न पीले रंग की चमक न हरे की खिलखिलाहट और न आसमानी रंग की नजाकत। बस कोने में खड़ा यह रंग चुपचाप मुस्करा रहा है युगों से। पांच हजार वर्षों से! सांवरे का रंग जो ठहरा ! वे तो आये एक युग को संवार अपना सांवरापन छोड़ कर चले गये, देखिए न, इस रंग को क्या लगता नहीं उनका स्पर्श पाकर यह रंग भी कमनीय हो जादू से भर गया।

रंग ही नहीं वे तो बहुत कुछ छोड़ गये। वे तो छोड़ने ही आये थे पर उनकी कसक रह गयी कि काश! लोग उनके साथ ही भीग सकते। और भीगना भी किसमें? क्या प्रेम के अतिरिक्त कहीं और भीगा जा सकता है? हम जीवन के किसी भी पक्ष में भले ही जाकर वहां जीने का कोई अर्थ ढूंढ लें, लेकिन भीगने वाली बात तो नहीं हो पाती। कसक रह जाती है, कृष्ण यही बताने आये थे कि जीवन में कोई कसक न रह जाये और हृदय में संगीत फूटे। उन्होंने हृदयों में संगीत जगाये, जिसकी फिर अभिव्यक्ति हुई नृत्य, प्रेम, सौन्दर्य और श्रृंगार से। कृष्ण ने यही किया किंतु समाज की सीमित दृष्टि ने उनके प्रयासों को अपनी मान्यताओं से आंक कर ओछा कहा। कृष्ण ने भी परवाह नहीं की, जो युग पुरूष होते हैं वे समाज की आलोचनाओं की परवाह नही करते किंतु उनके हृदय में कसक रह जाती है कि काश ! ये लोग मुझे समझ सकते। समाज तो दूर उनके साथ रहने वालों ने भी उनकी उदारता और हृदय को नहीं समझा।

जीवन को उल्लास, उमंग और नवीन प्राणश्चेतना से भरने के बाद उन्होंने संसार को जो अप्रतिम ग्रंथ भेंट किया उससे भला कौन नहीं परिचित होगा, गीता को कौन भारतीय अपने हृदय से नहीं लगाता किंतु जरा इतिहास पर दृष्टि दौड़ाइये, क्या कुछ मुट्ठी भर लोगों को छोड़, भीष्म पितामह और विदुर जैसे विद्वानों को छोड़, कोई उनकी महत्ता उनके जीते जी आंक पाये उसका सम्मान कर पाया? नहीं! यही फिर बाद में बुद्ध के युग में दोहराई कथा है कि उन्हें जीते जी समाज नहीं पहचान पाया और बुद्ध के बाद शंकराचार्य, शंकराचार्य के बाद रामकृष्ण परमहंस......। एक लम्बी कड़ी है प्रत्येक युग में अवतरित होने वाले युग पुरुषों की, अथवा यूं कहें कि उसी एक चैतन्य घन की विविध नामों से विविध अंशों से। बाद में सबने महत्ता मानी, और फिर सिर आंखों पर बैठाया। गीता पर बड़े-बड़े भाष्य लिखे गये, उन पर तो फिर भाष्य लिखने वाले अमर हो गये। चाहे वे लोकमान्य तिलक हों या श्री मधुसूदन दत्त। एक सौ दो सौ पृष्ठ नहीं तीन-तीन हजार पृष्ठों में विद्वानों ने व्याख्या की और तृप्त न हो सके, युग पुरूषों को अपने को पुजवाने की चाह नहीं होती, उनकी कसक मात्र इतनी होती है कि लोग उनके जीते जी उन्हें पहचान सकें और लाभ ले सकें।

आपकी यह 'मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका' भी आज से बारह वर्ष पूर्व जीवन के इन्ही विराट् चिंतनों को लेकर प्रकाशित होनी आरम्भ हुई। इसका केवल एक मात्र लक्ष्य था कि हमारे प्राचीन ज्ञान-विज्ञान की पुनः प्रतिष्ठा हो। जो कुछ आज के परिपेक्ष्य में अविश्वसनीय, काल्पनिक मान लिया गया है उसकी प्रामाणिकता सिद्ध हो। निरंतर आलोचनाओं और कुतर्कों से जूंझते हुये भी इसका प्रकाशन थमा नहीं। यह तो आने वाला समय बतायेगा कि इसके एक-एक शब्द में क्या-क्या छुपा है और यह भी सत्य है कि इसके एक-एक अंग का पुनर्मुद्रण लाखों की नहीं वरन् करोड़ों की संख्या में होगा ही, क्योंकि यह अपने आप में श्रीमद्भगवद् गीता ही है। यहां पर कृष्ण ने खड़े होकर एक अर्जुन को उपदेश नहीं दिया वरन् अनेक अर्जुनों को कटिबद्ध करना चाहा है, क्योंकि आज के युग में कौरव सौ नहीं सहस्त्र हो गये हैं और महाभारत जीवन के एक-एक क्षेत्र में व्याप्त है और यहीं पर कृष्ण का वर्तमान रूप गुरुदेव है, निश्चय ही!

छलांग लगाने की बात है पूज्य गुरुदेव के संदेश को घर-घर पहुंचाने की। यही आपका सिंहत्व है, यही आपका श्रेयत्व हैं यह समाज गीदड़ों से भरा है वे टोली बनाकर हुआ-हुआ करेंगे, क्योंकि उनका रक्त वही है किंतु आप तो पूज्य गुरुदेव के गोत्र के हैं आप क्यों झिझकते हैं आप को अब सन्नद्ध होना है और निश्चय करके हुँकारा भर ही देना है।

इस युग का महारास यूं होगा कि प्रत्येक शिष्य या साधक दूसरे शिष्य या साधक का हाथ पकड़ कर झूमते हुये, आसमान की और उछलते हुये जायेंगे। इस महारास में सम्मिलित होकर देखिए। देखिए, कितना अधिक उमंग-उल्लास आपके अंदर भर जायेगा। कभी किसी को कुछ बांटकर देखिए, फिर उसकी आंखों में करुणा तैर जायेगी, उससे आपका पूरा जीवन भीग जायेगा। यही बांटने का सुख और बदले में भीगने का सुख मूर्त रूप लेगा। पत्रिका का विस्तार करके आप पूज्य गुरुदेव के प्राणों में तो उतर ही जायेंगे, उनके आशीर्वाद के पात्र तो बनेंगे ही, और इससे भी आगे बढ़कर उनके हृदय की धड़कन बन जायेंगे, और यही तो हमें इस जीवन में प्राप्त करना है।

आप आज ही निश्चय कर लीजिए कि आपको हर हालत में पत्रिका की दस प्रतियां अतिरिक्त मंगवानी ही है। दस पत्रिका आपके लिए प्राथमिक बिंदु हो, न कि अंतिम बिंदु। मैं आपके प्रत्युत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हूं, मुझे आप पर अविश्वास तो है ही नहीं। केवल आप से अपने हृदय की एक बात कहनी थी सो कही। मुझे आप में से प्रत्येक शिष्य पर पूर्ण विश्वास है क्योंकि पूज्य गुरुदेव ने उन्हें अपनी प्राणश्चेतना से सींचा है और परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के प्राण दुर्बल हो ही नहीं सकते।

इस अंक में मैं आप से सम्पादक के रूप में नहीं सम्बोधित हो रहा। इस बार तो परिवार के सदस्य के रूप में और पूज्य गुरुदेव ने मुझे जो गुरुतर दायित्व दिया है उस रूप में अपनों से अपनी बात कही है। हमारे आपके मध्य केवल एक सामान्य पत्रिका के पाठक व सम्पादक का औपचारिक सम्बन्ध ही नहीं वरन् उससे भी कहीं आगे के आत्मीय संबंध हैं। यह उन्हीं आत्मीय संबंधों के तार पर हुई झंकार आप तक शब्दों के माध्यम से प्रेषित कर रहा हूँ।

आपका अपना

नन्द किशोर श्रीमाली

पाठकों के पत्र

मैं सम्मोहन साधना में रुचि रखता हूं और यह जान कर प्रसन्नता हुई कि पूज्य गुरुदेव ने ''हिप्नोटिज्म रहस्य'' शीर्षक से एक वीडियो कैसेट ही साधकों की सुविधा के लिए तैयार करवा दिया है। मैं इसे प्राप्त करने का इच्छुक हूं।

गणपति कांकरेज (जी.ओ.)
भारतीय वायु सेना, शिलांग

पत्रिका का मई का अंक बेहद अच्छा लगा लेकिन सदैव की भांति आपने अंतिम पृष्ठ पर साधना की आवश्यक सामग्रियों की न्यौछावर न देकर केवल दीक्षाओं का वर्णन ही दिया है। कृपया इस अंक में आई साधना सामग्रियों की आवश्यक न्यौछावर को अगले अंक में देने की कृपा करें।

बी. एल. राजपूत, भागलपुर

पत्रिका का मई का मुख पृष्ठ अपनी सुंदरता के कारण मेरे नगर के सभी बुक स्टालों पर सामने का स्थान पा चुका है। जून से मुझे पांच सौ प्रतियों से बढ़ा कर एकदम से डेढ़ हजार प्रतियां मंगवानी पड़ रही हैं, जो कि भविष्य में और भी बढ़ने की संभावना है।

वेद प्रकाश, लखनऊ

मैं आपकी पत्रिका की एक नवीन पाठिका हूं। आपने पत्रिका में शक्तिपात पर बहुत जोर दिया है। क्या यह संभव है कि आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति जिसका आचरण शुद्ध व दृढ़ नहीं रह गया है वह शक्तिपात को ग्रहण कर सके और उसे संभाल कर रख सके ?

जयाशर्मा, भोपाल

मैंने चैत्र नवरात्रि के अवसर पर जोधपुर में उपस्थित होकर सामूहिक रूप से कुण्डलिनी जागरण दीक्षा प्राप्त की थी। मेरे मन में संदेह और तर्क था कि सामूहिक रुप से प्राप्त की गई दीक्षा भी क्या फल प्रद हो सकती है, किन्तु मैं लौटने के बाद से अपने अंदर हो रहे परिवर्तनों से हतप्रभ हो गया हूं।

हंसराज गोस्वामी, जम्मू

मेरी बगलामुखी साधना में सदैव से रुचि रही है और मैं अपने क्षेत्र में इसका सामूहिक रूप से मंत्र जप भी करवा चुका हूं। इस बार मैंने पत्रिका के अप्रैल अंक में दी हुई संक्षिप्त विधि से साधना की और पूर्णाहुति के अवसर पर हवन कुंड की लपटों में साक्षात् भगवती बगलामुखी के दर्शन मिले। मैं सपरिवार आपके चरणों में नतमस्तक हूं।

राजेश कटियार, शिवराजपुर कानपुर

मैं विगत कई वर्षों से सपरिवार पूज्य गुरुदेव से जुड़ा हूं और मेरी इच्छा मां जगदम्बा के प्रत्यक्ष दर्शन करने की थी। मैंने पत्रिका में वर्णित ढंग से कई साधनायें की किंतु मेरी वर्षों की मनोकामना तो तब पूर्ण हुई जब मैंने इस चैत्र नवरात्रि में भाग लेकर मां भगवती जगदम्बा के अलौकिक दर्शन पाये। सचमुच गुरु कृपा बिना हम देवी देवताओं का लाभ या दर्शन नहीं पा सकते।

रामचँद्र श्रीवास्तव नील, रायबरेली

पत्रिका में प्रकाशित ''मंथन'' स्तम्भ अपनी दो टूक स्पष्टता के कारण मुझे बेहद भा रहा है। आप इसे स्तम्भ से बदल कर प्रतिमाह स्थायी लेख का रूप प्रदान कर दें।

सत्यनारायण शर्मा, गोरखपुर

मैंने कुण्डलिनी जागरण विशेषांक रुचि लेकर पढ़ा किंतु इसमें षट्चक्रों की स्थिति बताने वाला कोई लेख न मिलने के कारण अपूर्णता सी लगी। कृपया इस ओर ध्यान दें।

भुवन चंद्र विष्ट, मण्डी

आपके इस पत्र से हमें विश्वास हुआ कि हमारे पाठकों एवं साधकों में तीव्रता से चेतना व्याप्त हो रही है। आप इसी अंक में सम्बन्धित लेख पढ़कर तृप्ति अनुभव करेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

संपादक

पाठकों एवं साधकों से विशेष अनुरोध है कि कृपया वे पत्र व्यवहार करते समय अपनी सदस्यता संख्या (यदि वे वार्षिक सदस्य हों) तथा पूरा पता हिंदी या अंग्रेजी में पिन कोड सहित अवश्य दें।

पाठकों से अनुरोध है कि कृपया वे अपने सुझाव एवं अनुभूति इस पते पर भेजे-

गुरुधाम,
३०६,कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा
नई दिल्ली-११००३४

इसी माह प्रकाशित

महालक्ष्मी सिद्धि एवं साधना

जीवन में पूर्ण लक्ष्मी प्राप्ति की गोपनीय विधियाँ पूज्य गुरुदेव की दुर्लभ कृति
क्या आप विश्वास कर सकते हैं, कि एक ही पुस्तक में निम्न विधियाँ संग्रहित हो सकती हैं,
पर इस पुस्तक में ये सब हैं -

१. महालक्ष्मी पूजन
२. लक्ष्मी से सम्बन्धित कुछ गोपनीय प्रयोग
३. लक्ष्मी ! तुझे मेरे घर में कैद होना ही पड़ेगा
४. जैन साहित्य में लक्ष्मी उपासना
५. व्यापार बाधा दूर करने का प्रयोग
६. एकाक्षी नारियल पर मेरे सिद्ध प्रयोग
७. दरिद्रता निवारण प्रयोग
८. दक्षिणावर्ती शंख कल्प प्रयोग
९. सिद्ध प्रयोग : हनुमान् साधना
१०. अखण्ड लक्ष्मी सिद्धि प्रयोग
११. तांत्रोक्त गुरु साधना से अखण्ड लक्ष्मी प्राप्ति
१२. इन्द्रकृत् महालक्ष्मी साधना
१३. व्यापार द्वारा धनप्राप्ति प्रयोग
१४. गुरु गोरखनाथ ने लक्ष्मी को यूं प्रकट किया
१५. विजय गणपति विग्रह
१६. लक्ष्मी जन्म-जन्म तक मेरे घर में रहेगी
१७. यज्ञ से लक्ष्मी प्राप्ति
१८. धनदायक लक्ष्मी प्रयोग
१९. पृथ्वी से गड़ा धन निकालने का प्रयोग
२०. सौभाग्य आपके द्वार खटखटा रहा है
२१. सर्व दुख नाशक प्रयोग
२२. लक्ष्मी! तू जायेगी कहाँ
२३. ग्रह दोष निवारण प्रयोग
२४. सहस्त्र रूपिणी सिंह महालक्ष्मी अनुष्ठान

(मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका लेख संग्रहाधार)

मूल्य ३०/ मात्र

सम्पर्क

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी
जोधपुर - ३४२००१ (राजस्थान)
टेलीफोन - ०२९१-३२२०९

सम्मोहन विज्ञान

जीवन का सम्पूर्ण सौन्दर्य

आकर्षण, मोहकता, व्यक्तित्व , चुम्बकत्व, मधुरता ये ही तो कुछ शब्द हैं, जिनमें जीवन का सार सिमटा है। लोग आपके पास दौड़कर आएं, आपसे जुड़े रहना चाहें, आपका व्यक्तित्व सैकड़ों के बीच में अलग दिखे, यही तो आपकी कामना है और इसकी प्राप्ति कोई असंभव बात भी तो नहीं। यह तो सहज संभव है, प्रस्तुत लेख इन्हीं सब बातों की एक विवेचना है-

'सम्मोहन' - यह शब्द ही मानों अपने आप में कोई आकर्षण समेटे हो, यह शब्द सुनते ही हमारे अन्दर एक विद्युत् प्रवाह सा हो जाता है। सदा-सदा से मानव के अन्दर इच्छा रही है कि वह समाज में, देश में, व्यक्तित्व में श्रेष्ठ बने, लोग उससे आकर्षित हों,

उससे प्रभावित हों, और उसका सभी तरह से वर्चस्व बनें। मानव जाति का इतिहास

हम सम्मोहक व्यक्तित्व के स्वामी क्यों नहीं बन पा रहे, क्योंकि हम जाने अनजाने में कोई तनाव ढोते हुए चल रहे हैं, जिससे आ जाता है असमय बुढ़ापा और चली जाती है चेहरे से वह सहज मधुर मुस्कान जो सम्मोहन का आधार होती है। अपने मन तक की यात्रा करके ही तो हम पा सकेंगे पूर्ण चुम्बकत्व, जगमगाता हुआ सम्मोहन युक्त व्यक्तित्व !

अपना-अपना वर्चस्व स्थापित करने की लम्बी गाथा ही तो है। सारे युगों से सभी संघर्षों, द्वन्द्वों और प्रेम गाथाओं के पीछे यही भावना तो क्रियाशील रही है। व्यक्ति क्या कुछ नहीं करता, अपने पौरुष को सबके सामने प्रदर्शित करने से लेकर और स्त्रियां क्या-क्या प्रयत्न

नहीं करतीं, अपने सौन्दर्य को अधिक से अधिक प्रस्फुटित करने को लेकर। पुरुष है तो अपने वीरोचित लक्षणों को उभारने का प्रयत्न करता रहता है, वहीं नारी अपने आपको रंगों में भिगो कर सौन्दर्य का प्रतिमान बनने का प्रयत्न करती रहती है। मानव की प्यास कहीं पर भी खत्म नहीं होती , और वह उपाय ढूंढता ही रहता है जो उसके सहायक हों।

सम्मोहन साधना अपने आपको अद्वितीय रूप से सौन्दर्ययुक्त बनाने की साधना है। इसे आरम्भ करते ही व्यक्ति के अन्दर जहां एक ओर चुम्बकीयता बढ़ने लग जाती है, वहीं उसके अंग प्रत्यंग भी तेजी से सुडौल और सौन्दर्ययुक्त होने लग जाते हैं। ऐसा लगता है कि सुन्दरता उसके चेहरे पर ही नहीं, वरन् शरीर के रोम-रोम से फूट रही हो।

सम्मोहन विज्ञान का विकास, सम्मोहन के प्रति ललक इसी भावना का ही तो परिणाम है, जबकि सम्मोहन तो अपने मूल अर्थों में कोई अलग ही तथ्य था। इसके आरम्भिक स्तर से लेकर आज तक के विकास व परिवर्तन को समझना जहां एक ओर आवश्यक है, वहीं ज्ञानप्रद और रोचक भी।

प्राचीन विद्या

सम्मोहन का तो सीधा सा अर्थ है - 'स्व का मोहन' अर्थात् अपने आपको ही मोहित कर लेना। अपने आपको अपने ही बस में ढाल कर जीवन जीना। और अपना स्वामी खुद आप ही होना। ऐसा न हो कि विविध वासनाएं और इच्छाएं हम पर हावी होकर हमारी शासक बनी बैठी रहें। यह तो व्यक्ति की सदैव से सर्वथा मुक्त होने की, दासत्व से छुटकारा पाने की अपने आपको ऊंचा उठाने की, आसमान में निर्द्वन्द्व विचरण करने की अदम्य लालसा की ही एक अभिव्यक्ति है और इसी के परिणाम स्वरूप खोजी गई एक विधा है। इसके परवर्ती प्रयोगों और उपयोगों से ऐसी धारणाएं बन गई मानों ये दूसरों को वश में करने की कोई प्रक्रिया मात्र हो। ऐसा कतई नहीं है। यह तो हमारे श्रेष्ठतम ऋषियों के ज्ञान और चिन्तन के गहन परम्परा की एक अभिव्यक्ति है, जिन्होंने इसे 'प्राण विद्या' या 'त्रिकाल विद्या' की संज्ञा दी थी।

वर्तमान युग में हम जिस ढंग से तथ्यों की वैज्ञानिक पुष्टि की बात करते हैं उस रूप में तो उन्होंने इसका प्रस्तुतीकरण नहीं किया था, और न ही उन्होंने इसकी विवेचना की थी। यह योग विषय का रहा और विशिष्टतम योगियों के पास ही इसका ज्ञान गुरु-शिष्य परम्परा से आगे बढ़ा। ऐसे कई योगियों की कथा आपके ज्ञान में होगी, जिन्होंने अपने स्पर्श मात्र या आशीर्वाद मात्र से ही रोगियों को स्वस्थ कर दिया हो और अपने भक्तों का बहुविध कल्याण किया हो। इसके मूल में ये विद्या ही थी। बाद में जादू-टोने से किन्हीं विकृतियों वश संबंधित हो जाने के कारण यह एक संदिग्ध विद्या मान ली गई और छुपाये रखने के कारण परिवार विशेष की ही सम्पत्ति बन कर रह गई।

पुरुष है तो अपने पौरुष को उभारने और प्रकट करने को लेकर, वहीं स्त्रियाँ अपने सौन्दर्य को प्रस्फुटित करने के लिए क्या नहीं करतीं?

पाश्चात्य विद्वानों ने अवश्य ही इस तथ्य को स्मरण रखा कि भारतीय योगियों के पास कोई गुह्य विद्या थी जिससे वे क्षण मात्र में असंभव से लगने वाले कई कार्य कर लेते थे, और रोगियों की चिकित्सा उंगलियों के स्पर्श से ही कर देते थे। उनका रुझान इस विद्या के प्रति इसके चिकित्सा विज्ञान के पक्ष को लेकर ही था। वे इसकी जटिलतम व्याख्या में उलझने के इच्छुक नहीं थे। उनकी यही कौतुहलप्रियता और जिज्ञासा उन्हें भारत तक खींच लाई। उन्होंने भारत आकर इसकी सत्यता पाई। उनके चिन्तन, उनके जीवन दर्शन के कारण भौतिकता से संपृक्त थे और वे इसका ज्ञान अपनी दृष्टि से लेकर वापिस गये। भारतीय चिन्तनों में सर्वत्र समग्रता ही है। वह सम्पूर्ण मानव जाति, प्रकृति, चराचर सभी में एक ही लय व्याप्त देखता है। भारतीय चिन्तन मानव जीवन को भी खण्ड-खण्ड न देखकर एक श्रृंखला ही मानता है। पाश्चात्य विद्वानों का इस बात से मतैक्य नहीं है। इसी से जब इस मूलतः भारतीय ज्ञान की ही प्रस्तुति पुनः भारत में हुई तो एक भोंडापन से लेकर हुई।

मानव मन को छूने वाली विद्या

आज का मानव अशांत है, छटपटा रहा है, वेदनाओं से ग्रस्त है, पीड़ा उसके रग-रग में व्याप्त है। वह तो चाहता है कि उसकी समस्या कोई सुन भर ले, दो घड़ी उसके पास बैठ भर ले, जिसके सामने वह अपना हृदय खोलकर रख सके। भागा-दौड़ी के युग में, जो शायद शारीरिक से अधिक मानसिक भागा-दौड़ी है कौन है जो किसी का दुःख सुने, और उसे अपनी भावनाओं का संस्पर्श दे। बड़ी-बड़ी धारणाओं से, समाज विज्ञान के सिद्धान्तों से, लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणाओं से और संगोष्ठियों से ये समस्या सुलझने वाली नहीं। बुद्धिजीवी अपनी परिचर्चाओं से मानवमन को छू नहीं सकते। अन्तर्राष्ट्रीय शांति शब्द तो एक नितांत हास्यास्पद शब्द हो गया है। इस शब्द

सम्मोहन विज्ञान मन का विज्ञान है यह व्यक्ति के मूलभूत तथ्य मन को अपनी विषय वस्तु बनाता है जो मात्र परीक्षण की विषय वस्तु नहीं।

विज्ञान मानव को इतनी सघनता से और आत्मीयता से, भावनाओं के स्तर पर स्वीकार नहीं करता। अन्य विज्ञान उसे एक ऑबजेक्ट मात्र मान कर रह जाते हैं जिससे आती हैं निर्जीव और शुष्क व्याख्याएं और संभव हो पाते हैं केवल किताबी समाधान।

तुम पास ही नहीं तो मजा जिन्दगी का क्या जीता नहीं हूँ, सांस लिये जा रहा हूँ मैं।

डा. सत्यनारायण दूबे, दिल्ली

सम्मोहन ज्ञान वास्तव में तीसरे नेत्र को खोलने की ही एक प्रक्रिया है। पश्चिम के वैज्ञानिकों ने इसे ही 'थर्ड आई मेडिटेशन' की संज्ञा दी है। तीसरे नेत्र को खोलकर सम्मोहन ज्ञान में तो सफलता आप पायेंगे ही, साथ ही किसी का भी भूत, भविष्य, वर्तमान आप से गोपनीय नहीं रह सकेगा।

को तो प्रत्येक नेता-उपनेता उठते-बैठते उछालता ही रहता है। किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय जटिलताएं कितनी गहन हो गई है, सारी मानवता ही जैसे दांव पर लग गई है - इस बात को कितनों ने हृदय से समझा है, और पीड़ा अनुभव की है।

अन्तर्राष्ट्रीय सौहार्द, मैत्री, बन्धुत्व ये जपने के शब्द नहीं हैं।

समाज इसलिए पीड़ित है क्योंकि उसमें व्यक्ति विशेष पर ध्यान देने की स्थितियाँ ही नहीं, केवल कुछ शब्द है, और शब्दों के मायाजाल में व्यक्ति और सहमता ही जा रहा है। यह तो सर्वमान्य तथ्य है कि भयग्रस्त व्यक्ति ही फिर आक्रामक हो उठता है, सम्मोहन विज्ञान के साथ इन प्रश्नों को जोड़कर देखा जाये तो कुछ समाधान सुलझता दिखता है। चारों तरफ छाये घटा-टोप अन्धकार में भी कुछ प्रकाश अपनी लालिमा बिखेर देता है।

सम्मोहन विज्ञान, मन का विज्ञान है। यह व्यक्ति के मूलभूत तथ्य मन को अपनी विषय वस्तु बनाता है। यह पूर्णता से स्पष्ट करता है कि मानव समाज में एक इकाई मात्र ही नहीं, प्रत्येक मानव अपने आप में एक जीता-जागता सुकोमल हृदय लिये गतिशील व्यक्तित्व है अपने आप में पूर्ण है, मात्र इकाई नहीं। उसके लिये मानव कोई परीक्षण की वस्तु नहीं, कोई जड़ पदार्थ नहीं वरन् समस्त भावनाओं का एक पुंजीभूत रूप है, ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है और इसका आदर सम्मान व स्नेह करना उसी परमप्रभु की ही अर्चना है। कोई भी अन्य

असाध्य रोग का उपचार गुरु मंत्र से

बम्बई के एक श्रेष्ठ साधक हैं, श्री गणेश भाई वटाणी जो पूर्व में एक प्रमुख राष्ट्रीय राजनैतिक दल के अपने क्षेत्र के अध्यक्ष भी रह चुके हैं, किन्तु वर्ष ८८ में पूज्य गुरुदेव के सम्पर्क में आने के बाद उन्होंने उस जीवन को त्याग पूर्ण रूप से गुरुदेव के अमृत वचनों का प्रचार करना ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया है। श्री वटाणी लगभग २५ वर्षों से दमे के रोग से गम्भीर रूप से पीड़ित रहे। वर्ष ९१ गुरु पूर्णिमा की बात है जब सभी साधक बैंगलोर में गुरु पूर्णिमा मनाने के बाद आयुर्वेद के ज्ञान हेतु पूज्य गुरुदेव के साथ ऊटी यात्रा पर गये। वह स्थान पहाड़ी होने से एवं वर्षा ऋतु के कारण श्री वटाणी जी को दमे का दौरा पड़ गया। साथ में गये एक चिकित्सक गुरुभाई ने उन्हें औषधि एवं इंजेक्शन दिया किन्तु आक्सीजन सिलेंडर के अभाव में वे मृत प्राय हो गये। अस्पताल काफी दूरी पर था और यह भी निश्चित नहीं था कि वहां आक्सीजन सिलेंडर होगा भी। सभी लोग घबरा कर प्रायः रोने से लग गये। कोलाहल सुनकर पूज्य गुरुदेव, जो वहीं तीसरी मंजिल में ठहरे थे, नीचे आये एवं एक शिष्य से कहा कि वह गुरु मंत्र की एक माला जप कर उससे अभिमंत्रित जल उन्हें पिला दें। इतना कह कर पूज्य गुरुदेव अपनी साधना में चले गये। शिष्य ने ऐसा ही किया। लगभग आधे घन्टे बाद गणेश भाई यूं उठ बैठे जैसे उन्हें कुछ हुआ ही न हो। यही नहीं इसके बाद से आज तक उन्हें फिर दमे का दौरा पड़ा ही नहीं और वे बम्बई जैसे अत्यधिक प्रदूषण व नमी से भरे महानगर में रहते हुये भी पूर्ण स्वस्थ व प्रसन्न हैं और पूज्य गुरुदेव के प्रति हृदय से कृतज्ञ हैं।

सम्मोहन-सिद्धि दीक्षा

हो सकता है, कि हम प्रयत्न करने पर भी सम्मोहन के क्षेत्र में सफल न हो पाएं, या हम अपना तीसरा नेत्र जाग्रत न कर पाए, तो फिर एक ही उपाय बचता है " सम्मोहन सिद्धि दीक्षा ''-- जो एक उच्च कोटि का गुरु ही दे सकता है

पूर्ण एवं श्रेष्ठ सफल एवं लोकप्रिय बनने के लिए सम्मोहन का क्षेत्र अद्वितीय है, और इसमें पूर्णता प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन है

"सम्मोहन दीक्षा''

एक तेजस्वी एवं अलौकिक पूरे जीवन को जगमगाहट से भर देने वाली दिव्य दीक्षा **'सम्मोहन सिद्धि दीक्षा''**

सम्मोहन कर्ता के आवश्यक गुण

सम्मोहन सम्पूर्ण रूप से एक प्रक्रियात्मक ज्ञान है। इसमें मानव मन के साथ ही सारा व्यापार है। मानव मन की विविधता देखते हुये यह तो संभव नहीं कि इसे कुछ नियमों में बांध कर रखा जा सके और इसी कारण इस विज्ञान में सम्मोहन कर्ता का व्यक्तित्व सर्वाधिक महत्व रखता है। उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व ऐसा हो जो कि सामने वाले को केवल आकृष्ट ही न करे वरन उसके मन में विश्वास का भाव, आश्वस्ति का भाव भी पैदा कर सके और यह तभी संभव है जब व्यक्ति के पास गहन साधना हो, चरित्र का बल हो और सर्वोपरि मानव मात्र के प्रति अगाध और निश्छल प्रेम हो। उसी से गंभीर, दृढ़, शालीन और सौम्य व्यक्तित्व का मालिक एक सफल सम्मोहन कर्ता बन सकता है।

एक सफल सम्मोहन कर्ता बनने के लिए आवश्यक है कि उपरोक्त गुणों के अतिरिक्त वह अपने जीवन में कतिपय सूत्रों का भी पालन करें। इस विषय में सबसे पहली बात या सूत्र यह है कि आप अपने आप में दृढ़चेता हों। आपके मन में संशय का या हिचकिचाहट का भाव कदापि नहीं होना चाहिए। मन में ढुलमुल भाव रखना, हिचक रखना या अन्य किसी प्रकार से कोई नकारात्मक भाव रखना आपकी प्राण शक्ति को दुर्बल करता है। प्राण शक्ति ही आपका व्यक्तित्व बनाने में आपको गंभीरता देने में, आपकी आंखों में तेज प्रदान करने में समर्थ होती है अतः इस पर किसी प्रकार से आघात तो आना ही नहीं चाहिए। बार बार क्षमा मांगना, खेद प्रकट करना, पश्चाताप करना भी ऐसी ही बातें हैं जो प्राण शक्ति को प्रभावित कर दुर्बल कर देती है। अच्छा तो यह हो कि हम पहले किसी भी कार्य की रूपरेखा बना लें जिससे न तो व्यर्थ की हड़बड़ी हो और न ही बाद में पश्चाताप करने या क्षमा मांगने जैसी कोई बात।

आज के प्रगतिशील युग में आवश्यक है कि लोग आपको देखकर ही आपके पास खिंचे आयें, आपकी आज्ञा पालन करने में अपना गौरव समझें और यह सब तभी सम्भव हो सकता है जब आपके चेहरे, हावभाव, नेत्रों, वस्त्रों सभी से आभा प्रकट हों। ऐसे ही कुछ गुर की बातें बताता हुआ यह लेख - --

सम्मोहन ज्ञान के अध्येता को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि उसके अपने मन में हुई शंका की एक लहर भी सब कुछ बिगाड़ सकती है। यदि उसे सम्मोहन करते समय स्वयं पर जरा भी संदेह हुआ कि क्या पता मैं सफल होऊंगी भी या नहीं तो तुरंत उसके विचार की तरंग सामने माध्यम से टकरा कर उसका चित्त अस्थिर कर सकती है।

एक प्रयोग यह भी- साबर वशीकरण

इससे पति को, पत्नी को, पुत्र या पुत्री को नौकर अथवा मालिक को शत्रु अथवा मित्र को अधिकारी को या किसी भी पुरुष या स्त्री को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है और उससे मनोवांछित कार्य सम्पन्न करवाया जा सकता है।

मंगलवार की रात्रि को पीली धोती पहिन कर साधक उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने किसी पात्र में **सिद्ध नारियल** रख दें, और उस पर कुंकुम की सात बिन्दियाँ लगावे, सामने तीन तेल के दीपक लगावे, और फिर **मूंगे की माला** से निम्न मंत्र की पाँच माला मंत्र जप करें-

अखण्ड वीर का चेला। क्या झेला क्या खेला। अमुक को मेरे वश में करे, जो न करे तो वीर हनुमान की दुहाई। शब्द साचा पिण्ड काचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।।

फिर दूसरे दिन वह सिद्ध नारियल अपने पहिनने के कपड़ों में छिपा कर उस पुरुष या स्त्री के सामने जावे तो उसको देखते ही वह पूर्णतः वश में हो जाता है। और साधक यह देख कर चमत्कृत हो जाता है कि जो काम वह पहले अनुनय विनय के बाद भी नहीं करता था, तुरन्त करने के लिए तैयार हो गया है।

सम्मोहन वास्तव में प्रक्रिया से अधिक सुसंयोजन पर निर्भर है। यदि आपने इसके ज्ञानात्मक पक्ष, क्रियात्मक पक्ष, भावनात्मक पक्ष, व्यक्तित्व से संबंधित सभी पहलुओं का सफल ढंग से एकत्री करण अपने अंदर कर लिया है तो कोई कारण नहीं कि लोग आपसे प्रभावित न हों अथवा आप कुशल सम्मोहन कर्ता न बन सकें।

सम्मोहन कर्ता को अपनी बाह्य वेशभूषा पर यथेष्ट ध्यान देना चाहिए। उसके वस्त्र सादे और सुरुचिपूर्ण होने चाहिए। उसे अत्यधिक आकर्षक अथवा भड़कीले कपड़ों के चुनाव का निषेध करना चाहिए क्योंकि उसके लिए आवश्यक है कि समाज के लोग उसे अपने ही मध्य का माने। तभी उस पर वे सहज विश्वास कर पायेंगे। स्वभाव का मृदु होना भी आवश्यक है। सहज मुस्कान से युक्त चेहरा सम्मोहन कर्ता की अतिरिक्त विशेषता होती है, किंतु उसे हंसी ठट्ठे और हल्के स्तर की हंसी मजाक से सदैव बचना चाहिए। आपका व्यक्तित्व सुंदर से भी अधिक तरोताजा होना चाहिए जिससे सभी की इच्छा हो कि वे आपके पास क्षण दो क्षण रुकें। सम्मोहन कर्ता को समाज में लोकप्रिय होने का जो यत्न करना चाहिए किंतु इस बात से परहेज करना चाहिए कि उसकी प्राण शक्ति का अपव्यय व्यर्थ का बहसों या गप्पों में न हो। इसी तरह उसे मूर्ख और अशिक्षित व्यक्तियों की संगत भी नहीं करनी चाहिए क्योंकि उनका नकारात्मक चिंतन आपके आभामंडल में न्यूनता ही लाता है।

कुशल सम्मोहन कर्ता को दिन का एक निश्चित भाग एकांत चिंतन में अवश्य ही देना चाहिए। इससे जहां एक ओर वह अपनी प्राण शक्ति का संचयन करता है वहीं चिंतन मनन कर नित्य प्रति के जीवन की विवेचना कर अपने व्यक्तित्व में सुधार ला सकता है। इन्हीं क्षणों का उपयोग कर वह अपने को विचार शून्य बनाने की प्रक्रिया भी कर सकता है जिससे उसके चेहरे पर भव्यता तो आती ही है साथ ही मस्तिष्क भी पुष्ट होता है। एकांत चिंतन मनन से स्मरण शक्ति में भी प्रखरता आती है तथा जब आपकी स्मरण शक्ति पुष्ट होगी तब आप सहज ही समाज में लोकप्रिय हो सकेंगे। विश्व विजेता **नेपोलियन बोना पार्ट** की सफलता का रहस्य था कि उसे अपने प्रत्येक सैनिक का नाम याद रहता था और जब वह किसी का नाम लेकर पुकारता था तो वह सैनिक अभिभूत हो उठता था कि सम्राट् होकर भी यह मुझे याद रखते हैं, और वह कुर्बानी करने के लिए तैयार रहता था।

आपके व्यक्तित्व की दृढ़ता, सजगता, प्रखरता ही आपके आभूषण होंगे। सम्मोहन कर्ता का चरित्र तो बहुत ही विश्वसनीय होना चाहिए। उसे चाहिए कि वह सदैव गोपनीयता रखे और समाज में भी उसकी ऐसी प्रतिष्ठा हो कि लोग समझें कि यह व्यक्ति कभी हमारा रहस्य नहीं खोलेगा। कभी कोई आपको अपना रहस्य बताये भी तब भी आप अपना चेहरा निर्विकार बनाये रखें। कभी कोई आपके सम्मुख अपने जीवन का कोई न्यून पक्ष प्रस्तुत करे तब भी न तो आप चौंके और न उसे हल्के ढंग से लें। इसके विपरीत आप कहें कि हां ऐसा होता है तथा बातचीत को सहज मोड़ दे दें। इससे आप निश्चित जानिये कि आपके प्रति उस व्यक्ति की आंखों में सम्मान कई कई गुना बढ़ जायेगा। यदि कोई व्यक्ति आपसे द्वेष भी रखता है तब भी आप उसके प्रति कभी भी हल्के शब्द प्रयोग में न लायें। क्रोध पर तो आपका नियंत्रण होना ही चाहिए साथ ही हंसी मजाक पर भी। आपको प्रयास करके कभी कभी हंसी की बात हो जाने पर भी नहीं हंसना चाहिए। इससे व्यक्ति आपके विषय में चिंतन करते हैं और आपकी गम्भीरता का प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार से उपरोक्त बातें सम्मोहन का ही अंग है। केवल नेत्रों के माध्यम से ही सम्मोहन नहीं होता अपितु व्यक्ति की पूरी शैली से सम्मोहन होता है इस तथ्य का सदैव स्मरण रखना चाहिए। किसी की प्रशंसा करना, किसी की निःस्वार्थ सहायता करना, किसी की समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुन लेना यह सब कुछ ऐसे सूत्र हैं जो आपकी सदैव सहायता तो करेंगे ही साथ ही ऐसा करना मानवता की बात है। सम्मोहन कर्ता का व्यक्तित्व केवल आवरण मात्र ही नहीं होना चाहिए। उसे तो सहज रूप में उच्च मानवीय मूल्यों को लेकर ही समाज के हित में गतिशील होना चाहिए।

इससे तो पत्थर को भी सम्मोहित किया जा सकता है

भगवान् शिव विषयक पुराणों में वर्णित कथाएं अब मात्र कल्पना का ही विषय नहीं रहीं, उनकी दिव्य दृष्टि अथवा "तीसरे नेत्र" की ज्वाला से भस्म करने की कथाएं अब सत्यता सिद्ध कर रही हैं, क्योंकि पश्चिम के वैज्ञानिक शोध कर इस तथ्य को पा चुके हैं कि जब व्यक्ति 'ध्यानातीत अवस्था' में होता है तो उसके शरीर में आलोड़न-विलोड़न से उत्पन्न ऊर्जा एक विशेष प्रकार के विद्युत् प्रवाह के साथ ललाट में स्थित गुप्त एवं निष्क्रिय पड़े तृतीय नेत्र के माध्यम से निकल कर भयंकर विध्वंस कर सकती है। उन्होंने इसे ही 'थर्ड आई मेडीटेशन' की संज्ञा दी है।

क्या है यह ध्यानातीत अवस्था, क्या रही है हमारे ज्ञान की गहन परम्परा , इन्हीं सब बातों की रोचक प्रस्तुति का प्रयास करता यह लेख -

"भगवान कृष्ण" के चेहरे पर सम्मोहन इतना प्रबल था कि स्त्री पुरुष तो क्या पशु पक्षी तक उनके आकर्षण में खिंचे चले आते थे। कृष्ण की इस साधना का रहस्य उस "साधना" में छिपा था जो उन्होंने अपने गुरुदेव सांदीपन से सीखी थी।

इस कड़ी को आगे बढ़ाया "भगवान बुद्ध" ने। उनके सम्पर्क में जो आया वह निश्चित रूप से उन से प्रभावित हुआ, उन के इस व्यक्तित्व के पीछे थी "सम्मोहन साधना"। क्या है यह सम्मोहन साधना, क्या रही है हमारे ज्ञान की गहन परम्परा। इन्हीं बातों को यहां प्रस्तुत कर रहे हैं–

भारतीय संस्कृति, कला के श्रेष्ठतम पुरुष माने गये हैं भगवान् श्री कृष्ण, जो षोडश कलायुक्त पूर्ण पुरुष थे। जिन्होंने हमारी संस्कृति को नये आयाम दिये और स्पष्ट किया कि किस तरह से पूर्ण ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करके भी योगी ही नहीं योगेश्वर तक बना जा सकता है। वे केवल एक देश तक नहीं वंदनीय नहीं रहे वरन् उनकी स्तुति तो 'कृष्णंवन्दे जगद्गुरुं' कहकर की गई, और आज विदेशों में निरन्तर बढ़ती उनकी लोकप्रियता इस बात का प्रमाण है। उनके सम्पर्क में जो आया वह उनमें ही खोकर रह गया। उनका आकर्षण उनका माधुर्य को आज तक हम स्मरण कर पुलकित हो जाते हैं। भगवान् श्रीकृष्ण की मोहिनी तो इतनी प्रबल थी कि स्त्री-पुरुष तो क्या पशु, पक्षी तक उनके आकर्षण में बंध कर रह जाते थे। भगवान श्रीकृष्ण की इस शक्ति का रहस्य उस साधना में छिपा था जो उन्होंने अपने शिष्य जीवन में अपने गुरुदेव सांदीपन के आश्रम में रहकर संपन्न की थी।

भगवान् श्रीकृष्ण के पश्चात् उसी कड़ी में अगले जाज्ज्वल्यमान रत्न हैं - भगवान् बुद्ध। उनकी करुणा, उनकी अहिंसा, उनका प्रेम और विश्व बन्धुत्व का संदेश तो आज भी जीवन के उन मूल्यों को स्पष्ट करता है जिनके अभाव में मानवता शब्द उच्चरित करना अधूरा है। भगवान् बुद्ध के संपर्क में जो आया उनसे अभिभूत हुआ और उनके व्यक्तित्व से भीग कर सैकड़ों भिक्षुक निकले और संसार में छा गये। क्रूर से क्रूर मनुष्य और हिंसक से हिंसक पशु उनकी छाया पड़ने मात्र से ही शांत हो जाते थे। उनके इस व्यक्तित्व के पक्ष के पीछे सम्मोहन साधना ही थी जो उन्होंने किसी अज्ञात भारतीय योगी से ही प्राप्त की थी।

उपरोक्त उदाहरण तो एक स्पष्टीकरण हैं कि किस प्रकार हमारी संस्कृति के श्रेष्ठतम व्यक्तित्वों के साथ सम्मोहन साधना का रहस्य निहित रहा। अंतर केवल इतना रहा कि

सम्मोहन उनके विराट् व्यक्तित्व का एक अंग मात्र थी और वह इस कारण क्योंकि वे सम्मोहन मे निहित मूल ज्ञान को पी चुके थे।

मन

सम्मोहन ज्ञान को हम समझ सकें इसके लिये आवश्यक हो जाता है कि इसके मूलभूत तथ्यों को, उनका जिस प्रकार से भारतीय परिपेक्ष्य में प्रतिपादन हुआ, उसे भी समझें, अन्यथा हमारा ज्ञान अधूरा व एकांगी बनकर ही रह जायेगा। हम एक प्रक्रिया मात्र ही सीख सकेंगे जबकि हमें तो सीखना है, सम्मोहन का वह ज्ञान जिससे शरीर के रोम-रोम से आकर्षण फूट उठे।

सम्मोहन का रहस्य इस बात के ज्ञान में छुपा है कि आप समझ सकें प्रभु ने आपका निर्माण किस हेतु किया है। अपने सही स्थान पर स्थापित होकर ही आप अपने अंदर वह उत्साह उमंग भर सकते हैं जिससे आप इतने आकर्षक बन जायेंगे कि फिर किसी को भी सम्मोहित करना आपके लिए खेल सा हो उठेगा।

भारतीय मनीषियों ने जिन बिन्दुओं को लेकर आरम्भ किया था, वे थे - मन एवं प्राण। मन हमारे शरीर के अन्दर एक ऐसा तत्त्व है जिसे देखा तो नहीं जा सकता किन्तु वही सारे शरीर का आधार है। शरीर का ही नहीं वरन सारे संवेगों का भी आधार है जिनके अभाव में तो शरीर हड्डी मांस का एक ढांचा भर रह जायेगा। यह शरीर भी तभी समझा जा सकेगा जब हम मन को समझ लेंगे। मन और शरीर का संबंध आप इसी बात से समझ सकते हैं कि मन के अस्वस्थ होने पर या खिन्न होने पर शरीर भी ढीला सा पड़ जाता है। भले ही सम्मोहन करने में हमारा यह भौतिक शरीर ही माध्यम बनता है, किन्तु आंतरिक रूप से मन की परिपूर्णता और मन का सौन्दर्य भी देता है।

हमारे पूर्वज हर प्रश्न का उत्तर अपने ही अन्दर उतर कर पाने का प्रयत्न करते थे क्योंकि वे इस तथ्य से परिचित थे कि हमारा यह लघु शरीर विराट् ब्रह्माण्ड की ही प्रतिकृति है। उन्होंने अन्दर की यात्रा में पाया कि यह कोई नितांत तीव्र गति वाला तत्त्व है। एक अनुमान के अनुसार यह सेकेंड के सौवें हिस्से में पृथ्वी के आठ चक्कर लगा चुका होता है। इसका तो अनुभव आपने भी किया होगा कि कभी-कभी घर से हजारों मील दूर होने पर भी आप एक क्षण आंख बंद करते हैं और सामने घर का, परिवार का चित्र स्पष्ट हो उठता है।

यह इसी मन की तीव्र गति है जिससे आप क्षणांश में अपने घर तक पहुंच जाते हैं। "मन" शरीर के अन्दर चीर फाड़ करने से नहीं मिलेगा किन्तु भारतीय योग की कुछ निश्चित पद्धतियों से इसे स्पर्श किया जा सकता है। इसे स्पर्श कर कुछ क्रियाओं द्वारा सूक्ष्म शरीर कर रूप दिया जा सकता है। ऐसा सूक्ष्म शरीर वायु से भी विरल होने के कारण वहां भी प्रवेश कर सकता है जहां कि अन्यथा असंभव हो। ध्यानावस्था में यह सूक्ष्म शरीर एवं स्थूल शरीर परस्पर संबंधित रहते हैं इसी से सूक्ष्म शरीर हजारों मील दूर जाकर जो कुछ भी देखता है अथवा अनुभव करता है उसे लौटकर स्थूल शरीर के समक्ष स्पष्ट कर देता है। इसी क्रिया को "ध्यानातीत अवस्था" कहा गया है। मन के पूर्ण विवेचन से स्पष्ट होता है कि मन भी दो भागों-अन्तर्मन एवं बहिर्मन में बंटा है।

प्राण

मनस् तत्त्व की व्याख्या हमारे मानस में स्पष्ट हो जाने के बाद प्राण तत्त्व को भी संक्षिप्त: समझ लेना सम्मोहन ज्ञान के क्षेत्र में उपयोगी रहता है। "प्राण" भारतीय चिन्तन की जटिलतम अभिव्यक्ति है। स्वामी विवेकानंद के राजयोग का आधार यही प्राणतत्व रहा जिसकी व्याख्या उन्होंने न केवल स्वदेश वरन अमेरिका आदि में भी कर भारतीय ज्ञान विज्ञान की श्रेष्ठता को सुस्पष्ट किया था। मानव शरीर में 'प्राण' वह तत्त्व है जिसके माध्यम से हमारा यह सम्पूर्ण जीवन संचालित है। इस जगत् में एवं जगत् से आगे भी जो विस्तारित है वह प्राण ही है। उपनिषदों की रहस्यपूर्ण व काव्यात्मक वाणी में इसका वर्णन मिलता है -

एषोग्निस्तपत्येष सूर्यएष पर्जन्यो मघवानेष वायुः।

एष पृथिवी रयिर्देवः सदसच्चामृतं च यत्।। (प्रश्नोपानिषद)

अर्थात् "यह प्राण ही अग्नि होकर तपता है, यह सूर्य है, यह मेघ है, यही इन्द्र और वायु है तथा यह देव ही पृथ्वी, रयि(चंद्र)और जो कुछ सत्-असत् एवं अमृत है, वह सब कुछ है।"

प्रतिक्षण हम जो नासिकाओं से पी रहे होते हैं वह प्राण ही होता है जो वायु, धूप, भूमि, आकाश आदि से निर्मित होता है। इसी के द्वारा हमारा जीवन अस्तित्व में है, और गतिशील है। प्राण तत्व की व्याख्या अथवा उसका सांगोपांग अध्ययन एक सम्मोहन ज्ञान के इच्छुक व्यक्ति के लिए आवश्यक नहीं। चूंकि उसे क्रियात्मक पक्ष को ग्रहण करते समय प्राणायाम की प्रक्रिया से गुजरना ही पड़ता है, अत: इस समय यदि उसे प्राण तत्व की हल्की सी जानकारी होती है तो वह अपने क्रियात्मक पक्ष को भी अधिक सफल बना सकता है।

प्राण तत्त्व के पूरक तत्व के रूप में आकाश तत्व है। प्राण व आकाश इन दोनों तत्त्वों के मिलन से ही इस सृष्टि की रचना हुई है। जब तक एक व्यक्ति में प्राण तत्त्व होता है तभी तक वह जीवित रहता है, और उसके विनष्ट हो जाने पर वह पुन: आकाशतत्त्व में स्थापित हो जाता है।

प्राण तत्त्व, आकाश तत्त्व, मन इन सब को जब हम भारतीय संदर्भों में पकड़ने का प्रयास करते है तो स्वत: ही एक विशालता सी हममें आ जाती है, और हम अपने को एक प्रक्रिया अर्थात् सम्मोहन तक ही सीमित नहीं रखते। इसका लाभ सर्वाधिक हमें ही होता है, क्योंकि

प्राण तत्त्व के पूरकत्त्व के रूप में आकाश तत्त्व है' व्यक्ति में जब तक प्राण तत्त्व है तभी तक वह जीवित है और इसके विनष्ट हो जाने पर वह पुन: आकाश तत्त्व में स्थापित हो जाता है।

इस प्रकार से हम व्यर्थ की आपाधापी, तनाव, विविध वासनाओं से मुक्त होकर आनन्द के आकाश में निर्द्वन्द्ध विचरण करने में सक्षम हो जाते हैं, और अपने आप को बना लेते हैं उत्फुल्लता से युक्त, निश्चिंत और आल्हाद से छलछलाता हुआ! अब आप ही विचार करें कि आज के युग में ऐसा हो पाना क्या किसी वरदान पा जाने जैसा नहीं हो उठेगा?

सांदीपन प्रणीत

सम्मोहन वशीकरण प्रयोग

जिसे श्री कृष्ण एवं बुद्ध ने सम्पन्न किया

सम्मोहन का यह एक ऐसा अनूठा प्रयोग है जिसमें व्यक्ति अलग-अलग स्त्री पुरुष को आकर्षित नहीं करता, वरन स्वयं को ही एक ऐसी विशिष्ट चकाचौंध युक्त सम्मोहक शक्ति से आप्लावित कर लेता है कि सामने वाला उसे देखते ही ठक से रह जाये। इस हेतु यह आवश्यक नहीं कि व्यक्ति शारीरिक रूप से भी बहुत लम्बा चौड़ा आकर्षक हो। यह तो अपने आप को कुछ ऐसे विशिष्ट बीज मंत्रो से सजा लेना है जिससे कि आपके प्रभाव से लोग आपके पास खिंच कर स्वत: आये और जीवन भर साथ रहने की इच्छा करे। इस साधना को करने के बाद तो सुन्दर स्त्रियां उस व्यक्ति के चारों ओर चक्कर ही लगाने जग जाती हैं। यही नहीं यह साधना घर के लड़ाई झगड़े समाप्त करने, ऑफिस के कलह का निपटारा करने में भी समान रूप से उपयोगी सिद्ध होती देखी गई है। यह वास्तव में सम्मोहन और वशीकरण दोनो ही प्रक्रियाओ का मिला जुला रूप है इस साधना में जिन सामग्रियों की नितान्त आवश्यकता पड़ती है वे है **सम्मोहन वशीकरण यंत्र तथा सम्मोहन माला**। आवश्यक है कि यह दोनों से सिद्ध हो। किसी भी शुक्रवार की रात्रि में दस बजे के पश्चात् साधक उत्तर दिशा की ओर मुंह करके सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित होकर पीला आसन बिछाकर बैठ जाये। स्वयं पीली धोती पहने एवं पीला आसन व सामने पीला ही वस्त्र बिछा हो। सामने कांसे की थाली में दोनों यंत्रो को स्थापित कर उनका कुंकम अक्षत व पुष्प से पूजन करें, इसके बाद **सम्मोहन माला** से निम्न मंत्र की ग्यारह माला जप करें।

मंत्र

ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि तन्नश्चक्र: प्रचोदयात्।।

यह प्रयोग इतना तीव्र है कि तीसरे या चौथे दिन से ही व्यक्ति अपने चेहरे में एवं लोगों के व्यवहार में परिवर्तन को देख कर अनुभव कर सकता है। फिर भी यदि इस प्रयोग को कुछ समय तक सप्ताह के प्रति शुक्रवार को दोहराया जाता रहे, तो लाभदायक रहता है। समय-असमय पर इस यंत्र एवं माला को कुछ समय के लिए धारण करना चाहिए। किन्तु ध्यान रखे कि इन्हें पहिन कर सार्वजनिक स्थानों पर न जायं।

पारद गणपति

जिसके स्थापन से स्वत: आती है

ऋद्धि व सिद्धि

सर्वमंगलमय विघ्नहर्ता गणपति तो जीवन में पूर्णता देने वाले और विघ्नों का नाश करने वाले देव हैं, उनकी दो पत्नियां "ऋद्धि और सिद्धि'' हैं, जिस घर में इन दोनों देवियों की स्थापना होती हैं, वहां स्वयं गणपति साक्षात् उपस्थित रहते ही हैं।

गणपति और ऋद्धि सिद्धि साधना प्रत्येक गृहस्थ के लिये आवश्यक है, क्योंकि ये तीनों एक दूसरे से जुड़े और जीवन को पूर्णता प्रदान करने वाले हैं। गणपति स्वयं ज्ञान और निर्वाण को देने वाले हैं, "ब्रह्मवैवर्त पुराण'' में कहा गया है कि गणपति ही एक मात्र ऐसे देवता हैं, जो सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान करने वाले हैं, लिंग पुराण में भी यही बताया गया है, कि सभी देवताओं पर विचार करने के बाद यही निर्णय सर्वमान्य है, कि जीवन में पूर्ण सफलता और सिद्धि गणपति के माध्यम से ही संभव है।

श्री गणेश आदिस्वरूप, पूर्ण कल्याणकारी, देवताओं के भी देवता माने गये हैं, जिनकी उपासना-पूजा का उल्लेख वेदों में भी प्राप्त होता है, सभी प्रकार के पूजनों में प्रथम पूजन का अधिकार गणपति का ही माना गया है, इसके पीछे ठोस शास्त्रीय आधार है, किसी भी कार्य को पूर्ण रूप से सिद्ध करने के लिये

> यं यं कामयते यो वै तं तमाप्नोति निश्चितम्
>
> अत: कामायमानेन तेन सेव्य: सदाभवान्।।
>
> *अर्थात् जो पूर्ण भक्ति से गणपति की पूजा साधना करता है उसके विघ्नों संकटों का नाश होता रहता है, कार्य सिद्धि निरन्तर होती रहती है, उन्नति के इच्छुक, निर्धन, पूर्णता के इच्छुक, धन तथा सुख सौभाग्य की इच्छुक सभी स्त्रियों को यह व्रत पूजन करना चाहिये, किसी भी वस्तु विशेष की कामना, अभिलाषा की पूर्ति इसी से संभव है।*
>
> *(शिव पुराण)*

समुचित प्रयत्न करना पड़ता है, लेकिन कई बार इसी प्रकार के प्रयत्नों की पराकाष्ठा होने पर भी ऐन मौके पर कोई न कोई बाधा आ जाती है, इस प्रकार की बाधा को हटाने के लिये, जिससे कार्य निर्विघ्न रूप से पूर्ण हो जाय और जैसे-तैसे पूरा न होकर जिस सफलता के साथ कार्य पूरा करने की इच्छा है उसी रूप में कार्य पूरा हो, इसके लिये ही गणपति पूजन विधान निर्धारित किया गया है।

गणेश पूजा ही क्यों?

प्रतिभा और ज्ञान की भी एक सीमा अवश्य होती है, व्यक्ति अपने प्रयत्नों से किसी भी कार्य को श्रेष्ठतम रूप से पूर्ण करते हुए उज्जवल पक्ष की ओर विचार करता है, लेकिन उसकी बुद्धि एक सीमा के आगे नहीं दौड़ पाती है, बाधाएं उसकी बुद्धि एवं कार्य के विकास को रोक देती हैं, और यही मूल कारण है कि हमारे शास्त्रों में पूजा साधना उपासना को विशेष महत्व दिया गया।

सृष्टि की उत्पति, स्थिति और पूर्णता ब्रह्मा, विष्णु और महेश द्वारा सम्पादित की जाती है। लेकिन सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही यह व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रहे, और विघ्न न आएं - यह भी गणेश के ही जिम्मे है, विघ्नकर्ता और विघ्नहर्ता दोनों ही गणेश ही हैं, आसुरी प्रकृति के अभक्तों के लिये गणेश विघ्नकर्ता हैं, तो उनकी पूजा उपासना करने वाले भक्तों के लिये विघ्नहर्ता और ऋद्धि - सिद्धि के प्रदाता हैं, इसी लिये श्री गणेश को "सर्व विघ्नैकहरण, सर्वकामफलप्रद, अनन्तानन्तसुखद और सुमंगलदायक" कहा गया है।

सभी प्रकार के देवता विभिन्न शक्तियों से संपन्न हैं, लेकिन विशिष्ट कार्य के लिये विशिष्ट शक्ति सम्पन्न देवताओं का स्मरण, पूजन-साधना संपन्न करनी पड़ती है, इसलिये सभी पूजनों में किसी भी कार्य को निर्विघ्न, पूर्ण फलयुक्त, मंगलमय रूप से पूर्ण करने हेतु श्री गणपति का पूजन किया जाता है।

गणेश का स्वरूप, शक्ति और शिवत्व का साकार स्वरूप है इन दोनों तत्वों का सुखद स्वरूप ही किसी कार्य में पूर्णता ला सकता है, गणेश शब्द की व्याख्या अत्यन्त महत्वपूर्ण है, गणेश का "ग" मन के द्वारा बुद्धि के द्वारा ग्रहण करने योग्य, वर्णन करने योग्य, सम्पूर्ण ,भौतिक जगत को स्पष्ट करता है, और "णे" मन बुद्धि और वाणी से परे, ब्रह्म विद्या स्वरूप परमात्मा को स्पष्ट करता है, और इन दोनों के "ईश" अर्थात् स्वामी गणेश कहे गये हैं।

श्री गणेश के द्वादश नाम

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।

द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।

संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

यह श्लोक गणेश पूजन और उनकी साधना उपासना के महत्व को विशेष रूप से स्पष्ट करता है, इसका तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति विद्या प्रारम्भ करते समय, विवाह के समय, नगर में अथवा नये भवन में प्रवेश करते समय, यात्रा में कहीं बाहर जाते समय, संग्राम अर्थात् शत्रु और विपत्ति के समय, यदि श्री गणेश जी के इन बारह नामों का स्मरण करता है तो उसके उद्देश्य की पूर्ति में अथवा कार्य की पूर्णता में किसी प्रकार का विघ्न नहीं आता।

इसमें प्रत्येक नाम का एक विशेष अर्थ है और विशेष भाव है, संक्षिप्त में यही कहना उचित है कि साधक को अपने पूजा कार्य में गणेश की पूजा एवं इन नामों के जप को एक निश्चित स्थान अवश्य देना चाहिये।

मंत्र साधना और तंत्र साधना का मार्ग गुरु गम्य माना गया है, **जो साधक गुरु परम्परा से गणपति सपर्या की विद्या प्राप्त करते हैं, उन्हें ही उपासना में प्रवेश का अधिकार है।**

ऋद्धि-सिद्धि

गणपति स्वयं बुद्धि सागर और उच्चकोटि के ज्ञानी थे, जब गणपति वयस्क हुए तो विश्वकर्मा-विश्वरूप की दो लड़कियों से गणपति का विवाह होना निश्चित हुआ इन दोनों कन्याओं में एक का नाम "ऋद्धि" और दूसरी का नाम "सिद्धि" था, इन दोनों की कन्याओं से विवाह होने पर जहां पर भी ये दोनों देवियां होती हैं, वहीं गणपति का वास होता है, विश्वकर्मा तो स्वयं समस्त लोकों को प्रदान करने वाले, और जीवन में पूर्णता देने वाले देव

हैं, इसलिये इन दोनों की साधना से सुख प्राप्त होता है कहते हैं कि ऋद्धि-सिद्धि साधना करने से भूमि-लाभ, शीघ्र भवन बनने तथा परिवार में पूर्ण सुख शांति प्राप्त होने की क्रिया उसी दिन से शुरू हो जाती है।

कुछ समय बाद इन दोनों पत्नियों से एक एक पुत्र उत्पन्न हुआ, सिद्धि से जो पुत्र उत्पन्न हुआ, उसका नाम रख गया "लक्ष्य" और बुद्धि से जो पुत्र पैदा हुआ उसका नाम "लाभ" रखा गया, इस प्रकार "लक्ष्य-लाभ", "ऋद्धि-सिद्धि" और स्वयं गणपति से मिल कर यह परिवार अपने आप में पूर्णता और सफलता देने वाला बन गया।

गणपति साधना तो कई प्रकार से संपन्न की जा सकती है, किन्तु सम्पूर्ण गणपति परिवार की एक साथ साधना करना अत्यन्त गोपनीय रहा है। मैने पिछले दिनों सिक्किम के एक मठ में ताड़ पत्र पर लिखित हस्तलिखित प्रति से इस साधना का रहस्य ज्ञात किया, जो मूलतः गणेश उपनिषद के श्लोकों की सूक्ष्म मीमांसा कर बनाई गई है। ये साधना केवल पारद गणपति विग्रह पर ही संपन्न की जा सकती हैं मैं अपने पाठकों को इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करने का इच्छुक हूँ।

सर्वथा शुद्ध और पवित्र होकर पीले वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर पीले आसन पर बैठ जाएं, अपने सामने पारद गणपति विग्रह स्थापित कर दें, फिर लकड़ी का बाजोट अपने सामने बिछाएं और उस पर पीला कपड़ा बिछा दें, बाजोट पर एक थाली रखें। यह थाली स्टील की या लोहे की नहीं होनी चाहिये। इसके बाद थाली के मध्य में एक स्वस्तिक बनाएं और उसके चारों तरफ एक-एक स्वस्तिक केसर से अंकित करें।

सबसे पहले मध्य में स्वस्तिक पर चावलों की ढेरी बना कर गणपति को स्थापित करें, गणपति के बांई ओर ऋद्धि और दाहिनी ओर सिद्धि को स्थापित करें गणपति के ऊपर बने हुए स्वस्तिक पर लाभ और नीचे की ओर बने हुए स्वस्तिक पर सुख की स्थापना करें।

इसके बाद सामने पांच घी के दीपक और पांच अगरबत्तियां जलायें, फिर निम्न मंत्र का "कमलगट्टे की माला" अथवा "स्फटिक माला" से २१ माला मंत्र जाप करें।

मंत्र

ॐ गं गणयतये वरवरद गं ॐ

इसी पारद गणपति पर एक अन्य प्रयोग भी संभव है जिसे **ऋणहर्ता पारद गणपति प्रयोग** कहा जाता है। इस प्रयोग में पारद गणपति की स्थापना कर निम्न प्रकार से संकल्प करना चाहिये-

अथाद्य अमुकवर्षे अमुकमासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे मम अमुककामना सिद्ध्यर्थे लक्ष्मीप्राप्त्यर्थे श्री पारद गणपति देवता प्रीत्यर्थे ऋणहर्ता प्रयोगम् अहं करिष्ये।

संकल्प करके गणपति की मूर्ति को सर्व प्रथम पंचामृत से तथा उसके बाद शुद्ध जल से स्नान कराकर पट्टे पर केशरिया रंग का वस्त्र बिछाकर उसके ऊपर कुंमकुम युक्त चावल का स्वस्तिक निर्मित कर उसके मध्य में चावल रखें, उसके ऊपर स्नान कराये हुए गणपति को स्थापित कर उन्हें चंदन, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप, यज्ञोपवीत तथा पीत-वस्त्र से अलंकृत कर पुष्पहार, पहनायें तत्पश्चात् उनके सम्मुख मोतीचूर (साबूत बूंदी के लड्डू) का नैवेद्य रजत पात्र अथवा मिट्टी के पात्र में रखकर गणेश गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुए जल चढ़ाएं। इस प्रयोग में जिस मंत्र का जप करना है वह निम्नलिखित है, जिसका ११ हजार जप करना है, इसमें दिनों की संख्या नियत नहीं है किन्तु प्रत्येक दिन एक समान संख्या में ही मंत्र जप करना आवश्यक है।

मंत्र

ॐ श्रीं गं ऋण हर्त्रे गं श्रीं ॐ गणयतये नमः।।

प्रसिद्ध दंडी स्वामी अलक्ष्यानंद गंगोत्री के साधु समाज में चर्चित व्यक्तित्व रहे हैं। उनकी दाहिनी आंख की पुतली के कोने में दक्षिणावर्ती पारद गणपति का विग्रह हर समय विद्यमान रहता है। वे पूजा काल में आंख के कोर से इस गणपति विग्रह को निकालकर पूजा साधना संपन्न करते हैं और फिर पुनः आंख के कोर में स्थापित कर देते हैं।

विशिष्ट तथ्य:

सम्मोहन विज्ञान के

आप कल्पना कीजिए कि कोई कवि वीर रस की कविता पढ़ने खड़ा हो और उसकी आवाज एकदम पतली और मिमियाती हुई हो। वीर रस उत्पन्न होगा अथवा नहीं किंतु हास्यरस अवश्य उत्पन्न हो जायेगा!!

प्रत्येक कार्य को पूर्णता देने के लिए कुछ नियमों का पालन, कुछ परिस्थितियों का निर्माण और सहयोग आवश्यक ही होता है। सम्मोहन विज्ञान के संदर्भ में भी यही बात है। सम्मोहन क्रिया करने से पूर्व हम कैसा वातावरण रचें, क्या सावधानियां रखें, इसी का संक्षिप्त विवरण इस लेख में दिया जा रहा है।
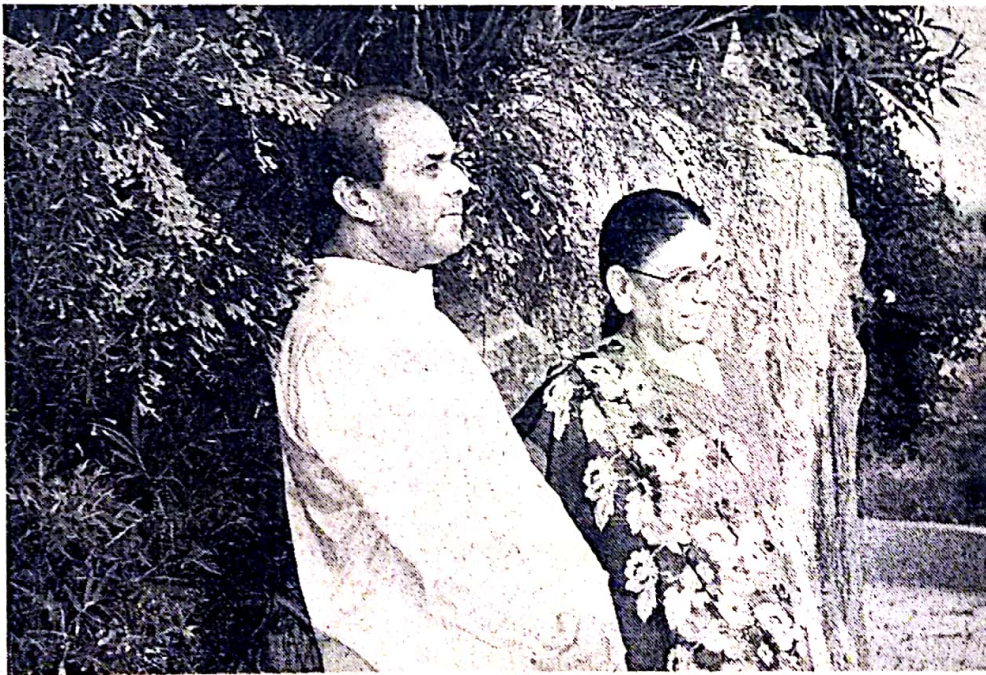
आपके घर में यदि कोई अतिथि आने वाला होता है तो आप अपने ड्राइंग रूम को साफ करते हैं। नये पर्दे वगैरह लगाते हैं। नयी दरी आदि बिछाते हैं। आगंतुक तो आपसे पूर्व परिचित होता है किंतु आप यह सब क्यों करते हैं? इसलिए कि आपके व्यक्तित्व का उस पर अच्छा प्रभाव पड़े। इसी तरह सम्मोहन में भी व्यक्ति को कुछ पूर्व तैयारी, कुछ विशिष्ट तथ्यों का ध्यान रखना ही पड़ता है। वास्तव में हम सम्मोहन करने का प्रयास तो जीवन में हर क्षण करते ही रहते हैं। कर्मचारी अपने अधिकारी के सामने जो मुस्कराता है वह सम्मोहन का ही अंग होता है। इसी तरह से दुकानदार अपने ग्राहक को, स्त्री पुरुष को या पुरुष स्त्री को, सभी तो हर क्षण सामने वाले को रिझाने के प्रयास में ही रहते हैं। सम्मोहन विज्ञानी इतना करता है कि वह क्रमबद्ध ढंग से अध्ययन कर सुचारु रूप से एक प्रक्रिया सम्पन्न करता है।

सम्मोहन के पूर्व जिन बातों का ध्यान रखना नितांत आवश्यक है उनमें सर्वाधिक प्रमुख है कि सम्मोहन आप सदैव अपने ही घर

में करें क्योंकि जिस स्थान पर आप नित्य ध्यान त्राटक आदि करते हैं वहां का समस्त वातावरण आपके शरीर व मानस से संयोजित व लयबद्ध हो जाता है। अर्थात् उस कमरे के अणुओं का संयोजन भी आपके चिंतन के अनुरूप हो जाता है जिससे जहां आपको सुविधा होती है वहीं माध्यम भी उस वातावरण में जल्दी ही आपके अनुकूल ढल जाता है। दूसरे के घर इस कार्य हेतु कदापि नहीं जाना चाहिए। आप का कमरा भी ऐसा होना चाहिए कि वह यथा संभव घर के कोने में हो। यदि उसकी कोई खिड़की ऐसी हो जो खुलने पर बाहर प्राकृतिक दृश्य दिखाई दे तो अधिक अनुकूल रहता है। कमरे में मच्छर मक्खी नहीं होने चाहिए। यदि गर्मी का मौसम हो तो हल्का सा पंखा भी चलाना चाहिए। सम्मोहन का कार्य यद्यपि किसी भी समय किया जा सकता है किंतु शाम को सम्पूर्ण प्रकृति में जो तरंग व्याप्त रहती है उससे मानव मन स्वत: ही तनाव से काफी हद तक मुक्त हो जाता है अत: वह समय सर्वाधिक उपयुक्त माना गया है। कमरे की दीवारों का रंग सुखद होना चाहिए और हल्की सुगंध की अगरबत्ती जला कर उसे अतिरिक्त मधुरता प्रदान करनी चाहिए।

वातावरण

सम्मोहन के समय कमरे में भीड़ भाड़ नहीं होनी चाहिए विशेष रूप से कुतर्क करने वाले या मजाकिया स्वभाव के अथवा ओछे व्यक्ति तो होने ही नहीं चाहिए। सम्मोहन कर्ता को इस तथ्य पर ध्यान देना चाहिए कि जिस पर वह सम्मोहन करने जा रहा है (अर्थात् जिसे सम्मोहन विज्ञान की भाषा में माध्यम कहते हैं)वह किन व्यक्तियों की उपस्थिति से अधिक आश्वस्त होता है और उसे कमरे में केवल उन्हीं को बैठाना चाहिए। उदाहरण के लिए एक युवती स्वाभाविक रूप से अपने पिता या बड़े भाई की उपस्थिति से एकांत में सर्वाधिक आश्वस्त रहेगी। अत: ऐसे अवसर पर उन्हीं को बैठाना चाहिए। विशेष परिस्थितियों में जब माध्यम के मन में कोई गोपनीय बात हो तब वह नितांत एकांत ही चाहेगा। यह तो सम्मोहन कर्ता का कौशल है कि वह पूर्वानुमान कर सके कि माध्यम को कब कैसी दशा में रखना उचित रहेगा। इस हेतु किसी पुस्तक में विधि नहीं बताई जा सकती। सम्मोहन के अवसर पर माध्यम को सर्वप्रथम हर प्रकार से विश्वास दिलाना पड़ता है कि सम्मोहन कर्ता सचमुच उसका हित चिंतक है और वह न तो उसकी किसी बात की गोपनीयता भंग करेगा और न हीं उस पर हंसेगा।

शक्तिपात

एक वरदान है जीवन का, कोई अद्वितीय व्यक्तित्व या गुरु मिले, जो शक्तिपात के द्वारा शरीर की जड़ता, आलस्य न्यूनता एवं दुर्भाग्य समाप्त कर दे, जो शरीर के रोगों को मिटाने की प्रक्रिया करे और शक्तिपात...शक्तिपात से तो कुण्डलिनी जागरण होकर व्यक्ति अपने आप में ही अद्वितीय बन जाता हैं। वास्तव में ही अत्यधिक सौभाग्यशाली व्यक्ति ही अपने गुरु से "शक्तिपात" सम्पन्न करवा कर कुशल सम्मोहन कर्ता बनने में सफल हो पाता है।

आपके मन में यदि स्वयं के प्रति कोई संदेह रह गया तो निश्चित जानिए कि आपका माध्यम भी अस्थिर हो उठेगा।

माध्यम जिनसे आश्वस्त होता हो केवल उन्हीं को साथ बैठाना चाहिए, जैसे एक जवान स्त्री को अकेले बैठाने से वह असंतुलित तो रहेगी ही साथ ही यह सामाजिक मर्यादा के विपरीत भी होगा।

आरम्भ

सम्मोहन आरम्भ करते समय आपकी आवाज एकदम स्पष्ट आत्मविश्वास से पूर्ण संदेह से रहित व गंभीर होनी चाहिए। आपका स्वर गंभीर होते हुये भी लयबद्ध होना चाहिए। गंभीर का तात्पर्य रूखी अथवा कर्कश, कठोर, वाणी से कदापि नहीं है। आदेश उसी भाषा में देना चाहिए जिसे माध्यम समझता हो। इस अवस्था का विशेष महत्व होता है क्योंकि इसी स्थिति में आप माध्यम को प्रथम आघात देते हैं जो कि परिवर्ती क्रियाओं का आधार बनता है। यह सदैव ध्यान रखिये कि सम्मोहन एक गंभीर

विद्या है और इसका किसी भी दृष्टि से प्रदर्शन कदापि उचित नहीं। हो सकता है कि प्रथम बार में सफलता न मिले किंतु इससे न तो सम्मोहन कर्ता को निराश होना चाहिए और न ही माध्यम को निराश होने दीजिए। हो सकता है कि आपके मन की कोई हिचकिचाहट या संदेह उसके मन से टकराया हो जिससे वह भी अस्थिर हो गया हो। आप उसे विश्वास में लें और कहें कि कोई बात नहीं इस बार तुम अवश्य सफल होगे।

सम्मोहन निद्रा

सम्मोहन में सम्मोहन कर्ता अपने माध्यम को सर्वप्रथम एक प्रकार की नींद में भेजता है जो स्वाभाविक नींद से नितांत भिन्न होती है और जिसे सम्मोहन नींद कहा जाता है। स्वाभाविक नींद में तो व्यक्ति पूरी तरह सो जाता है और न वह किसी बात का उत्तर दे सकता है न ही कोई निर्देश ग्रहण कर सकता है। इसके विपरीत सम्मोहन निद्रा में व्यक्ति (माध्यम) का केवल बाह्य मन निद्रा में भेजा जाता है जिससे वह बाह्य मन पर हावी बुद्धि और तर्क वितर्क से जहां मुक्त होता है वहीं स्वाभाविक रूप से उसका अन्तर्मन जाग्रत हो जाता है। सम्मोहन वास्तव में अन्तर्मन को छूने की ही एक प्रक्रिया है। यदि आप सीधे सहज भाव से किसी का अन्तर्मन स्पर्श कर लें तो वह भी सम्मोहन ही तो है। इस सम्मोहन निद्रा को देने का सूत्र मात्र इतना है कि आपका अन्तर्मन माध्यम के अन्तर्मन को अपनी संकल्प शक्ति के माध्यम से भावना देता है। इसी सम्मोहन निद्रा को हमारे योग शास्त्रों में "योग निद्रा" की संज्ञा दी गई है। अंतर यह है कि हमारे ऋषि मुनि योग निद्रा के द्वारा स्वयं को चैतन्य करते थे, अपने को समाधि की अवस्था में भेजने की तैयारी करते थे। भारतीय पद्धति में यह स्वयं के प्रति की जाने वाली एक क्रिया थी जबकि इसका परिवर्तित रूप सम्मोहन विज्ञान की दृष्टि से पर्याप्त उपयोगी सिद्ध हो रहा है। जहां एक ओर यह सम्मोहन में उपयोगी है वहीं इस प्रकार से माध्यम को कृत्रिम नींद देकर उसे विभिन्न तनावों से मुक्त कराकर सुखद जीवन भी प्रदान किया जा सकता है। व्यक्ति प्रयास कर इस विद्या को सीख सकता है कि वह किस प्रकार से अपने को योग निद्रा में स्वयं भेज सकता है।

सम्मोहन निद्रा की अवस्था में चूंकि आपका अन्तर्मन ही माध्यम के अन्तर्मन से जुड़ता है अतः सम्मोहन कर्ता जो आदेश देता है माध्यम केवल उसी का पालन करता है, अन्य किसी की बात का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। सम्मोहन कर्ता को चाहिए कि वह अपने माध्यम को कोई नकारात्मक आज्ञा न दें क्यों कि उससे विपरीत तरंगें उत्पन्न होकर माध्यम की निद्रा भंग कर सकती हैं। माध्यम को उसके धर्म के विपरीत भी आज्ञा नहीं देनी चाहिए क्योंकि उसे उसका अन्तर्मन स्वीकार नहीं करेगा और सम्मोहन निद्रा टूट जायेगी उदाहरण स्वरूप किसी स्त्री को पूरे कपड़े खोल देने की आज्ञा देना इसी श्रेणी में आता है। सम्मोहन कर्ता का चरित्र सदैव उच्च रहना चाहिए। किसी स्त्री को सम्मोहित करते समय उसके मन में वासना का संचार नहीं होना चाहिए और न ही सम्मोहन कर्ता को ऐसे कार्य करने चाहिए जो सामाजिक दृष्टि से उचित न माने जाते हों।

इस प्रकार कुछ सामान्य सी तैयारी करके या सामान्य तथ्यों को ध्यान में रखकर एक श्रेष्ठ दशा सहज ही प्राप्त की जा सकती है। इस क्रम के बाद सीधे वह क्षेत्र आ जाता है जहां प्रक्रियात्मक ज्ञान अर्जित करना है। सम्मोहन कर्ता को इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि असाध्य पागल व्यक्ति पर सम्मोहन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता जबकि मिर्गी, हिस्टीरिया, मानसिक गुत्थियों की स्थितियों में तो यह क्रिया वरदान स्वरूप है। व्यक्ति इस विद्या के माध्यम से जहां समाज में अपना विशिष्ट स्थान बना सकता है, लोक प्रिय हो सकता है वहीं अनेक समाजोपयोगी कार्य भी संपादित कर सकता है।

अभी तक के जीवन में हमने जो कुछ सीखा वह तो दूसरों से संबंधित था, और कहा जा सकता है कि फिर भी सहज था, कठिन तो होता है तब जब हम अपने को ही सजोने का प्रयास करते हैं।

दूसरों पर प्रभाव डालकर हम अपना जीवन जितना सुगम बना सकते हैं उससे कहीं अधिक तो अपने को सम्मोहित करके ही कर सकते हैं, तो क्यों न हम अपने से ही प्रारम्भ करें . . . . .

स्व सम्मोहन

स्व सम्मोहन कोई अलग प्रक्रिया नहीं है। वास्तव में अलग तो कहीं कुछ होता ही नहीं और विशेषकर भारतीय ज्ञान विज्ञान के संदर्भ में। जब हम एक बार परस्पर संबंध समझ जाते हैं तो कोई जटिलता नहीं रहती है और सभी कुछ सहज उठता है। स्व सम्मोहन भी यद्यपि कहने को एक अलग विषय है किंतु क्या स्वयं को सम्मोहित कर हम सम्मोहन के क्षेत्र में और अधिक सफल नहीं हो जायेंगे। **स्व सम्मोहन** का सीधा सा अर्थ है कि हम अपने व्यक्तित्व को और निखारें, अपने को व्यर्थ की चिंताओं से मुक्त करें, अपने अंदर जो हीनता की भावना है उसे दूर करें, अपनी मानसिक गुत्थियों को जिन्हें हम गोपनीय रखना चाहते हों उसे स्वयं सुलझायें। उसी तरह अनेक दुर्व्यसन जिन्हें हम चाह कर भी छोड़ नहीं पाते और जानते हैं कि वे हमारा शरीर खोखला ही कर रहे हैं, उन्हें छोड़ने का उपाय स्व सम्मोहन ही है। यह सम्पूर्ण व विशुद्ध रूप से अपने आपका निर्माण करने की कला है।

इस पद्धति की खोज इसका मूलतः उपयोग तो आत्म साक्षात्कार से संबंधित था। अपने अंदर की यात्रा से संबंधित था। व्यक्ति अपने अंदर जाकर अपने को परखता था, और अपनी न्यूनताओं को दूर करता था, जिससे पूर्ण शुद्ध निर्मल होकर उस आनंद में लीन हो सके जिसे ब्रह्मानंद की संज्ञा दी गई है। इसी का शोधित रूप वर्तमान में हम अपने दैनिक जीवन में अपना कर विविध लाभ प्राप्त कर सकते हैं। अनिद्रा जैसी असाध्य व्याधियों से छुटकारा पा सकते हैं। हममें जो आत्मविश्वास की न्यूनता होती है, अपनी बातों को सामने रखने में प्रायः जो हिचकिचाहट होती है, अधिकारी के सामने हतोत्साहित हो जाने की जो स्थिति होती है, ऐसी अनेक बातों से सफलता पूर्वक सदैव के लिए छुटकारा पा सकते हैं।

यह मात्र वर्णन का विषय नहीं है। यदि हम केवल किसी व्यंजन के स्वाद के बारे में सुन लें तो पूर्ण तृप्ति नहीं मिल सकती। उसके लिए तो सम्पूर्ण प्रक्रिया अपना कर ही उसका स्वाद मिल सकता है। स्व सम्मोहन हेतु भी कुछ निश्चित प्रक्रियाओं को अपनाना पड़ता है। इनमें कोई उबाऊ पन नहीं है और न ही शरीर को मोड़ना तोड़ना है केवल कुछ दिन दृढ़ता पूर्वक कुछ क्रियायें एक नियम बद्ध ढंग से करने की आवश्यकता है। फिर तो यह उसी प्रकार आपके लिए सहज हो उठेंगी जैसे कि प्रतिदिन आप सुबह उठ कर टूथपेस्ट करते हैं या स्नान करते हैं।

प्रथम विधि :

इस हेतु आप प्रातः या सायं जब भी उचित अवसर पायें और अपने सारे कार्यों से निवृत्त हो बिना किसी हड़बड़ाहट के सहजभाव युक्त हो सकें तब शवासन में लेट जायें और कल्पना करें कि आपको निद्रायुक्त होने के, शांत होने के संकेत मिल रहे हैं। आप इस हेतु किसी ऐसे व्यक्ति की कल्पना भी करें जिससे आप सहज आत्मीय हों या जिसकी वरिष्ठता का आपके हृदय में विशेष स्थान हो, कि वह आपको ऐसा निर्देश दे रहा है। ऐसा करने से प्रभाव द्विगुणित हो उठेगा और आप पायेंगे कि आप गहन निद्रा में जा रहे हैं। इस अवस्था में यह चिंता करने की आवश्यकता नहीं कि मैं देर तक सोता रह गया

तो क्या होगा या आफिस के लिए लेट हो गया तो क्या होगा, यह तो सम्मोहन निद्रा होगी जिससे आप सहज ही एक घंटे बाद जग जायेंगे। आपको बस इतने ही समय को समायोजित करना होगा और अपने आप के लिए इतना समय निकालना कोई महंगा सौदा तो नहीं। आपको अपने तनाव से मुक्त होने की यह कोई विशेष कीमत नहीं।

द्वितीय विधि :

यह विधि वास्तव में उपरोक्त विधि का परिष्कृत रूप है, क्योंकि इसमें आप किसी काल्पनिक माध्यम की अपेक्षा नहीं रखते वरन स्वयं अपने को निर्देशित करते हैं। यह करना आपके लिए आवश्यक है क्योंकि इससे जहां एक ओर आपका मन एकाग्र होता है वहीं आत्मविश्वास भी बढ़ता है। इस प्रकार से आप अपने को निर्देश दीजिए कि आपकी पलकें भारी हो रही हैं, और आपके निर्देश से आपको नींद आ रही है। कुछ दिनों के अभ्यास के बाद आप इस प्रयास में सफल भी होने लगेंगे। ऐसे व्यक्तियों को जो अनिद्रा रोग के मरीज हों, उनके लिए तो यह एक विशेष उपचार होगा। यह प्रयोग रात्रि में करना अधिक उपयुक्त रहता है।

स्व सम्मोहन पद्धति की खोज तो अपने को परिमार्जित करने से संबंधित थी। आत्म साक्षात्कार से संबंधित थी। व्यक्ति अपने अंदर जाकर अपने को परख, न्यूनताओं को दूर कर ब्रह्मानंद में लीन हो जाता था।

तृतीय विधि :

यह विधि द्वितीय विधि की सर्वथा विपरीत विधि है और पहली बार पढ़ने पर आपको हंसी भी आ सकती है। इस विधि में मात्र इतना करना होता है कि अपने थके मस्तिष्क में कुछ और विचार जोड़ दीजिए। ध्यान रखिये कि विचार कम न होने पायें! इसका प्रभाव यह होगा कि विचारों के घात-प्रत्याघात से आपका मस्तिष्क शीघ्र ही थक जायेगा और फल-स्वरूप स्वाभाविक प्रतिक्रिया होगी कि वह सोने का प्रयत्न करेगा। यह भी मन को विचार शून्य करने की एक प्रक्रिया है क्योंकि कुछ काल बाद आपका अन्तर्मन इतना थक जायेगा कि वह विचारों का संग्रहण बंद ही कर देगा।

चतुर्थ विधि :

यद्यपि यह कोई नवीन विधि नहीं है और पूर्ववर्ती विधियों का ही एक परिमार्जित स्वरूप है किंतु इस प्रकार से आप स्व सम्मोहन के क्षेत्र में और भी परिपक्वता से प्रविष्ट हो जायेंगे। इस हेतु यदि संभव हो तो सांय काल जब वातावरण लयबद्ध होता है, तब कुछ अवधि के लिए शीर्षासन कीजिए। प्रारम्भ में शीर्षासन कठिन लगने की दशा में व्यक्ति सर्वागांसन एवं उसके पूरक के रूप में मत्स्यासन भी कर सकता है। आप इस रूप में विचार कर सकते हैं कि आप आकाश के समान विस्तृत एवं शुभ्र हो उठे हैं। इस विशालता को ग्रहण करने के बाद आप स्वयं को भावना दें कि आप इस आकाश की सुखद विशालता में धीरे-धीरे लुप्त हो रहे हैं। और लहरों पर तैरते हुए उसी प्रकार विचरण कर रहे हैं, मानों आकाश में तैरने वाला बादल का कोई टुकड़ा। आप इस कल्पना लोक में खोकर धीरे-धीरे सम्मोहन नींद मे भी जा सकते हैं। आपको नींद आने की दशा में अपने अन्तर मन में भावना देनी है कि मैं एक या आधे घंटे बाद जग जाऊँ और इसके बाद अन्तर्मन को भी विस्मृत कर देना है। यह स्वसम्मोहन की एक विद्या तो है ही साथ ही विशेष आनंद पाने की प्रक्रिया भी है।

उपरोक्त नियमों में से कोई एक विधि चुनकर अथवा क्रम से एक के बाद एक विधि अपनाकर हम स्वसम्मोहन के क्षेत्र में भी सफल हो सकते हैं। इसका सर्वाधिक लाभ यह होता है कि हमारे थके हुए स्नायु विश्राम पाते हैं। जिससे चेहरे पर ओज आ जाता है और असमय पड़ती हुई झुर्रियाँ, आँखों के नीचे स्याहपन आदि समाप्त होता है। व्यक्ति उमंग और उत्साह से भर उठता है तथा जीवन का नवीन ढंग से रसास्वादन करने में अपने को समर्थ पाता है। ■

आत्म विश्वास वृद्धि प्रयोग

यदि आपमें आत्म विश्वास है, तो आप जिस कार्य को करने जाते है, वह आधा कार्य तो ऐसे ही सम्पन्न हो जाता है, अपने मन के हीन भाव को दूर करने हेतु यह एक सिद्ध प्रयोग है, आत्म विश्वास में शरीर गौण है, जो भाव अभिव्यक्ति होती है वही महत्वपूर्ण है।

इसके लिए रविवार के दिन साधक प्रातः एक तांबे के लोटे में जल भर ले और उस जल में "सिद्ध कुलाल चक्र'' डाल दें, और सूर्य के सामने मुंह कर इस जल का तीन बार अर्घ्य दें, फिर दायें हाथ में कुलाल चक्र ले कर मुट्ठी बन्द कर लें तथा सात बार इस जल गिरे स्थान की प्रदक्षिणा करें तथा केवल दूध का प्रसाद लें, और इस कुलाल चक्र को सफेद रेशमी वस्त्र में लपेट कर अपनी जेब में रख दें। जब भी कोई महत्वपूर्ण कार्य हो, इसे अपने जेब में रख कर घर से बाहर निकलें तो आश्चर्यजनक परिणाम आप स्वयं अनुंभव करेंगे।

हिप्नोटिज्म

तो

हजारों सुन्दरियों की धड़कन बढ़ा देता है

रूस के रासपुतीन से ऐसा कौन होगा जो परिचित न हो, उसका व्यक्तित्व, उसका पुरुषोचित सौन्दर्य इतना भव्य था कि उसने जिस सुंदरी पर निगाह डाल दी वह उस पर मर मिटी। इसका रहस्य उसके किसी धन या पद में नहीं, वरन उसकी उन दो आंखों में छिपा था जो कि विचित्र सी चमक और चकाचौंध से भरी हुई थीं। रासपुतीन ने अपनी आत्मकथा "ए स्टोरी माइसेल्फ" में विस्तार से वर्णित किया है कि किस तरह उसकी हिमालय यात्रा में उसकी भेंट स्वामी अनुस्वरानंद जी से हुई और वह उनसे सम्मोहन विद्या सीखकर सैकड़ों युवतियों के हृदय की धड़कन तो बना ही, साथ ही ग्यारह वर्षों तक रूस का बेताज बादशाह बना रहा।

इस भारतीय विद्या के क्या क्या उपयोग और दुरुपयोग हुए इन्हीं को खोजता यह लेख

पाश्चात्य चिंतनों में इस विज्ञान के प्रति इतनी गहनता से चिंतन नहीं किया गया जितना कि भारतीय पद्धति में। उन्होंने इसे प्रयोग रूप में ग्रहण किया न कि आध्यात्मिक एवं ज्ञान रूप में। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि प्रत्येक मनुष्य में एक चुम्बकीय शक्ति होती है जो किसी में कम और किसी में ज्यादा होती है, और यह भी अनुभव किया कि इसे बढ़ाया जा सकता है। इस तथ्य को इस बात से स्पष्ट किया जा सकता है कि जब कोई स्त्री अपने प्रिय पुरुष को देखती है तो उसकी आंखे झुक जाती है और चेहरे पर लालिमा दौड़ जाती है। इसका कारण यह होता है कि उस क्षण विशेष में उसके अंदर एक प्रकार का विद्युत् प्रवाह सा उत्पन्न होकर दौड़ जाता है।

पाश्चात्य विद्वानों में इसे जिस विद्वान् ने गम्भीरता से समझा और अपने ढंग से सूत्रबद्ध किया उनका नाम डॉ० एन्टन मेस्मर है, जो स्विटजरलैंड के थे और जिनके नाम पर पाश्चात्य देशों में इसे मेस्मरिज्म कहा गया। उन्होंने व्यक्ति के चुम्बकीय शक्ति की व्याख्या की, और प्रयोगों से पाया कि यह चुम्बकीय शक्ति उस समय प्राणियों में बढ़ जाती है जब दो प्राणी परस्पर मिलते हैं। उन्होंने इसे "एनीमल मेग्नेटिज्म" की संज्ञा दी और बताया कि यह पुरुषों में धनात्मक एवं स्त्रियों में ऋणात्मक होती है। इनके परस्पर मिलने से जो पूरा वृत्त बन जाता है वह इस शक्ति का पूर्ण परिचय देता है। यह तो दैनिक जीवन में देखने को मिलता ही है कि किसी स्त्री को देखते ही पुरुष की आंखों में एक अनोखी सी चमक आ जाती है। सारे शरीर में हल्की सी सनसनी फैल जाती है। वास्तव में होता यह है कि वह धनात्मक चुम्बक ऋणात्मक छोर को स्पर्श करने की एक सहज प्रक्रिया में आ जाता है।

प्राणियों में होने वाले चुम्बकत्व की व्याख्या डॉ० मेस्मर ने 'एनीमल मैग्नेटिज्म' के नाम से की है। पुरुषों में धन, स्त्रियों में ऋण। तभी तो पुरुष की आँखें चमक उठती हैं स्त्री को देख कर। धन चुम्बक ऋण छोर को स्पर्श करने की प्रक्रिया में जो आ जाता है।

यह प्राय: विरल रहने वाली शक्ति घनीभूत भी की जा सकती है।

मेस्मरिज्म

डॉ० मेस्मर ने अपने प्रयोगों और निष्कर्षों के आधार पर एक चिकित्सालय की स्थापना की जिसकी व्यवस्था अत्यन्त रोचक थी। उन्होंने दीवारों पर चुम्बक लगा दिये जो अगोचर होते हुए भी पूर्ण प्रभाव डालने में समर्थ थे। कमरे की व्यवस्था सुखद करके उसमें ऐसे मधुर संगीत की व्यवस्था की जो अत्यन्त कर्ण प्रिय हो तथा इत्र की हल्की सुगंध से अतिरिक्त वृद्धि की। इस कमरे में वे प्राय: असाध्य रोगियों को तन्द्रावस्था में भेज ऐसे मानसिक विचारों की तरंगे प्रेषित करते थे कि वे रोगी स्वस्थ हो रहे हैं। मनोरंजक बात यह है कि वे अपने रोगियों को केवल सादा पानी ही देते थे यद्यपि उसे भरते थे बड़ी बड़ी बोतलों में और उस पर जो लेबल लगाते थे उसमें छद्‌म किन्तु बड़े बड़े गूढार्थ से लगने वाले नाम लिखे होते थे! रोगी के ऊपर अत्यन्त अनुकूल प्रभाव पड़ता था और वह

सोचता था कि अवश्य ही उसे कोई विशिष्ट औषधि दी जा रही है। कहना न होगा कि उनकी यह पद्धति सफल तो हुई ही साथ ही लोकप्रिय भी हुई। डॉ० मेस्मर ने इस प्रकार अनुभव तो भारतीय ज्ञान का ही किया किन्तु वे उसकी चुम्बकीय व्याख्या ही कर सके और इसी कारण एक सीमित क्षेत्र चिकित्सा विज्ञान तक ही सीमित होकर रह गये।

उसके शिष्यों में **डॉ० मॉक्विस** ने विशेष विकास कर यह क्षमता अर्जित की कि वे अपनी उंगलियों के स्पर्श से उन रोगियों को एक विशेष नींद में सुला देते थे जिनकी शल्य चिकित्सा होनी होती थी। उस युग में क्लोरोफार्म का आविष्कार न होने के कारण उनका यह प्रयोग रोगियों के लिये जहां अपार पीड़ा से मुक्ति दिलाने वाला था वहीं आश्चर्यजनक भी था। ऐसा उन्होंने अपनी अंगुलियों के पोरुओं में चुम्बकत्व बढ़ा कर करना संभव कर पाया था।

हिप्नोटिज्म

पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने सम्मोहन विज्ञान के निरन्तर विकास के क्रम में पाया कि यह मानसिक विकृति के रोगियों के लिए विशेष सहायक है। सन् १८४१ में **डॉ० जेम्सब्रेड** के द्वारा एक नवीन प्रयोग किया गया और सिद्ध किया गया कि व्यक्ति अपनी उगंलियों के स्पर्श से किसी रोगी को विशेष प्रक्रियाओं से गुजार कर स्वस्थ तो कर ही सकता है साथ ही वह स्वयं को भी रोगमुक्त कर सकता है। उन्होंने बताया कि किसी एक बिंदु पर या दीपक की लौ पर अपनी आंखों को स्थिर कर मस्तिष्क को विचार शून्य कर देने से धीरे धीरे उसकी आंखों में चुम्बकीय शक्ति बढ़ने लगती है, और कुछ समय बाद वह स्वयं हिप्नोटिक नींद में से वही लाभ प्राप्त कर सकता है जो कि उसके ऊपर प्रयोग करने से होता। उन्होंने इस संदर्भ में ग्रीक भाषा का शब्द "हिप्नास" लिया जिसका अर्थ 'नींद' होता है। डॉ० ब्रेड के विचारों को पूरे यूरोप में सम्मानित किया गया और तबसे मेस्मरिज्म का नाम बदल कर **"-हिप्नोटिज्म"** हो गया जो आज तक प्रचलित हैं।

वर्तमान में अमेरिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक **इयान ऑर्थर** ने स्पष्ट किया है कि प्रत्येक मनुष्य के शरीरं में तीन प्रकार की शक्तियां होती हैं। शारीरिक शक्ति, भौतिक शक्ति, और मन: शक्ति। सम्मोहन भी मन: शक्ति का ही तो एक रूप है। जापान के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ० **हिरेसी मोतोयामा** ने अपनी पुस्तक **"सिक्स्थ सेन्स"** में बताया है कि मन: शक्ति के एकाग्रता के माध्यम से दूसरे के मन में स्थित विचारों को पढ़ा जा सकता है। और यदि व्यक्ति अपने समस्त चक्रों को जाग्रत कर ले तो ऐसी अतीन्द्रिय शक्ति जिसे 'अल्फा तरंगे' कहते हैं, जाग्रत हो जाती है। जिसके माध्यम से व्यक्ति सैकड़ों मील दूर बैठे व्यक्ति को देख सकता हैं। उसके मन की गोपनीय बातों को जान सकता है। उसे मन चाहा आदेश देकर सुधारा जा सकता है, या इसी तरह के अन्य कार्य कर सकता है।

यदि हम उपरोक्त सिद्धान्तों की खोज भारतीय पक्ष से जोड़ कर करें तो पायेंगे कि निष्पक्षत: यह भारतीय विचार ही हैं, जो उनके सामाजिक परिपेक्ष्य व जीवन शैली से जुड़ परिवर्तित हो लोकप्रिय हुए। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने विविध ज्ञान विज्ञान के पक्षों को जो तेजी से लुप्त हो रहे हैं,और जिन्हें विदेशी ललक से अपना रही है, उसके प्रति हृदय में रुचि जाग्रत करें और समय रहते संजो सके। अन्यथा वर्षों बाद जब हमारा ही मूल ज्ञान उनके द्वारा पुनर्पादित किया जायेगा तो उसका स्वरूप उनकी जीवन शैली के अनुसार परिवर्तित और कदाचित् विकृत होगा। कम से कम उसमें वह व्यापकता, वह विशिष्टा, वह गहनता और सबसे बड़ी बात मानव के प्रतिआत्मीयता, जो हमारे देश की विशिष्टता, शायद न हो।

सम्मोहन-यंत्र

जो सुन्दरियों की धड़कन बढ़ाता है

एक प्रयोग

अपने सामने सिद्ध "सम्मोहन यंत्र" रख कर सामने दीपक व अगरबत्ती लगा ले, फिर "सम्मोहन माला" से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप करे

मंत्र- "ॐ हलं स्व सम्मोहनय फट्"

ऐसा पांच दिन श्रृद्धा पूर्वक कर वह यंत्र गले में धारण कर ले तो उसका व्यक्तित्व शानदार हो जाता है, और सुन्दरियां उसे व्यक्तित्व से सम्मोहित सी हो ठगी सी रह जाती है।

आप भी अपनी आंखों में अग्नि भर सकते है।

यह तो सर्व विदित है कि अग्नि प्रत्येक पदार्थ को अपने ओर खींचती है और यही अग्नि तत्व या अग्नि स्फुलिंग जब व्यक्ति की चक्षु गोलकों में उतर आता है तो वह संसार में चेतन तो क्या जड़ पदार्थ तक को अपनी ओर आकर्षित करने में समर्थ हो जाता है।

यह कोई दुर्लभ क्रिया नहीं है व्यक्ति कुछ दिनों के नियमित अभ्यास एवं साधना से इसमें सफल हो सकता है। इस हेतु उसे "अर्हत यंत्र" पर त्राटक करते हुये नित्य प्रति अपने जीवन का एक विशिष्ट समय प्रदान करना ही होगा। यह साधना मूलत: सूर्य तत्त्व की ही साधना है अत आप प्रात: सूर्योदय के समय इस क्रिया को सम्पन्न करें तो उचित रहेगा। इस मंत्र का जप रक्त स्फटिक माला से करें।

मंत्र है-

।। ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नम:।।

सौन्दर्य

अब कोई भी युवती अनुपम सौन्दर्यवती हो सकती है।

आइये इन पांच उपायों को स्वयं आजमायें।

सौन्दर्य शब्द सुनते ही एक ऐसा नारी शरीर सामने तैर जाता है, जो अपने आप में बेदाग हो, कोमलता की मिसाल हो। पिछले हजारों वर्षों से सौन्दर्य और नारी शरीर एक दूसरे के पर्याय बन गये हैं। बिना सौन्दर्य के नारी शरीर की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती है, और नारी शरीर के बिना सौन्दर्य कहीं खिल भी नहीं सकता। कहने को तो पुरुष-सौन्दर्य, प्रकृति-सौन्दर्य कई प्रकार के सौन्दर्य होते हैं, लेकिन सौन्दर्य जहां खिल उठता है वह नारी शरीर ही होता है।

भगवान् ने स्त्री को बनाया परन्तु सौन्दर्य तो जैसे चारों ओर बिखेर दिया। आवश्यकता है इन बिखरे हुये सौन्दर्य कणों को एकत्र करने की, और समेट कर शरीर में उतार लेने की। आयुर्वेद यही करता है। वह प्रकृति में बिखरे सौन्दर्य को नारी शरीर में उतार देता है।

हकीकत में देखा जाये तो पूरी प्रकृति को समेट कर जो साकार रूप दिया जाता है, उसे युवती कहा जाता है। सुन्दर पतला छरहरा कमनीय शरीर, अन्डाकार चेहरा उस पर बड़ी-बड़ी झील सी गहरी आंखें, ऊंचा ललाट, उस पर दिप्-दिप् करती हुई लाल बिन्दी, सुतवीं और पतली नासिका, दो गुलाब की पंखुडियों को एक दूसरे पर रखे हुये लालिमा युक्त अधर, चिबुक ऐसा जिसमें छोटा सा गढ्ढा पड़ गया हो और कामदेव उसमें कूदने को आतुर हो रहे हों, दन्त पंक्ति छोटी-छोटी, सुन्दर व स्वच्छ हो, और बाल तो ऐसे हों कि कोई झरना सा फूटा हो और नितम्बों पर से लहराकर नीचे उतर गया हो।

वक्ष स्थल कठोर उठा हुआ, गुलाब की डालियों की तरह मचलता हुई, पीपल के पत्ते की तरह पेट, मुट्‌टी में आ जाने लायक कमर, हस्ती सुण्ड की तरह अत्यन्त आकर्षक जंघायें, उभरे नितम्ब और पैर देख कर तो ऐसा लगे कि दो कोमल पुष्प धरती पर कहीं मैले न हो जायें।

दूध में केसर मिलाने से जो रंग उतरे सारा शरीर वैसा ही सुनहरा हो, मांसल हो। इठलाता और लचकीला शरीर .... बिना कहे ही निमंत्रण की ध्वनि आ रही हो।

और फिर चेहरे का भोलापन जैसे सारी प्रकृति एक साथ मुस्करा रही हो, आंखें यौवन को निमंत्रण देती हों, और चाल कि कोई हिरणी फुदक कर निकल गई हो, मिठास, कोमलता, अल्हड़पन, भोलापन, इन सबको बांध के ही जो पुंज बनता है, उसे नारी शरीर कहते हैं, जिसे देख कर पुरुष विचलित हो उठे और विचलित होकर बंध जायें, टक-टकी लगाकर देखने पर मजबूर हो जायें, ऐसे शरीर को देखना प्राप्त करना ही जीवन का आनंद है, सौभाग्य है।

जैसा कि ऊपर लिखा ईश्वर ने तो केवल शरीर ही दिया है, पर ऐसा सौन्दर्य तो प्रयत्नों से ही मिल सकता है। शरीर में चाहे कितनी ही न्यूनतायें हों पर पूरे जंगल में उपत्यकाओं में जो बिखरी हुई जड़ी-बूटियां है उनके माध्यम से आश्चर्यजनक परिवर्तन किये जा सकते हैं और अद्‌भुत सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता है।

सौन्दर्य के शत्रु

नारी सौन्दर्य के कई शत्रु है, जिनमें प्रमुख निम्न बारह हैं -

१. शरीर भारी होना और मोटा होना, २. आंखे छोटी-छोटी सौन्दर्यहीन होना या आंखों पर चश्मा चढ़ा होना, ३. सिर के बाल छोटे-छोटे होना, नित्य झड़ना या असमय में ही बाल पक कर सफेद होना आदि, ४. दांत टेढ़े मेढ़े होना या बाहर निकले हुये होना होंठ मोटे और शुष्क होना, ५. चेहरे पर बचपन का कोई दाग, मस्सा या निशान होना, ६. आंखों के नीचे कालापन दिखाई देना, ७. चेहरे पर

असमय झुर्रियां पड़ना या ललाट बहुत छोटा होना या गर्दन बैठी हुई होना, ८. वक्षस्थल का उभार नहीं के बराबर होना या बहुत कम होना अथवा बहुत ज्यादा बढ़ा हुआ होना, ९. पेट फूला हुआ बेडौल होना या कमर जरूरत से ज्यादा मोटी होना, १०. कद बहुत छोटा होना, ११. तेलिया चेहरा होना या सारे शरीर पर छोटे-छोटे बाल होना, १२. शरीर का या चेहरे का रंग सांवला या काला होना।

ये बारह शत्रु नारी के सौन्दर्य को समाप्त कर देते है। यदि बाकी शरीर ठीक हो और एक अवगुण हो तो भी बाकी सारे सौन्दर्य को वह एक अवगुण ही समाप्त कर देता है।

जो चतुर और समझदार स्त्री होती है, वह नकली प्रयोगों और नकली प्रसाधनों में विश्वास नहीं करती। कुछ घण्टों का सौन्दर्य, सौन्दर्य नहीं कहलाता। सौन्दर्य तो वह होता है , जो चिरस्थायी हो, दीर्घकालीन हो, जो धूप की तरह उजला और प्रकाशवान् हो।

अभिनव प्रयोग

मैंने तो जीवन ही आयुर्वेद की सेवा करने में और उन जड़ी बूटियों को पहिचानने, प्राप्त करने और उसका प्रयोग करने में बिता दिया, जिसके माध्यम से कुरूप युवती भी सौन्दर्यवती हो सकती है मैंने अपने जीवन में आयुर्वेद के उन रसायनों और लेपों का निर्माण किया, जिसके प्रयोग से किसी प्रकार का दाग नहीं होता, अपितु जिसका उपयोग करने से उपरोक्त बारह दोष मिट जाते हैं, और उनका सौन्दर्य अपने आप में अद्वितीय बन जाता है।

हमने अभिभावकों और संबंधित पतियों की अनुमति से कुल दस युवतियों को चुना जो सौन्दर्य की दृष्टि से न्यून थीं, कुछ का शरीर अत्यन्त भारी था, तो कुछ अत्यन्त ही सींकिया थीं, कुछ का रंग सांवला या काला था, तो कुछ के शरीर पर बाल उगे होने के कारण सौन्दर्य में निखार नहीं आ रहा था। एक स्त्री के तो जरूरत से ज्यादा बाल झड़ने की वजह से गंजापन-सा आने लग गया था। कुल मिला कर वे दसों स्त्रियां किसी भी प्रकार से अपने आपको सौन्दर्यवती नहीं कह सकती थी। और इस दृष्टि से वे मन ही मन परेशान और दुखी थीं। एक प्रकार से देखा जाये तो उनके मन में हीन भावना घर कर गई थी।

मैने उन पांच प्रयोगों को आजमाया जो कि मैं इससे पहले सैकड़ों बार आजमा चुका हूं, ठीक उसी तरह से उनको औषधियां दी गई, ठीक उसी प्रकार से उन्हें लेप लगाने के लिए दिया गया और ठीक उसी प्रकार से तीन दिन के लिए उनके खान-पान का ध्यान रखा गया, जैसा कि मैने पूर्व में किया था।

और इन तीन दिनों का जो परिणाम सामने आया वह उन सब के लिये चौंकाने वाला, आश्चर्यजनक था, यह मैं कोई अपनी प्रशंसा नहीं कर रहा हूं, मुझे इसकी आवश्यकता भी नहीं है, मैं तो इसका सारा श्रेय आयुर्वेद को देता हूं। हां! यह बात अवश्य है कि मैने उन हजारों आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों का अध्ययन किया, उन जड़ी बूटियों को पहिचाना और विभिन्न जड़ी बूटियों को परस्पर मिला कर लेप बनाये, विशेष प्रकार की औषधि का निर्माण किया और विशेष प्रकार के उबटन तैयार किये।

परिणाम चौंकाने वाले रहे, उनके अभिभावकों और पतियों को तो प्रसन्नता हुई ही, पर वे स्त्रियॉं तो अपने आप में आश्चर्यचकित थीं, वे बार-बार अपने चेहरे को और शरीर को आदमकद शीशे में देख रही थीं और आश्चर्यचकित हो रही थीं, इतरा रही थीं। वे ऐसा अनुभव कर रही थी कि जैसे उनका दूसरा जन्म हुआ हो।

और इसी की प्रशंसा लोगों और स्त्रियों के जबान पर तो थी ही, पत्र पत्रिकाओं में भी जमकर इसकी तारीफ की गई। बाद में तो स्त्रियों और पुरुषों का जमघट सा लग गया। प्रत्येक स्त्री इस प्रकार से अपने आपको सौन्दर्यवती बनाने के लिए आतुर थी, पर समय न्यूनता की वजह से ऐसा सम्भव नहीं हो सका।

इससे यह स्पष्ट हो गया कि जन्म तो ईश्वर का दिया हुआ होता है पर स्थायी सौन्दर्य के लिये प्रभु के द्वारा बनाई हुई उन वनस्पतियों और जड़ी बूटियों का प्रयोग ही श्रेयस्कर है, जो अपने आप में अलौकिक हैं, जिनके द्वारा किसी प्रकार की कोई हानि या नुकसान नहीं होता।

सौन्दर्य प्रयोग

ऊपर मैंने जो नारी सौन्दर्य के बारह दोष बताये हैं, उन दोषों को दूर करने के लिए सौन्दर्य की खामियों को समाप्त करने के लिए और अलौकिक सौन्दर्य प्राप्त करने के लिए, निम्न पांच प्रयोग उपयोग में लाने चाहिए जिसके माध्यम से एक युवती वह सब कुछ प्राप्त कर सकती है, जो उसकी इच्छा होती है।

१. अनंग लेप

बत्तीस जड़ी बूटियों को मिलाकर उनका पाउडर बना कर यह लेप तैयार किया जाता है, जिसे "अनंग लेप" कहते है, इस लेप को क्रीम की तरह रात को सोते समय चेहरे पर बांहों पर और सारे शरीर पर लगा दिया जाता है, रात भर में यह लेप त्वचा के छिद्रों से अन्दर जा कर शरीर की कालिमा बनाने वाले जो तत्त्व होते हैं, उनको समाप्त कर देता है। इस प्रकार शरीर की त्वचा नरम, पतली, चमकदार और गोरी हो जाती है। सुबह उठकर इस लगाये हुए लेप को गुनगुने पानी से धो लेना चाहिए और खुरदरे तौलिये से शरीर को पोंछ देना चाहिए , दो तीन दिन के प्रयोग से ही आश्चर्य जनक निखार दिखाई देने लग जाता है।

२. रति गुटिका

इसमें ग्यारह दुर्लभ जड़ी बूटियों का समावेश होता है छोटी गोलियों के आकार में यह "रति गुटिका" होती है, नित्य दो गोली सुबह और चार गोली रात्रि को सोते समय ली जाती है। यह शरीर में जाकर आश्चर्यजनक प्रभाव पैदा करती है। शरीर के फालतू मांस को समाप्त कर देती है। चर्बी को पिघला देती है और पूरे शरीर को संतुलित बना देती है, इससे किसी प्रकार की कोई हानि नहीं होती, इसके माध्यम से सारा शरीर एक सांचे में ढल जाता है।

३. उर्वशी तेल

यह तेल अठारह जड़ी बूटियों के माध्यम से बनाया जाता है व रात्रि को सोते समय सिर के बालों की जड़ में लगाया जाता है। सुबह किसी शैम्पू से बालों को धो लिया जाता है। इसके द्वारा बालों का झड़ना बन्द हो जाता है, और बाल लम्बे चमकीले और आकर्षक हो जाते है। इसके द्वारा गंजापन मिट कर नये बाल भी उग आते देखे हैं।

४. दिव्यांगना गुटिका

ये गोलियां होती है जिनमें २१ जड़ी बूटियों का समावेश होता है। इसके माध्यम से वक्ष स्थलों का उभार संतुलित हो जाता है, नितम्ब और जंघाए आकर्षक बन जाती हैं और कमर मुट्ठी में आने लायक पतली हो जाती है, साथ ही साथ इसके द्वारा चेहरे की झुर्रियां और चेहरे पर बने हुये निशान भी हमेशा के लिए समाप्त हो जाते हैं। नित्य एक गोली सुबह और एक गोली शाम लेनी चाहिए।

५. मेनका पाउडर

यह सफेद पाउडर की तरह होता है जिसमें आठ बूटियों का समावेश होता है, इसके सेवन से सारा शरीर सन्तुलित, सुन्दर, कमनीय और आकर्षक हो जाता है, साथ ही साथ पूरे शरीर में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रह पाती।

इन पांचो वस्तुओं का प्रयोग करने से मात्र तीन दिन में या एक सप्ताह में ही युवती के शरीर में अलौकिक सौन्दर्य,आकर्षण और यौवन आ जाता है, जिसके द्वारा वह हजारों लाखों दिलों पर शासन करने में समर्थ हो पाती है।

मैंने इस औषधियों को बेचने के लिए नहीं बनाया, व्यापार करना मेरी नियति नहीं है, मेरा सौभाग्य है कि पूज्य गुरुदेव डॉ नारायण दत्त श्रीमाली जी जैसे मुझे गुरु मिले जिनके द्वारा ही मुझे इन सब औषधियों का ज्ञान हुआ और उनके निर्देशन में ही मैंने इन औषधियों को बनाया।

घूंघट के पट खोल री ....

सम्मोहन मानव मन का सूक्ष्म व्यापार

प्रेम, घृणा, भय, साहस, लोभ, त्याग, जुगुप्सा, प्रशंसा-कैसे-कैसे भाव लेकर मानव इस जीवन में गतिशील रहता है। कभी छल-छलाता रहता है तो कभी नैराश्य के घोर अंधेरे में डूब जाता है।

मानव मन की यही संवेदनायें ही तो उसे नये नये आयाम देती रहती हैं, जिससे यह प्रकृति का समस्त चक्र गतिशील है और मुखरित है। किन्तु क्या वह इतने भावों की भीड़ में थक नहीं जाता ? क्या वह फिर भी अकेला नहीं अपने आप को पाता? हमारे पूर्वजों ने 'मन' को लेकर क्या पाया और हमारे लिए ज्ञान की क्या थाती छोड़ गये, इन्हीं सब बिन्दुओं को स्पर्श करता हुआ यह लेख

फोटो पर सम्मोहन

जिसे आप वश में करना चाहें, या जिस पर आप वशीकरण करना, चाहें, वह यदि सामने न हो तो उसका फोटो प्राप्त कर लें।

फिर रविवार की रात्रि को उस फोटो पर "**सम्मोहय यंत्र**" बांध कर निम्न मंत्र का जप तीन माला करे

"ॐ रं श्रृं अमुकं मे वश्यमानाय हुं"

ऐसा तीन रविवार श्रद्धापूर्वक प्रयोग करें तो सफलता मिल जाती है।

भारतीय मनीषियों ने मन तत्त्व की विवेचना के प्रयासों में अपने ही अंतर में की गई यात्रा से पाया कि इसके भी दो भेद हैं, अन्तर्मन एवं बहिर्मन। बहिर्मन हमारे मन का वह भाग है जिसको लेकर हम इस भौतिक जगत् में गतिशील हैं। सारा सांसारिक व्यापार हम इसी के माध्यम से तो संचालित करते हैं चाहे वह व्यापारिक समझौतों का विषय हो, इंटरव्यू का मसला हो, अधिकारी से सामंजस्य की बात हो या घर परिवार की कोई बात । इस बाह्य जगत् अथवा भौतिक जगत् में क्रियाशील रहते हुये हम जो कुछ भी अनुभव कर रहे होते हैं उसकी रिकार्डिंग या उसका अंकन हमारे अंदर हो रहा है प्रतिक्षण, प्रतिपल। इसी कारणवश जब हम किसी क्षण विशेष की बात याद करते है, तो हमारी आँखों के सामने तुरंत एक चित्र सा खिंच जाता है, मन की इसी क्षमता को हम स्मरण शक्ति कहते है।

बहिर्मन की अपेक्षा अन्तर्मन का विस्तार कहीं ज्यादा व्यापक, कहीं ज्यादा रोचक है, इसका विस्तार केवल भूतकाल के लम्बे समय तक ही नहीं वरन भविष्य के गर्भ में भी जाकर होता है। यह बहिर्मन का ही आयाम है उसका ही अंग है किन्तु उससे कहीं ज्यादा चैतन्य और सूक्ष्म है। मानव का सारा व्यक्तित्व, उसके अन्तर्मन पर जो कुछ अंकित होता है, उसी का प्रतिबिम्ब होता है एवं उसी के आधार पर निर्मित होता है। एक सम्मोहन विज्ञान के अध्येता को तो मानव के अन्तर्मन का कुशल

हम किसी क्षण विशेष की याद करते हैं और आँखों के सामने चित्र तैर जाता है, क्यों ? यही है अन्तर्मन पर हुई रिकार्डिंग, प्रतिक्षण, प्रतिपल

ज्ञाता होना ही पड़ेगा क्योंकि सम्मोहन विज्ञान का तो सम्पूर्ण कार्य क्षेत्र व्यक्ति के अन्तर्मन से ही जुड़ा है। वैज्ञानिकों का अनुभव है कि हमारे मस्तिष्क के आस पास चौबीस करोड़ रक्तवाहिनियों और रक्त शिराओं की एक मोटी पट्टी बनी हुई है जो मानव के चेतन और अचेतन, दृश्य व अदृश्य बिम्ब उस पट्टी पर सुरक्षित जमा रखती है समय आने पर यह बिम्ब ही स्वप्न का आकार लेकर उपस्थित होते हैं । अन्तर्मन के पास अपनी बात कहने के लिए कोई रास्ता तो है नहीं, इसी से प्रकृति ने स्वप्न के माध्यम से ऐसी व्यवस्था की है जिसके द्वारा व्यक्ति चेतावनी प्राप्त कर सकता है।

अन्तर्मन और स्वप्न

एक सम्मोहन वैज्ञानिक को कुशल स्वप्न वेत्ता होना आवश्यक ही है क्योंकि वह अपने माध्यम के अनेक स्वप्नों को जानकर उसके अन्तर्मन की एक सहज थाह पा सकता है। अन्तर्मन के जिस स्वर को स्वप्न कहा जाता है उससे संबंधित कई रोचक घटनायें संसार के समक्ष प्रकाश में आयी हैं । वैज्ञानिकों ने कई महत्वपूर्ण खोजें की हैं। विश्व के प्रख्यात संगीतकार मोजार्ट के द्वारा बनाई गई धुन 'बीथोवन' की प्रेरणा उसे स्वप्न में मिली थी। सिलाई मशीन के आविष्कारकर्ता होव वर्षों से अपनी मशीन में धागा डालने का स्थान सुई के साइड में बना रहे थे किन्तु सफलता नहीं मिल रही थी एक दिन जब वे खिन्न होकर उसी का समाधान सोचते-सोचते सो गये तो उन्होंने स्वप्न में देखा कि एक राक्षस ने आकर उन्हें पेड़ से बांध दिया है और अपने अनुचरों को आज्ञा दी है कि उनके सिर के बीचों-बीच में भाला ठोंक दे। वे घबराकर उठ बैठे। उनका सारा शरीर पसीने-पसीने हो चुका था किन्तु उन्हें समाधान भी मिल चुका था, कि यदि मशीन की सुई में धागा साइड से न डालकर बीचों बीच से डालने का स्थान बनायें तो सुगम रहेगा। इसी तरह से संसार को एक श्रेष्ठ आविष्कार मिल सका।

उसी तरह अमेरिका के एक करोड़पति पिता की पुत्री डोरोथी को बार-बार स्वप्न आता था कि वह हिमालय पर्वत पर सुन्दर भगवे वस्त्र पहन कर आसानी से चढ़ती जा रही है एवं उसका पथ प्रदर्शन कोई भव्य, तेजस्वी संन्यासी कर रहे हैं । वह उस स्वप्न से आश्चर्यचकित रह जाती थी और ऊहापोह को समाप्त करनेके लिए वह एक दिन भारत आ ही गई और दिल्ली में आयी। उसने उन सभी स्थानो की यात्रा की जो कि भारत में धार्मिक माने जाते हैं और जहां सभी विदेशी पर्यटक जाना अपनी यात्रा का आवश्यक अंग मानते हैं, उसे कहीं तृप्ति नहीं मिली। जाने से पूर्व वह अपने कुछ परिचितों की सलाह मानकर राजस्थान की यात्रा करने निकली और उसे मार्ग में किसी नगर में एक साधना शिविर का ज्ञान हुआ। वह जिस मूलभूत उद्देश्य से भारत आई थी, उसकी वह भावना जाग्रत हो उठी और वह साधना शिविर में आ गई। **वह हतप्रभ रह गई जब उसने मंच पर आसीन व्यक्तित्व के दर्शन किये। ठीक वही हाव-भाव , वही मुस्कराहट, वही चाल, जो उसने स्वप्नों में देखी थी अंतर केवल बाह्य वेष-भूषा का था, किन्तु वह बाधक नहीं बन सका। वह भाव विभोर होकर उनके चरणों में गिर पड़ी।**

बाद में उसने उन स्थानों की यात्रा भी अपने गुरुदेव के साथ की और उन्होंने उसे उन सभी स्थानों से परिचित कराया जहां किसी जन्म में उसने उनके साथ साधना की थी और जिन्हें वह भी स्वप्न में देखती रहती थी। पाश्चात्य जगत् की वह श्रेष्ठ साधिका जिसकी आत्मा भारतीय ही थी, अपने स्वप्न को समझ एक साधारण से घटिया गृहस्थ जीवन से निकल सकी और उसे दीन दुखियों की सेवा में लगा दिया।

स्वप्न के इन्हीं विवेचनों से स्पष्ट होता है कि दोनों मनों की अलग-अलग सत्ता नहीं है। इसके पूर्व यूरोपीय विद्वानों का मत था कि दोनों मनों का अलग-अलग अस्तित्व है। पूज्यपाद गुरुदेव ने पहली बार पूर्णतः स्पष्ट किया कि दोनों मन एक ही आयाम के दो पहलू हैं। उन्होंने इसे एक उदाहरण से स्पष्ट किया कि जब मानव स्वप्न में जब किसी भयानक दृश्य को देखता है तो हड़बड़ाकर उसकी आंख खुल जाती है यदि दोनों मन परस्पर जुड़े हुये नहीं होते तो अन्तर्मन में चल रही घटना का इस बाह्य मन पर क्यों प्रभाव पड़ता?

वैज्ञानिकों का अनुभव है कि हमारे मस्तिष्क के आस-पास चौबीस करोड़ रक्तवाहिनियों की एक पट्टी है जो इस जन्म के और पूर्व जन्म के सभी बिम्ब समटे है। स्वप्न यहीं से तो आते हैं।

"शक न कर मेरी खुश्क आँखों पर गुरुदेव ! यूं भी आंसू बहाये जाते है"
टी. एस. चौहान, शिमला

आज भी कई साधक साधिकाओं को स्वप्न में दिशा निर्देश मिला है कि वे पूर्वजन्म में साधना की उच्चस्थिति पर रही हैं और गृहस्थ बनकर एक या दो संतान उत्पन्न करने में उनके जीवन की पूर्णता नहीं है। किन्तु वे डोरोथी की तरह हिम्मत नहीं जुटा पा रहीं।

सौभाग्य वश वह व्यक्तित्व आज भी हमारे मध्य उपस्थित है, यदि हम चाहें या हिम्मत करें तो डेरोथी की तरह हमें भी वह उच्चता प्राप्त हो सकती है।

अन्तर्मन का विस्तार भूतकाल ही नहीं भविष्य में गर्भ में भी जाकर होता है।

सम्मोहन और सिद्धियाँ
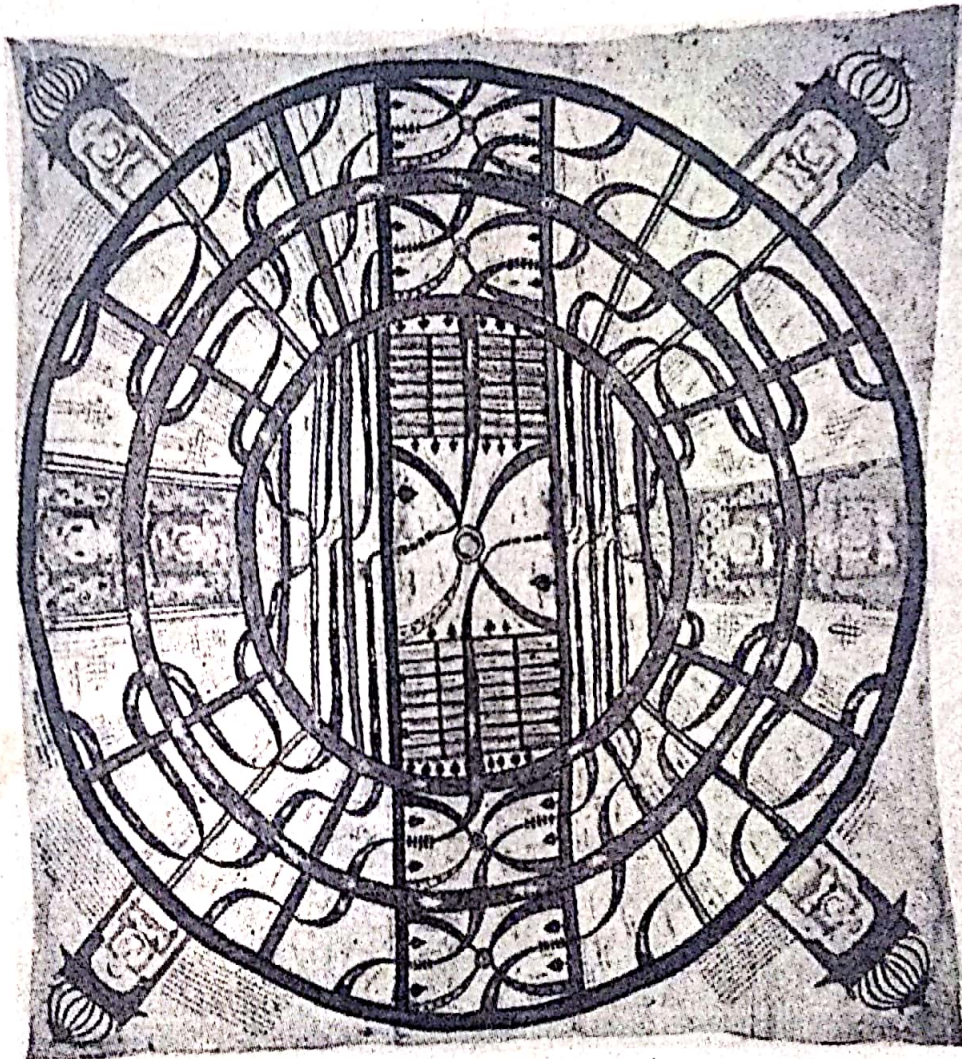
सम्मोहन तो स्वयं में ही एक उच्चकोटि की सिद्धि है, फिर अन्य सिद्धियों का क्या तात्पर्य है। जिस प्रकार से एक कारखाने में मुख्य उत्पाद के साथ ही साथ सहयोगी उत्पाद (बाई प्रोडेक्ट) थोड़े से फेर बदल कर तैयार हो जाते हैं, उसी तरह सम्मोहन ज्ञान सीखते समय आप थोड़ा सा बदलाव कर और भी कई विशिष्ट स्थितियां सहज प्राप्त कर सकते हैं।

यह स्पष्ट हो जाने के बाद कि सम्मोहन अपने आप में कोई जटिल प्रक्रिया नहीं है वरन् प्राणों के विस्तार और मन के निर्विचार हो जाने का एक तालमेल है। व्यक्ति को इसी से जुड़ी कई ऐसी स्थितियां स्वतः ही हस्तगत हो उठती हैं जिन्हें सामान्य व्यक्ति चमत्कार समझता है। चमत्कार शब्द तो एक ऐसा अनिश्चित अर्थ वाला शब्द है कि व्यक्ति अपनी सामान्य बुद्धि से या तर्क से जिस तथ्य की व्याख्या नहीं कर पाता, उसे चमत्कार कह देता है। इसी से साधना, सिद्धि, चमत्कार, अंधविश्वास यह सब शब्द आज अपने-अपने मूल अर्थों से विस्थापित हो गड्ड मड्ड हो गये हैं, और इसका लाभ पाखण्डी भगवावस्त्र धारी भुना रहे हैं।

जब हम सम्मोहन की या अन्य किसी सिद्धि की बात सोचते हैं तो प्रथम व अत्यावश्यक तथ्य हमारे मानस में स्पष्ट होना चाहिए कि मुझे जैसे भी हो एक सुयोग्य मार्गदर्शक ढूंढ ही निकालना है। जब बात भारतीय ज्ञान विज्ञान और साधना की होती है तो मार्गदर्शक से तात्पर्य 'गुरु' से होता है। किन्तु गुरु का पद वही नहीं

है जो मार्गदर्शक का होता है। मार्गदर्शक तो हमारा किसी एक विषय विशेष में व्यवहारिक मार्ग बताने वाला पथ प्रदर्शक सा ही होता है जबकि गुरु हमारी आस्था, आन्तरिक प्रेम, श्रद्धा, सेवा का घनीभूत स्वरूप होता है। उसे धन या पद के दबाव से नहीं खरीद सकते। हिन्दू चिंतन तो मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में पूर्ण है। प्रत्येक के अन्दर सभी साधनाएं सभी ज्ञान समाहित है और उसे जागृत करना है। हमारी बोलचाल की भाषा में भी तो कहते हैं 'पाठ स्मरण करना' क्योंकि अर्जित तो हम जन्म से ही कर चुके होते हैं। यह ज्ञान जागृत करने का अत्यंत जटिल कार्य गुरु पद पर आसीन दिव्य पुरुष ही अपने स्पर्श से कर सकते हैं। जिस माध्यम से वे जागृत करते हैं उसे ही आध्यात्मिक भाषा में 'दीक्षा' की संज्ञा दी गयी है। इसी से विभिन्न प्रकार ज्ञान को इस शरीर में, इस मानस में स्पष्ट करने हेतु विभिन्न दीक्षाओं का विधान रचा गया।

सम्मोहन ज्ञान की बात करते समय बार बार इस तथ्य का उल्लेख आता है कि व्यक्ति निर्विचार हो जिससे एक विचार को ही एक समय में लेकर उस पर समस्त बल केन्द्रित कर सामने वाले पर फेंक उसे वश में कर सके और व्यक्ति तो बस निर्विचार नहीं हो पाता। उसका मन भटकता ही रहता है साथ ही उसका मस्तिष्क उसे इस भटकने में और मदद करता है। जबकि व्यक्ति सोचता है मैं कितना श्रेष्ठ हूं कि हर बात पर पहले समझ बूझ कर विचार कर निर्णय लेता हूं। व्यक्ति के प्रयासों से निर्विचार होना संभव ही नहीं। यह व्यक्ति के अपने ही प्रयासों से यदि संभव होता तो इतनी साधना पद्धतियां उपाय आदि को खोजने का बखेड़ा ही नहीं करना पड़ता। यह सत्य है कि विचार शून्यता, क्रिया योग और ध्यान योग के समन्वय से प्राप्त की जा सकती है किन्तु इस मार्ग में कई ऐसे बिन्दु आते हैं जबकि दैवी बल की नितान्त आवश्यकता होती है और तब गुरु ही उसे जिस माध्यम से आगे बढ़ा सकते हैं उसे योग की भाषा में "दिव्य आघात" की संज्ञा दी गयी है। उदाहरण स्वरूप क्रिया योग करते समय जिस स्तर पर बाह्य मन को शून्य कर अन्तर्मन से जोड़ना होता है तो वह क्रिया केवल दिव्य आघात से ही संपन्न हो पाती है। क्रिया योग, ध्यान योग को "दिव्य साधना" भी कहा गया है। और ऐसे इस साधना में कई पड़ाव आते हैं।

सत्य

साधना-सिद्धि

एक बार या दो बार करने से साधना में सिद्धि नहीं भी मिल सकती, इसमें उतावली उचित नहीं है, यह तो सतत लम्बी प्रक्रिया है....यदि १० या १५ वर्षों के बाद भी सिद्धि मिली तो पूरा जीवन ही सौभाग्यदायक, प्रसिद्धि से पूर्ण, उज्जवल बन जायगा।

गुरु-कृपा

और यदि गुरु कृपा से सिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं तो फिर "गुरु आज्ञा ही केवलम्" जो गुरु कहें, वही करे....सतत....सचेष्ट....निरन्तर....तो कभी न कभी गुरुदेव प्रसन्न होकर सिद्धि प्रदान करेंगे ही।

पूर्णता

इस क्षेत्र में तो "घर फूंक तमाशा" देखने वाले ही आगे बढ़ सकते हैं, कबीर के शब्दों में "जो घर जारे आपनो चले हमारे साथ....।"

जो 'रिस्क' ले सकता है, जो चेलेंज उठा सकता है, वो....और वही अद्वितीय सिद्धि पुरुष बन सकता है।

अन्तर्मन और सिद्धियां

पूर्ण विचार शून्यता की स्थिति दैवी स्थिति होती है जब व्यक्ति ईश्वर के या ब्रह्म के तुल्य हो उठता है जिसका पारितोष होता है कि ईश्वर के अनन्त विभूषित खजाने में से उसे कुछ रत्न मिल जाते हैं वह सहज ही चमत्कारी पुरुष बन उठता है। सम्मोहन की क्रिया में हम निर्विचार हो किसी एक विचार को ही तो दूसरे पर प्रवाहित करते हैं। सम्मोहन में जो अभ्यास हम सामने वाले माध्यम पर करते हैं उसकी यदि सघनता में वृद्धि करें और उसे वहां तक प्रेषित कर सकें जहां हमारी भौतिक उपस्थिति न भी हो तो यही **विचार संक्रमण दशा** होती है। मूर्ति त्राटक अथवा चित्र त्राटक पर जब हमारा अभ्यास परिपक्व हो उठता है तो हम यह क्रिया सहज में ही किसी का फोटो लेकर भी उसके माध्यम से कर सकते हैं। इसका कारण यह है कि उस क्षण आपका मानस विचार शून्य है और आप केवल एक ही बिम्ब अपने मस्तिष्क में रखे हैं, जब आप उसे विचारों की तरंगे तीव्रता से प्रेषित करेंगे तो विश्व में उस सदृश्य कोई दूसरा व्यक्ति न होने से आपका इच्छित व्यक्ति ही संदेश को ग्रहण करेगा और आदेश पालन को बाध्य हो उठेगा। प्रारंभ में आप बगल के कमरे में बैठे व्यक्ति पर इसका अभ्यास कर प्रामाणिकता ज्ञात कर सकते हैं। और बाद में तो आप मात्र हुलिया सुनकर इच्छित व्यक्ति को आदेश पालन के लिए बाध्य कर सकते हैं। यही **'विचार संक्रमण सिद्धि'** है और यही प्रकारान्तर से 'संकल्प

> ***पौरुषज्ञान की निवृत्ति योगादि क्रिया अथवा उपासना सापेक्ष है उसका एक मात्र उपाय है सम्मोहन दीक्षा। दीक्षा को भगवद् अनुग्रह मूलक भगवद् शक्ति का संचार कहते हैं।***

सिद्धि' है।

भविष्य काल का दर्शन भी अन्तर्मन के जागरण से किया जा सकता है। बहुधा ज्योतिष में ऐसे योग उपस्थित होते हैं कि मात्र ज्ञान के आधार पर निर्णय नहीं दिया जा सकता, तब हमारा अन्तर्मन ही हमें सही निर्णय बताता है, जब सम्मोहन कर्ता किसी व्यक्ति को सम्मोहित करता है और उसे तृतीय स्थिति तक ले जाता है तो उस माध्यम को अन्तर्मन ईथर के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हो उठता है, और वह विश्व में कहीं भी घट रही कोई भी घटना न केवल देख सकता है वरन् उसे उसी सम्मोहन अवस्था में अपने सम्मोहन कर्ता को ज्यों का त्यों बता भी सकता है। ऐसी स्थितियों में जहां कोई बच्चा घर से भाग गया हो अथवा गायब कर दिया हो, किसी माध्यम के द्वारा उसका पता प्राप्त किया जा सकता है। यदि सम्मोहन कर्ता स्वयं कुछ विशिष्ट क्रियाओं को अपना कर अभ्यास करे तो स्वयं अपना अन्तर्मन इतना विकसित कर सकता है। भारतीय योग शास्त्र में इसी को 'दूर दर्शन सिद्धि' कहा गया है।

यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो प्रायः सभी सिद्धियों के मूल में अन्तर्मन का विकास एवं उसका सुसंयोजन ही छिपा है। अन्तर्मन असीम बन्धन रहित होने के कारण सदैव ही उचित देखता है उचित सुनता है और व्यक्ति को उचित मार्ग भी बताता चलता है। किन्तु बुद्धि के अतिरेक में हम उसकी उपेक्षा कर बैठते हैं। अपने अन्तर्मन को जागृत करना और उसका स्वर समझना ही सिद्धि का रहस्य है फिर हम चाहे 'विचार संक्रमण सिद्धि' प्राप्त करना चाहें अथवा 'संकल्प सिद्धि'। प्रायः सभी सिद्धियां परस्पर अन्तः सम्बन्धित अथवा एक दूसरे की पूरक ही तो हैं।

आन्तरिक पक्ष में सम्मोहन जहां व्यक्ति के अन्तर्मन से संबंधित होता है वहीं शरीर की संरचना की दृष्टि से समझने पर स्पष्ट होता है कि यह सुषुम्ना नाड़ी के जागरण से संबंधित है। सुषुम्ना नाड़ी का जागरण योग विधि से अत्यंत दुरूह एवं कष्ट प्रद है जबकि कुछ विशिष्ट क्रियाओं (दीक्षाओं) गुरु कृपा तथा गोपनीय मंत्रों की सहायता से अपेक्षा कृत सहज हो जाता है। जब व्यक्ति की सुषुम्ना जागृत हो जाती है तो उसे किसी को सम्मोहित करना नहीं पड़ता वरन् लोग उसकी आज्ञा पालन करना अपना सौभाग्य समझते हैं। हमारे शास्त्रों में कुछ ऐसे गोपनीय मंत्र हैं जिनमें आसन, दिशा, समय, माला, कोई बन्धन नहीं हैं, उन्हें केवल प्रतिदिन कुछ निश्चित समय के लिए जपना होता है और स्वतः ही सुषुम्ना जागरण की स्थिति बन उठती है। सुषुम्ना जागरण से व्यक्ति सम्मोहन के क्षेत्र में तो सफल होता ही है उसे फिर अन्य सभी साधनाओं में भी सफलता तेजी से मिलने लग जाती है।

सुषुम्ना नाड़ी जब एक बार जागृत हो जाती है तो स्वतः ही व्यक्ति को पूर्णता: तक पहुंचाने के लिए गतिशील रहती है। भले ही इस मध्य व्यक्ति के कई जन्म ही क्यों न बीत जायें, की सुषुम्ना का उर्ध्व गति ही कुण्डलिनी जागरण है।

साधना सिद्धि

पाठकों ने साधना और सिद्धि को अत्यधिक हल्की और मामूली बात समझ ली है, शास्त्रों में लिखा है कि अमुक साधना पांच दिनों में सिद्ध हो जाती है, तो मुझे यह लिखना ही पड़ता है, कि अमुक साधना में सिद्धि पांच दिनों में प्राप्त हो जायगी, और जब पांच दिनों में सिद्धि नहीं मिलती, तब वे निराश हो जाते हैं।

पर यह पांच दिनों में सिद्धि उनके लिये लिखी है, जो कई वर्षो से साधना कर रहे हैं, जो साधना के क्षेत्र में मंजे-तपे हैं, जिन्होंने कई-कई वर्ष लगाये हैं इस साधना-क्षेत्र में....नवागन्तुक साधकों के लिए नहीं।

जो नये-नये साधना पथ पर अग्रसर हुए हैं, उन्हें तो एक-एक साधना कई-कई बार करनी पड़ेगी, तब जाकर सफलता मिलेगी।

और आप सोचें, कि यदि पन्द्रह वर्ष बाद भी यक्षिणी, लक्ष्मी या कोई भी सिद्धि मिल गई तो आगे का तो पूरा जीवन ही जगमगाहट से भर जायगा, और फिर ऐसा जगमगाता जीवन पूरे भारत वर्ष में प्रसिद्धि का जीवन, पन्द्रह वर्ष बाद भी प्राप्त हो तो घाटे की बात कहां है, यह तो सौभाग्य है....पूरी-पूरी सफलता है।

सामान्य सन्दर्भो में

सम्मोहन विज्ञान

पाश्चात्य वैज्ञानिकों ने सम्मोहन विज्ञान की विवेचना करते समय यह तथ्य पाया कि इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात है, माध्यम को आपके कुशल सम्मोहन कर्ता होने का विश्वास। इसे ही उन्होंने प्रत्याशा (होप) की संज्ञा दी।

सम्मोहन ज्ञान में निश्चित रूप से आपका व्यक्तित्व तो मुख्य होता ही है साथ ही और कौन कौन से तथ्य हैं जो ध्यान में रखे जायें, इसका भी अवलोकन करें।

सम्मोहन विज्ञान के विभिन्न पक्षों, उसके क्रियात्मक पहलुओं को समझने के बाद उनका संक्षिप्त विवेचन पुनः करना आवश्यक ही है। सम्पूर्ण ज्ञान अर्जित कर लेने के बाद भी मन में कुछ शंकाएं और जिज्ञासाएं बच ही जाती हैं। यह स्वाभाविक भी है। जिस किसी ने भी सम्पूर्णता से किसी ज्ञान को समझने का प्रयास किया है वह जिज्ञासु होगा ही।

सम्मोहन विज्ञान चूंकि भारत में मध्य वर्ती काल में कुछ ऐसे परिवारों की सम्पत्ति बन गया जो स्वस्थ चिन्तनों से युक्त नहीं थे, अत: समाज में इसकी धारणा भी अच्छी नहीं रह गयी। इस विषय में व्यक्ति की पहली शंका यही होती है कि क्या इसमें कुछ हानिकारक तो नहीं? इसका सीधा सा उत्तर तो यही है कि क्या सड़क पर चलना भयप्रद नहीं! फिर भी यह निश्चित जानिए कि सम्मोहन विज्ञान में कुछ भी हानिकारक या भयप्रद नहीं है। बस कुछ बातों को ध्यान में रखना आवश्यक होता है। जैसे आप माध्यम को सम्मोहन की तीसरी अवस्था तक तब ही ले जाइए जब आप सिद्धहस्त हो जाएं। बहुधा होता यह है कि व्यक्ति की सम्मोहन निद्रा गहरी हो जाने पर उसे स्वाभाविक नींद आ जाती है और वह स्वाभाविक निद्रा पूरी कर सहज भाव से उठ जाता है। फिर भी गहन सम्मोहन निद्रा तभी देनी चाहिए जब आप जगाने के बारे में भी पूर्ण सिद्धहस्त हो जाएं। एक व्यक्ति को सम्मोहन की दशा में बार बार भेजने में भी कोई हानि नहीं किन्तु उससे सम्मोहन अवस्था में ऐसा कोई कार्य नहीं कराना चाहिए कि आगे चल कर वह समाज में उपहास का विषय बने। व्यक्ति के अन्तर्मन से खेलने का प्रयास नहीं करना चाहिए बाह्य मन को असावधानी पूर्वक सम्मोहन निद्रा में भेजने से उसके व्यक्तित्व का संतुलन गड़बड़ा सकता है इस तथ्य का ध्यान रखें।

सम्मोहन में तो आवश्यक है कि आपका माध्यम सामान्य बुद्धि का अवश्य हो। मूर्ख अथवा पागल सम्मोहित नहीं किए जा सकते। एक दृढ़ चित्त व्यक्ति अधिक कुशलता से सम्मोहन कर्ता के निर्देशों को ग्रहण कर सकता है क्योंकि उसके अन्दर मस्तिष्क को एकाग्र करने की क्षमता होती है।

सम्मोहन कर्ताओं के लिए एक महत्व पूर्ण सूत्र यह है कि वह सदैव अपने को सम्मोहन युक्त अवस्था में रखने की कला जानता हो, आपके चेहरे पर कुछ ऐसी कशिश, कुछ ऐसा भोलापन, कुछ ऐसी गहनता और सब कुछ परस्पर मिली–जुली हुई होनी चाहिए कि आपसे कोई मिलते ही आधे से अधिक सम्मोहित तो स्वत: हो उठे। हमारे शास्त्रों में ऐसी कई विधियां हैं जिनके माध्यम से व्यक्ति अपने को पूर्ण सम्मोहन युक्त एवं चुम्बकत्व युक्त सदैव बनाए रख सकता है।

स्वसम्मोहन की विधि भी एक उपयोगी कला है।

समूह सम्मोहन

सम्मोहन कर्ता को सम्मोहन की वैयक्तिक सफलता के बाद और आगे बढ़कर समूह सम्मोहन का अभ्यास करना चाहिए। **'समूह सम्मोहन'** कर व्यक्ति एक कुशल नेता, प्रचारक या अभिनय के क्षेत्र में सफल हो सकता। **समूह सम्मोहन** का आधार व्यक्ति की दृढ़ इच्छा शक्ति पर निर्भर करता है। उसकी दृढ़ इच्छा शक्ति से उसके मानस की प्रबल तरंगे पूरे-पूरे समूह को अपने अनुरूप देखने या अपने अनुरूप सुनने को बाध्य कर सकती हैं। लगभग सभी श्रेष्ठ जादूगर अपने प्रदर्शनों में जिन घटनाओं को दिखाकर चमत्कृत कर देते है, उसके मूल में **'समूह सम्मोहन'** का ही रहस्य छिपा होता है। ऐसे व्यक्ति जिन्हें सभाओं आदि में निरन्तर जाना पड़ता हो या व्यक्तियों के समूह से निरन्तर मिलना पड़ता हो, उनके लिए समूह सम्मोहन का अभ्यास विशेष उपयोगी रहता है। समूह सम्मोहन के इन व्यवहारिक और मनोरंजनात्मक उपयोगों के अतिरिक्त रचनात्मक उपयोग भी सम्भव है। उदाहरण के लिए हिंसा पर उतारू क्रुद्ध जन समूह को इसके माध्यम से रोका जा सकता है या सभाओं में पूरे के पूरे समूह को एक साथ सम्मोहित कर परिवार नियोजन के विषय में शिक्षित किया जा सकता है। इस विषय में जो शोध चल रहे हैं उनके शीघ्र ही सुखद परिणाम मिलने की आशा है।

पोस्ट हिप्नोटिज्म

इन्हीं शोधों के प्रक्रम में **'पोस्ट हिप्नोटिज्म'** नामक एक पृथक शाखा बन चुकी है, जिसमें व्यक्ति को सम्मोहन की अवस्था में जो निर्देश दिए जाते हैं उसका प्रभाव स्थायी होता है। सम्मोहन समाप्त करने के बाद भी व्यक्ति आज्ञा का पालन करता रहता है। कदाचित् पाठकों को भ्रम हो सकता है कि सम्मोहन द्वारा शायद व्यक्ति से बलात् रूप से कार्य लिए जाते हैं। किन्तु वास्तविकता तो यह है कि सम्मोहन के द्वारा व्यक्ति के अन्तर्मन की सुप्त ग्रन्थियों को इस प्रकार से स्पर्शित व आघातित कर दिया जाता है कि वे अपनी पूर्ण क्षमता से सक्रिय हो उठती हैं। फलस्वरूप सम्मोहित व्यक्ति तन्द्रा में नहीं अपितु अपने क्षमताओं के पूर्ण उपयोग से कार्य करने लगता है। इससे कोई हानि होने की सम्भावना तो बनती ही नहीं। 'पोस्ट हिप्नोटिज्म' का सहारा लेकर व्यक्ति की अनेक दुर्बलताएं, नशे आदि की आदतें छुड़ायी जा सकती हैं। उसे निर्देश दिया जा सकता है कि भविष्य में तुम जब-जब सिगरेट पीओगे तो तुम्हें अरुचिकर लगेगी या शराब की गन्ध से भविष्य में तुम्हें उबकाई आ जाएगी। कई बार व्यक्तियों को विचित्र सी आदतें पड़ जाती है, जैसे नाखून चबाना, नींद में बड़बड़ाना, उंगलियां चटकाना आदि, जो उनके व्यक्तित्व में हल्कापन ले आती है। इसका सफल उपचार 'पोस्ट हिप्नोटिज्म' के माध्यम से ही सम्भव है।

श्रद्धा

विदेशों में डाक्टर इसका उपयोग कर अपने रोगी को निर्देशित कर देते हैं कि वह उनकी अनुपस्थिति में भी कैसे रहेगा, दवाइयां कब-कब खाएगा, भोजन आदि कैसे लेगा। एक प्रकार से उसके अन्दर सब टेप सा कर दिया जाता है जो स्वत: ही बज कर निर्देशित करता रहता है।

प्रत्येक साधना के मूल में श्रद्धा ही सफलता की कुंजी है। यह श्रद्धा हमें अपनी साधना के प्रति, अपने गुरुदेव के प्रति, और स्वयं के प्रति होनी चाहिए। इस प्रकार से एक पूरा चक्र बन उठता है। जाने-अनजाने में हमारे शरीर और मस्तिष्क में श्रद्धा से ऐसे तन्तु जुड़ उठते हैं जो साधना में सिद्धि का आधार बन जाते हैं। साधना क्या है? शरीर का एक विकास ही तो! सम्मोहन के प्रति भी यही बात पूर्ण रूप से व्यवहत होती है यदि हम इस भावना से सम्मोहन ज्ञान प्राप्ति में हों कि यह सब प्रभु की ही अनन्त शक्तियां हैं, जिसका बस एक अंश में अपने शरीर में जागृत कर रहा हूं तो आप पाएंगे कि मार्ग बहुत सहज हो उठा है। घमन्ड हमारी आन्तरिकता को भंग कर देता है। हमारी एकाग्रता भंग न हो और सदैव मन में विनम्र भाव बना रहे इसके लिए आवश्यक है कि आपका अवश्य ही कोई इष्ट हों जिन्हें आप अपने सब कर्म अर्पित कर सहज बन सकें। होता तो यह है कि हम सहज भाव धारण करने के नाम पर और अधिक ईर्ष्यालू और अधिक घमण्डी बन बैठे हैं। हमारे पूर्वजों ने अपने इष्ट की मानस पूजा का विधान रचा था। यद्यपि वह उनका ऐकान्तिक चिन्तन था और उनकी भावभूमि अलग थी किन्तु उसी पद्धति को हम अपने जीवन में अपनाएं तो पाएंगे कि हमारा मन मस्तिष्क शान्त और एकाग्र हो उठा है। इस मानस पूजन में कोई बाह्य सामग्री आवश्यक नहीं होती। एक मात्र अपने इष्ट का बिम्ब अपनी आंखें के सामने रख उन्हें हृदय पूर्वक पुष्प, सुगन्ध, नैवेद्य इत्यादि उपचार समर्पित करने होते है, और कालान्तर में यही हमारी एकाग्रता को पुष्ट कर जाता है।

मानस पूजा की श्रेष्ठता में जब व्यक्ति अपने इष्ट को मानसिक रूप से अगरबत्ती भेंट करता है तो उसके कमरे में सचमुच अगरबत्ती की सुगन्ध सी भर उठती है एवं पुष्प-अर्पण करते समय फूलों की सुगन्ध व्याप्त हो जाती है।

अन्त में तो इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि सम्मोहन विज्ञान, आधुनिक विज्ञान के मापदन्डों के अनुसार भी एक निश्चित विज्ञान है। व्यक्ति थोड़े से प्रयास से कुछ निश्चित प्रक्रियाएं अपना कर सफलता प्राप्त कर सकता है। यह कोई ईश्वर प्रदत्त गुण नहीं है। कोई भी व्यक्ति क्रमश: विकास कर कुशल सम्मोहन कर्ता बन सकता है। केवल उसे प्रयासों में सघनता लानी होगी और भारतीय साधना-विज्ञान के जो नियम हैं, उनकी परिपालना करनी होगी।

दीक्षा

केवल एक प्रथा ही नहीं

साधकों के अनुभव

पहाड़ों से जब कहीं कोई छोटा झरना निकलता है तो उसमें तीव्र प्रवाह नहीं होता, कभी किसी झुरमुट में अटक गया, कभी कहीं किसी चट्टान के पीछे फंस गया, घिसट-घिसट कर, रिस-रिस कर टपक-टपक कर वह व्यथित सा चलता रहता है, किसी नदी के प्रवाह में मिलने के लिये कि उसे गति मिल सके।

मानव जीवन की भी ठीक यही नियति है, किसी मद्धिम स्रोत से उत्पन्न हुए और घिसट-घिसट कर चलने की मजबूरी का निर्वाह करने लगे, झरने को तो तब भी शायद प्रतीक्षा रहती है किसी बड़े झरने की, किसी नदी की, किन्तु मानव जीवन तो इतना अधिक बंधा होता है कि वह मिलना भी भूल जाता है। उसे याद दिलाना पड़ता है कि तुम्हारा धर्म है बहना, तुम बहो। जीवन में इस बहने की याद दिलाने वाले होते हैं गुरुदेव, और जिस क्रिया से वे झकझोरते हैं वह क्रिया होती है दीक्षा।

यदि हम आप पर प्रभाव डालना चाहें तो संस्कृत का कोई जटिल सा श्लोक बता सकते हैं, कोई गूढ़ सी परिभाषा दे सकते हैं। वे उपमायें अधूरी है। वे परिभाषायें व्यर्थ हैं। मानव में अपराध बोध जाग्रत करने की क्रियायें हैं अपनी विद्वता को, अपनी अहंमन्यता को दिखाने की क्रियायें हैं। प्रकारान्तर से कहना है कि हम कितने श्रेष्ठ, तुम सब कितने मूर्ख और पतित!

इसके विपरीत जो गुरु हैं वे प्रतीक हैं परिवर्तन के बंधेपन से मुक्त कर प्रवाह और स्वच्छता देने के। उनके पास क्रियायें हैं पत्थरों को हटाने की, झाड़ फूंस को साफ करने की। जिससे फिर आपका जीवन जल कहीं अटके नहीं, फिर कहीं फंसकर सूखे नहीं।

दीक्षा प्राप्त करना अपने आप में कोई जटिल प्रक्रिया नहीं है। यह तो एक छोटी सी तैयारी है। एक नन्हा सा दीपक एक बड़े दीपक के पास थोड़ा सा सरक जाये। सरकने का अर्थ है अपने अहम् को त्यागना और सम्पूर्ण यात्रा अपने ही अन्दर तो है।

भारतीय ज्ञान-विज्ञान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में सम्पूर्ण है। उसे केवल बोध होना है यह ज्ञान अर्जन की क्रिया नहीं है ज्ञान को खरीदने की बात तो कतई नहीं। जो इस अहम् में हो कि हम सेवा के माध्यम से सब कुछ प्राप्त कर लेंगे सो ऐसा भी नहीं। यह तो पूज्य गुरुदेव की बात है उनके रीझाने की बात है कि कब वे आपसे किसी बात पर रीझ जायें और कुछ दें डालें। दीक्षा शास्त्र की एक पद्धति नहीं पूज्य गुरुदेव के प्राणों का मन्थन है और उस विषय में वे परम स्वतंत्र है। यदि यह केवल ज्ञान प्राप्त करने की बात होती तो पुस्तकों से भी प्राप्त हो सकती थी लेकिन आध्यात्मिक जगत में पुस्तकों से कुछ घटित नहीं होता। वे तो बस एक इंगित कर मौन हो जाती हैं। वस्तुतः इनका इंगित गुरु की ही ओर होता है।

> *चिन्ता मत करो, तुम्हारे जीवन का जो अभिष्ट लक्ष्य है, वह इसी जीवन में पूरा हो जायेगा, क्योंकि तुम्हारे पास एक दिव्य पथ है, जाग्रत और चैतन्य गुरु है, और दिशा दृष्टि स्पष्ट है–*
>
> *गुरु सूत्र*

इसके विपरीत जो गुरु हैं वे प्रतीक हैं परिवर्तन के बंधेपन से मुक्त कर प्रवाह और स्वच्छता देने के। उनके पास क्रियायें हैं पत्थरों को हटाने की, झाड़ फूंस को साफ करने की, जिससे फिर आपका जीवन-जल कहीं अटके नहीं, फिर कहीं फंसकर सूखे नहीं।

शिष्य, साधक या ज्ञान प्राप्ति के इच्छुक व्यक्ति को यह करना होता है कि वह अपनी पात्रता को स्पष्ट कर दे। अपने को खाली बनाकर गुरु के समक्ष प्रस्तुत कर दें। आगे का कार्य गुरुदेव का है। हमारे देश में गुरु-पद को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। उन्हें तीनों देवों से ऊपर बताया गया है। क्योंकि उनका कोई हेतु नहीं है, क्योंकि वे अपने हृदय के प्रेम रस में सबको डुबो देने के लिये आतुर हैं, उनका लक्ष्य केवल आध्यात्मिक उन्नति, साधनाओं में उन्नति की आशा ही नहीं की जा सकती। काल क्रम में हुए किसी व्यक्तिक्रम के कारण हम यह बात भूल बैठे, समाज भक्ति में डूब गया। *अपनी प्राचीन मान्यताओं के पुनः स्थापन का ही प्रयास है पूज्य गुरुदेव द्वारा विभिन्न प्रकार की दीक्षायें* जन सामान्य के सामने स्पष्ट कर और उन्हें पूर्णता से प्रदान कर।

यूं तो हमारे शास्त्रों में १०८ दीक्षायें प्रमुखता से वर्णित की गई हैं। १०८ दीक्षायें

> **गुरुः सत्यं गुरुः शास्त्रं गुरुर्वेदो गुरुर्गतिः।**
> **गुरुरेव महत् सर्व तस्मै श्री गुरवे नमः।।**
>
> ***गुरु ही सत्य हैं गुरु ही शास्त्र हैं गुरु ही वेद हैं और गुरु से ही गति प्राप्त हो सकती है, सही अर्थों में तो गुरु ही सब कुछ होते हैं इसी लिए सभी देवताओं को प्रणाम करने से पूर्व मैं अपने गुरु को प्रणाम करता हूँ।***

सफलता या मुक्ति दिलाना ही नहीं, वे तो सम्पूर्ण जीवन की शैली सिखाना चाहते हैं। भौतिक परिपूर्णता न मिली तो तृष्णायें रह जायेंगी और तृष्णाओं की उपस्थिति में तो किसी

जीवन का सौभाग्य हैं किन्तु सामान्य रूप से प्रत्येक व्यक्ति १०८ दीक्षायें सम्भवतः नहीं ले सकता। इसके लिये एक संक्षिप्त क्रम का भी विधान है जिसमें केवल ८ दीक्षाओं के माध्यम से भी जीवन की कुछ पूर्णता प्राप्त की जा सकती है।

अनेक सजग पाठकों ने पिछले दिनों इन दीक्षाओं को प्राप्त किया और लाभान्वित हुए। इन दीक्षाओं को प्राप्त करने के बाद उनकी शारीरिक, आर्थिक और साधनात्मक स्थिति में क्या परिवर्तन हुए, इस विषय में हमने सर्वेक्षण किया। उन्हीं में से कुछ अनुभवों को यहाँ प्रस्तुत करते हुए हमें हर्ष हो रहा है पूज्य गुरुदेव के तो सन्यस्त और गृहस्थ दोनों ही प्रकार के शिष्य हैं और वे दोनों को उनकी स्थितियों के अनुरूप गतिशील रखे हैं।

साधकों के अनुभव

असाध्य रोगों का उपचार

कई वर्ष पूर्व पटना में अपने सन्यस्त जीवन के दिनों में पूज्य गुरुदेव एक गृहस्थ शिष्य मुकुन्द बाबू के यहां गये थे। मुकुन्द बाबू पेशे से डाक्टर थे और अपने व्यस्ततम जीवन में से भी समय निकालकर प्रातः **"निखिलेश्वरानंद स्तवन"** का पाठ नियम पूर्वक करते थे। विडम्बना यह थी कि उनकी दस ग्यारह वर्ष की लड़की पोलियो से ग्रस्त थी जिसका कोई उपचार सम्भव नहीं हो पाया था। वह बच्ची अत्यन्त भोली और सुन्दर थी जिससे उसका कष्ट देखकर सामने वाले को भी बड़ी वेदना होती थी उस बच्ची की भी इच्छा होती थी कि पूज्य गुरुदेव को अपने हाथ से शर्बत बनाकर पिलायें खाना खिलायें, किन्तु वह लाचार थी।

> **आप भी अपने सौभाग्य को इन दीक्षाओं के द्वारा मूर्तरूप दे कर अद्वितीय और चैतन्य युक्त बन सकते है, और अपनी जीवन की बाधाओं से मुक्ति प्राप्त कर सकते है।**

एक दिन की बात थी पूज्य गुरुदेव ने

डाक्टर मुकुन्द से पूछा कि तुम्हारे एलोपैथिक में कोई उपचार नहीं है? डाक्टर साहब ने निराशा से सिर इन्कार में हिला दिया। पूज्य गुरुदेव ने पुनः पूछा क्या तुमने आयुर्वेद का कोई उपचार आजमाया। डॉक्टर साहब ने इसका भी उत्तर नहीं में दिया। तब पूज्य गुरुदेव ने एक चादर मंगवायी और उसे ओढ़कर लेट गये। उन्होंने कहा मेरा शरीर ताप से जलने भी लगे तो चिन्ता मत करना, मैं दो-ढाई घंटों में ठीक हो जाऊंगा। उन्होंने कमर तक चादर ओढ़ ली और पांव घुटनों-घुटनों तक खुले छोड़ दिये। थोड़ी देर में हमने देखा कि उनका शरीर अत्यधिक गरम हो रहा है, इतना अधिक गर्म कि हम पास बैठे शिष्यों को भी दाहकता अनुभव हो रही थी। आश्चर्य की बात तो यह थी कि गुरुदेव के दोनों पैर कमजोर होते जा रहे थे, और थोड़ी देर बाद लगभग सूख से गये। उधार डॉक्टर साहब की पुत्री पद्मा के दोनों पैरों में कंपन होने लगा, और उसने आधे घंटे के बाद ऐसा महसूस किया कि वह चल-फिर भी सकती है। उसने आवाज देकर अपने पिता को बुलाया और उनका सहारा लेकर हल्के से लड़खड़ाते हुए चलने लगी। वह आश्चर्य और खुशी से चीख सी पड़ी। उधर पूज्य गुरुदेव की दोनों टांगों में धीरे-धीरे पुनः पुष्टता आने लगी और दो घंटे बाद वे पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर उठ बैठे। पूज्य गुरुदेव ने बताया वे इस कठिन क्रिया को करने के इच्छुक नहीं थे क्योंकि यह अत्यन्त दुरूह क्रिया है जिसे **घुह्यस विद्या** कहा जाता है। स्पष्ट है कि पूज्य गुरुदेव ने तत्क्षण उसे इस विद्या से संबंधित रूप से दीक्षित कर उसका कल्याण कर दिया था। पद्मा आज सम्भ्रान्त कुल में विवाहित है और अपने पति तथा पुत्रों के साथ पटना में सुख पूर्वक जीवन यापन कर रही है।

जब उर्वशी बाध्य हुई

पूज्य गुरुदेव के वरिष्ठ शिष्य है-स्वामी निर्वाणानंद जी। ये कैलाश पर्वत के क्षेत्र में आज भी तपस्यारत हैं। पूज्य गुरुदेव जब एक बार भ्रमण करते हुए उस क्षेत्र में गये तो स्वामी जी के हर्ष का कोई ठिकाना नहीं रहा। पूज्य गुरुदेव ने उनसे पूछा तुम्हें यहां कोई तकलीफ तो नहीं है। स्वामी जी ने हाथ जोड़ कर उत्तर दिया। "आपकी कृपा से साधनाएं तो ठीक चल रही हैं, और कोई तकलीफ भी नहीं है, परन्तु कभी कभी तो यहां बिलकुल अकेलापन अनुभव होता है। मीलों तक किसी का चेहरा भी देखने को नहीं मिलता।''

उस दिन गुरुदेव विनोद की मुद्रा में थे। बोले, "तो उर्वशी साधना संपन्न कर ले, वह नित्य यहां नृत्य भी करेगी और भोजन आदि की व्यवस्था भी कर देगी। पर इसके लिये उर्वशी की क्रिया के रूप में साधना संपन्न करनी होगी।''

निर्वाणानंद जी शर्म के मारे चुप हो गये। इस बुढ़ापे में उर्वशी की क्या साधना करनी है? वे कुछ बोले नहीं।

गुरुदेव ने कहा, "पहले यह तीन दिन की साधना संपन्न कर लें बाद में जो तू साधना कर रहा है इसे वापिस नियमित कर लेना। इसमे कोई दोष भी नहीं है।'' यह कहकर उन्हें उर्वशी साधना की विधि समझा दी।

तीन दिन तक निर्वाणानन्द जी ने उर्वशी साधना संपन्न की। चौथे दिन लगभग चार बजे जब साधना समाप्त हुई तो हमने देखा कि आकाश में हल्के-हल्के सुरमई बादल छा गये हैं। ठण्डी और सुगन्धित हवा बहने लगी है, और सामने के पेड़ पौधों पर अचानक फूल खिल गये हैं और झूमने लगे हैं। प्रकृति में यह अचानक परिवर्तन देखकर हम आश्चर्यचकित हो ही रहे थे कि तभी "छन्न'' की आवाज सी आई इस घनघोर जंगल में घुंघरुओं की यह आवाज चौंकाने के लिए पर्याप्त थी पर बाद में यह सोचा कि कोई भ्रम हुआ होगा, हम शान्त हो गये और प्रकृति के परिवर्तन को देखने लगे।

तभी एक बीस-बाईस वर्ष की अत्यधिक सुन्दर युवती लाल वस्त्रों में सज्जित शून्य में से उतरकर उस शिला पर अवतरित हुई। उसने नखशिख श्रृंगार कर रखा था। वेणी गुंथी हुई, ललाट पर सुन्दर गोल बिन्दी, कानों में आभूषण और सारा शरीर आकर्षक सांचे में ढला हुआ। ऐसा लग रहा था कि जैसे विधाता ने बहुत ही फुर्सत के क्षणों में इस सौन्दर्यवती का निर्माण किया होगा।

हम अभी आश्चर्य से उबर ही नहीं पाये थे कि उसके शरीर से सुगन्ध सी प्रवाहित होने लगी। यह ऐसी सुगन्ध थी कि देवता भी कामातुर बनने लगे। अत्यधिक संयमित और संयत जीवन बिताने के बावजूद उस समय मन में काम भावना का स्फुरण होने लग गया। फिर भी मैंने दिव्य मंत्र से अपने-आप को आबद्ध किया और देखा तो वह सुन्दरी एकटक निर्वाणानन्द जी को ताक रही है।

यह स्थिति लगभग पांच-सात मिनट रही। मैं निर्वाणानन्द के मन में उठते हुए तूफान और भावनाओं को समझ रहा था। वह अपने-आप में संघर्ष कर रहे थें, पर इस संघर्ष में कौन विजयी होगा, कुछ सोचा नहीं जा सकता था। तभी वह युवती अपने स्थान से आगे बढ़ी और निर्वाणानन्द के पास आकर सटकर बैठ गई।

निर्वाणानन्द को ऐसा लगा जैसे एक हजार बिच्छुओं ने एक साथ डंक मार दिया हो। वे वहां से उछलकर खड़े हो गये और लगभग दस-पन्द्रह कदम दूर खड़े होकर बोले, "तू कौन है ? यहां क्यों आयी है ?''

वह कोमलांगी अपने स्थान से उठी और निर्वाणानन्द के पास जाकर खड़ी हो गई। बोली, "आपने ही साधना कर मुझे बुलाया है, और फिर आप अनजान बन रहे हैं कि मैं कौन हूं और क्यों आई हूँ ? मैं तो अब आपके साथ ही रहने के लिए मंत्रबद्ध हूँ।''

आगे फिर सुन्दरी ने कहा, "मेरा नाम उर्वशी है, और आपके इस साधना से मैं क्रिया रूप से उपस्थित हुई हूँ। जब तक आप चाहेंगे मैं आपके पास रहने के लिए बाध्य हूँ। यह बात भी सही है कि आपकी आज्ञा स्वीकार्य होगी।''

निर्वाणानन्द की सांस में सांस आई, बोले "आप सामने बैठ जायें और मेरा स्पर्श न करें।"

उर्वशी गम्भीर गज गति से आगे बढ़ती हुई हमसे तीन-चार कदम दूर सामने बैठ गई। ऊपर चन्द्रमा की चांदनी थी। वह शुद्ध श्वेत शिला दैदीप्यमान थी। हम दोनों बैठे हुए थे और सामने ही उर्वशी अपनी विविध रोचक वार्ता से हम दोनों को प्रसन्न करने का प्रयत्न कर रही थी। कुछ समय बाद उसने सुन्दर लघु नृत्य भी प्रस्तुत किया।

प्रातः काल लगभग पांच बजे उर्वशी ने कहा, "मैं जा रही हूँ और पुनः मध्याह्न में आपकी सेवा में उपस्थिति होऊंगी। वह अदृश्य हो गई तभी एक तरफ से गुरुदेव आते हुए दिखाई दिये। निर्वाणानन्द बोले-गुरुदेव यह क्या हो गया! इससे तो वह एकान्त लाख दर्जे अच्छा था। यह माया हटाइये, मैं ऐसा कुछ नहीं चाहता"।

काली साधना

पूज्य गुरुदेव ने उत्तर दिया, "यह तो होना ही था, क्योंकि मैंने विशिष्ट क्रियाओं एवं दीक्षाओं को समाहित करके मंत्र जो प्रदान किया था, किन्तु इस प्रकार घबराने से काम कैसे चलेगा। वह नित्य दोपहर में १०-१५ मिनिट के लिए अवश्य आयेगी और भोजन सामग्री देने के बाद वापिस चली जायेगी।"

पूज्य गुरुदेव के जो अन्तरंग शिष्य है और जिन्होंने उनके साथ भारत के विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया, वे जानते हैं कि यमुनोत्री से वासुकी के बीच में एक काली मंदिर है जो सिद्धचैतन्य पीठ है। पूज्य गुरुदेव अपने संन्यास जीवन में इस स्थान पर भी गये थे। काली की चर्चा चलने पर पूज्य गुरूदेव ने मां काली के ५१ भेद बताये थे, मगर इनमें भी आठ रूप मुख्य है-

(१) दक्षिण काली (२) स्पर्शमणि काली (३) संततिप्रदा काली (४) सिद्धि काली (५) चिन्तामणि काली (६) कामकला काली (७) हंस काली (८) गुह्य काली।

हमारे साथ मुजफ्फर नगर के एक श्रेष्ठ साधक भी थे जो महाकाली के अनन्य उपासक थे। वे वर्षों से काली साधना कर रहे थे किन्तु अपेक्षित सफलता एवं मां काली के दर्शन सुलभ नहीं हो सके थे। पूज्य गुरुदेव से उन्होंने जानना चाहा, गुरुदेव इनका नाम काली क्यों पड़ा? पूज्य गुरुदेव ने उत्तर दिया निर्वाणतंत्र में इसकी व्याख्या इस प्रकार की गई -

दक्षिणास्यां दिशि स्थाने संस्थितस्य खे सुतः।

काली सनाम्ना पलायेत भीति युक्त समन्ततः।।

अतः सा दक्षिणा काली त्रिषुलोकेषु गीयते।

"दक्षिण दिशा में रहने वाले सूर्यपुत्र यमराज काली का नाम सुनते ही डरकर भाग जाते हैं। फलस्वरूप कालीभक्त यमराज के चंगुल में नहीं फंसते। इसलिये काली को तीनों लोकों में "दक्षिणकाली" कहते हैं।"

पूज्य गुरुदेव ने उनके विशेष आग्रह पर उन्हें **"महाकाली दीक्षा"** दी। इसके उपरान्त उन्हें वह विशिष्ट गोपनीय मंत्र दिया जो केवल गुरुमुख से ही ज्ञात हो सकता हैं। पूज्य गुरुदेव के कहने पर उन्होंने उस मंत्र को उसी सिद्ध पीठ पर जप किया एवं इसकी समाप्ति पर उन्होंने मां काली के जाज्वल्यमान दर्शन प्राप्त किये। इस साधना को करने के उपरान्त जहां वे अपना अभीष्ट प्राप्त कर सके वहीं उन्हें कुछ विशिष्ट सिद्धियां भी प्राप्त हुई। महाकाली की साधना करने के उपरान्त साधक के शरीर में रोग या अशक्तता तो रह ही नहीं सकती। ये वाक् सिद्धि का ही दूसरा रूप है, इसे ही संपन्न कर कालीदास, कालीदास हुए। इसे सिद्ध करने वाले साधक को वरदान देने या श्राप देने की शक्ति पूर्णता से मिल जाती है।

दीक्षा केवल आध्यात्मिक जगत् की ही विषय वस्तु नहीं। जो सक्षम और समर्थ गुरु होते हैं वे अपने शिष्य को विभिन्न दीक्षाओं के माध्यम से भोग और योग दोनों ही पक्षों की पूर्णता प्रदान करते हैं।

उर्वशी - सिद्धि

उर्वशी अप्सरा की सिद्ध करना, प्रत्यक्ष करना प्रमिका के रूप में सहचरी बनाना एवं उसके द्वारा प्रदत्त धन, ऐश्वर्य का योग करना शास्त्र सम्मत है।

इसका एक प्रयोग इस प्रकार है

"शुक्रवार की अर्द्धरात्रि को अपने सामने" सिद्ध उर्वशी यंत्र" की सामने रख कर अगली पांच रात्रि नित्य इक्कीस माला मंत्र जप करे तो उर्वशी प्रत्यक्ष सिद्ध होती है

मंत्र है-- ॐ ऋं सुन्दर्यै उर्वश्यै फट्"

अमर कंटक

मध्य प्रदेश का अद्वितीय हिल स्टेशन, मार्कण्डेय की तपस्यास्थली,

नर्मदा नदी का उद्‌गम स्थल और ललिताम्बा शक्तिपीठ के सुरम्य स्थल पर

६-७ जून १९९३ को विशाल एवं भव्य

महालक्ष्मी भुवनेश्वरी साधना शिविर

(आकस्मिक लक्ष्मी साधना युक्त)

पूज्यपाद गुरुदेव

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी

के

सान्निध्य में

सम्पूर्ण भारत वर्ष के शिष्यों-साधकों एवं सन्यासियों को

हम मध्यप्रदेश सिद्धाश्रम साधक परिवार के सदस्य आमंत्रित करते हैं।

यात्रा निर्देश - दिल्ली से सीधी ट्रेन "उत्कल एक्सप्रेस या सम्बलपुर एक्सप्रेस'' से 'पेंड्रा रोड'' स्टेशन पर उतरें, वहां से मात्र ४५ किलोमीटर दूर बस सुविधा। वायुयान से रायपुर उतरें, वहां से २०० किलोमीटर बस सुविधा

शिविर शुल्क - मात्र ३००/- रुपये

इस शिविर में प्रत्येक साधक को पूज्यपाद गुरुदेव भुवनेश्वरी दीक्षा एवं शक्तिपात प्रदान करेंगे और होगा ग्यारह किलो पारद महालक्ष्मी का जाज्वल्यमान पूजन अर्चन एवं स्थापन।

विशेष जानकारी के लिए

श्री सुब्बाराव - ०७५५-५४९२८

एस.के. दुबे - ०७७१ - ४२७३५६

के.आर. कुर्रे - ०७७१ - ५३३४७

सम्पर्क करें - दिल्ली - ०११ - ७१८२२४८

बम्बई से आने वाले गीतांजली ट्रेन से बिलासपुर उतर कर कटनी लाइन पर ट्रेन से पेंड्रा रोड उतर कर आयें।

गुरु-पूर्णिमा ९३

जीवन का सौभाग्य, पूज्य गुरुदेव से सब कुछ सर्वस्व प्राप्त करने का अनुपम अवसर,
शिष्यों के लिए जीवित जाग्रत चैतन्य महोत्सव

गुरु - पूर्णिमा

१-२-३ जुलाई ९३

पानीपत (हरियाणा)

में

भव्यता के साथ सम्पन्न होगी

वीर वैताल साधना युक्त

ऋण मुक्ति, दरिद्रता विनाशक, पूर्णता प्रदायक

त्रिभुवन मोहिनी भगवती महालक्ष्मी साधना

आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोगयुक्त

और इसमें महोत्सव होंगे

☆ सम्पूर्ण रुपेण पूज्यपाद गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द सिद्धि प्रयोग

☆☆ कुण्डलिनी जागरण एवं चैतन्य दीक्षा

☆☆☆ तांत्रोक्त पूर्ण लक्ष्मी सिद्धि प्रयोग

☆☆☆☆ चमत्कारिक वीर वैताल सिद्धि प्रयोग और होगा

ग्यारह किलो की पारद महालक्ष्मी पूजा

यात्रा निर्देश - दिल्ली से मात्र ८० किलोमीटर दूर, दिल्ली से कई बस एवं रेल सुविधा

सम्पर्क - सत्यवीर सक्सेना, बस स्टैण्ड के पास, पानीपत

शिविर शुल्क - मात्र - ६६०/- रुपये (सुस्वाद भोजन एवं सुखद आवासयुक्त)

टेलीफोन : विशेष जानकारी हेतु - पानीपत - ०१७४२ - २३८१८

सम्पूर्ण भारतवर्ष में फैले शिष्यों का जबरदस्त आग्रह

विज्ञापन

हमने अभी तक यह नीति रखी थी, कि पत्रिका में विज्ञापन प्रकाशित न किये जाय, पर पिछले तीन-चार महीनों से व्यवसायी शिष्यों का प्रबल आग्रह रहा है, कि उनके विज्ञापन पत्रिका में प्रकाशित हों

उनके आग्रह को स्वीकार करते हुए हम सभी व्यापारी व्यवसायी शिष्यों एवं जन साधारण को इस पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए आमंत्रित करते हैं, इसका प्रारंभ जुलाई में प्रकाशित होने वाले "सदगुरु विशेषांक" से कर रहे है।

- पर हम चमत्कार, घटिया या ओछे विज्ञापन प्रकाशित नहीं करेंगे।
- साथ ही पत्रिका से संबंधित शिष्यों के विज्ञापनों को प्राथमिकता देंगे।

इस समय मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" पत्रिका के पाठक १०,०००,०० दस लाख से भी ज्यादा है।

विज्ञापन दरें

पूरा पृष्ठ	५,०००/-
आधा पृष्ठ	२,६००/-
चौथाई पृष्ठ	१,४००/-
कवर का दूसरा पूरा पृष्ठ (रंगीन)	१२,०००/-
कवर का दूसरा आधा पृष्ठ (रंगीन)	७,०००/-
कवर का दूसरा चौथाई पृष्ठ (रंगीन)	४,०००/-
कवर का तीसरा पूरा पृष्ठ (रंगीन)	१०,०००/-
कवर का तीसरा आधा पृष्ठ (रंगीन)	६,०००/-
कवर का तीसरा चौथाई पृष्ठ (रंगीन)	३,५००/-
कवर का अंतिम पूरा पृष्ठ (रंगीन)	२०,०००/-
कवर का अंतिम आधा पृष्ठ (रंगीन)	११,०००/-
कवर का अंतिम चौथाई पृष्ठ (रंगीन)	६,०००/-

धनराशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा जो दिल्ली में देय हो-भेजें।
चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। बैंक ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो,
जो "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" के नाम से बना हो।

विशेष जानकारी के लिए **-विज्ञापन अधिकारी - मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान-**

३०६ कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४ से सम्पर्क स्थापित करें।
टेलीफोन - ०११-७१८२२४८

इसके अतिरिक्त भी सम्पर्क कर सकते हैं-

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - ३४२००१
टेलीफोन-०२९१-३२२०९

शरीर के सरोवर में खिल उठा कमल

इसी शरीर के सरोवर में खिलेंगे छह कमल, जिसमें आनंद से किलोल कर उठेगा आपके मन का हंस और मोती चुनेगा प्रेम का ......
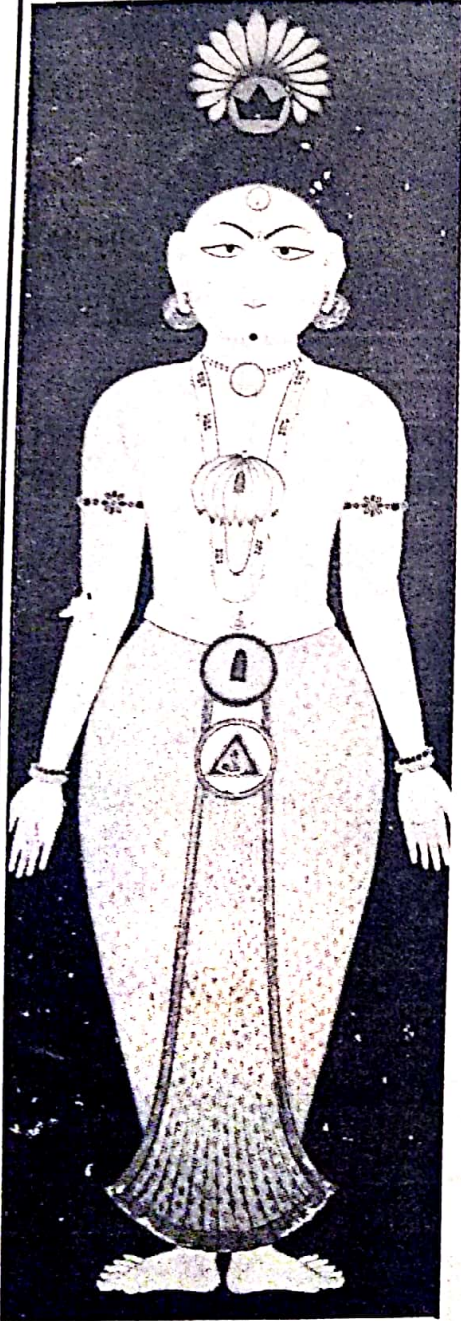
भारतीय दर्शन शास्त्र के अनुसार मनुष्य का जो शरीर हमें दृष्टिगोचर होता है वह मात्र स्थूल शरीर ही है। इसके अतिरिक्त छः शरीर और भी हैं और इन सातों शरीरों से ही मानव का निर्माण हुआ है। कुण्डलिनी एवं इसके चक्रों को समझने के लिए इन सातों शरीरों का ज्ञान होना अनिवार्य है। ये सात शरीर, कुण्डलिनी यात्रा के सात चक्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रथम शरीर है - स्थूल शरीर जिससे हम सभी परिचित है और उससे पीछे तीसरा शरीर या सूक्ष्म शरीर है। चौथा शरीर इसके अंदर है जिसे मनस् शरीर कहा गया है। इसके भीतर पांचवे शरीर या आत्मिक शरीर का स्थान है। छठवां शरीर जो उसके भी पीछे है उसे ब्रह्म शरीर कहते हैं। सबसे अंत में सातवां शरीर आता है जिसे निर्वाण शरीर कहा गया है।

मनस् शरीर अर्थात् मानव व्यक्तित्व के चौथे शरीर में अवस्थित ये चक्र मानव रचना के प्रमुख प्रसारक एवं नियंत्रक केन्द्र हैं जिनका सीधा सम्बंध प्रमुख नाड़ी संस्थानों एवं नियंत्रक केन्द्रों से है। इन चक्रों की संख्या भी सात ही है और प्रत्येक चक्र मनुष्य के शरीर से विशेष रूप से जुड़ा हुआ है। चूंकि कुण्डलिनी की भांति ये चक्र भी स्थूल शरीर से परे किसी अन्य शरीर पर हैं अतः चिकित्सा विज्ञानी को ये दृष्टिगत नहीं हो सकते परन्तु इन चक्रों से मेल खाने वाले बिन्दुओं का पता स्थूल शरीर पर लगाया जा सकता है। स्थूल शरीर में ये बिन्दु नाड़ी गुच्छक के रूप में हैं जो सुषुम्ना से निकलने के बाद मेरूदण्ड की केशरूकाओं के छिद्रों के माध्यम से बाहर आते हैं। ये चक्र भौतिक शरीर के जिन अंगों के सामने मेरूदण्ड में छिपे हुए हैं, उन्हीं अंगो के नाम से जाने जाते हैं।

मेरूदण्ड को मानव शरीर का आधार कहा जा सकता है। यह भीतर से खोखला होता है। इसके बायें पार्श्व में इड़ा एवं दाहिने पार्श्व में पिंगला नामक दो नाड़ियां हैं। मेरूदण्ड के मध्य में त्रिगुणात्मक स्वरूप सुषुम्ना नाड़ी स्थित है जिसके भीतर क्रमशः वज्रा, चित्रिणी एवं ब्रह्मनाड़ी की स्थिति है।

मनस् शरीर के छः चक्रों की कल्पना इसी ब्रह्मनाड़ी में पिरोये हुए छः कमलों के रूप में की गयी है। मुमुक्षु साधक आत्मकल्याण की भावना से अपनी सुषुप्त कुण्डलिनी शक्ति को ब्रह्मनाड़ी के द्वारा ऊर्ध्वगामी करके षट्चक्र भेदन द्वारा सहस्रार में प्रवेश करने का प्रयत्न करता है। यहां यह ज्ञान होना आवश्यक है कि मात्र ध्यानावस्था में जाने पर ही साधक अपने दिव्य नेत्र के माध्यम से, इन चक्रों के कमलवत् स्वरूप के दर्शन कर सकता है तथा इनके इष्ट देवों से साक्षात्कार कर सकता है। इन चक्रों

का संक्षिप्त विवरण आगे की पंक्तियों में प्रस्तुत है -

१. **मूलाधार चक्र** : यह भौतिक शरीर का केन्द्र है। मेरूदण्ड के सबसे नीचे के भाग में 'कन्द' प्रदेश से लगे गुदा एवं लिंग के मध्य में इस चक्र की स्थिति मानी गयी है। इसका यंत्र पृथ्वी तत्व का द्योतक एवं चतुष्कोणीय है। यंत्र के मध्य में स्वयम्भू लिंग स्थित है जिसके चारों ओर लिपटी हुई सुप्त कुण्डलिनी शक्ति विराजमान है। यह चतुर्दल पद्म है जो रक्तवर्णी है। इसका बीज मंत्र 'लं' है। इसके देव और शक्ति ब्रह्मा और डाकिनी है। बीज का वाहन ऐरावत हस्ती है। वर्णमाला के अंतिम चार अक्षर वं, शं, षं और सं चारों दलों पर स्थित माने गये हैं।

मूलाधार की प्राथमिक संभावना कामवासना है जो प्रकृति प्रदत्त है। इसकी अंतिम संभावना ब्रह्मचर्य है जो कि साधना का प्रतिफल है।

२. **स्वाधिष्ठान चक्र** : इस चक्र का आकाश शरीर से केन्द्रीय संबंध है। मेरूदण्ड के भीतर इसकी स्थिति लिंग के ठीक पृष्ठ प्रदेश में है। सिंदूर वर्ण का यह षट् दल पद्म है, इन दलों पर छः अक्षर बं, मं, भं, यं, रं, लं प्रकाशित होते हैं। इसका बीज मंत्र 'वं' है जो जल तत्व का प्रतिनिधित्व करता है। इस बीज का वाहन मकर है। इस चक्र के देव एवं शक्ति विष्णु तथा राकिनी है।

इस चक्र की भी दो संभावनाएं है। मूलतः प्रकृति से इसे भय, घृणा, क्रोध व हिंसा की स्थितियां मिलती हैं जिनका रूपान्तरण अभय, प्रेम, क्षमा एवं अंहिसा में करना आवश्यक होता है।

३.मणिपूर चक्र : यह सूक्ष्म शरीर का केन्द्र है। नाभिप्रदेश के सामने मेरूदण्ड के अंदर इसकी स्थिति मानी गयी है। यह नीलवर्णी कमल दस दलों का है जिन पर डं, ढं, णं, तं, थं, दं, धं, नं, पं, फं अक्षर स्थित है। इसका बीज मंत्र 'रं' है जो अग्नितत्व का द्योतक है। बीज का वाहन मेष है। इसके देवता व शक्ति रुद्र एवं लाकिनी है।

मणिपूर चक्र की प्रकृति प्रदत्त सम्भावनाएं सन्देह एवं विचार है। सन्देह का शुद्धतम विकास श्रद्धा को जन्म देता है तथा विचार रूपान्तरित होकर विवेक बन जाता है।

४. **अनाहत चक्र** : यह द्वादश दल पद्म हृदय प्रदेश के सामने स्थित है जिस पर कं, खं, गं, घं, डं, चं, छं, जं, भं, जं, टं, ठं अक्षर सिन्दूरी वर्ण में चमकते हैं। इसका बीज मंत्र 'यं' वायुतत्व का सूचक है। इसका वाहन मृग है। यंत्र के देव व शक्ति, ईशान रूद्र एवं काकिनी हैं।

षट्चक्रों में छः कमल दलों की बात मात्र कल्पना नहीं है, किन्तु व्यक्ति इन्हें ध्यानावस्था में उतर कर ही शुद्ध रूप में देख सकता है। और प्रत्येक से संबंधित देव का भी दर्शन कर सकता है।

इस चक्र का प्राकृतिक रूप कल्पना एवं स्वप्न है जो चरम विकसित होकर संकल्प एवं अतीन्द्रिय - दर्शन में रूपान्तरित हो जाते हैं।

५. **विशुद्ध चक्र** : कण्ठ के मूल में स्थित यह षोडश दल पद्म धूम्र वर्ण का है जिस पर अं से 'अः' तक स्वरों की स्थिति है। इसका बीज मंत्र 'हं' आकाश तत्व का द्योतक है। इसके इष्ट देव अर्धनारीश्वर है तथा शक्ति शाकिनी है।

यह चक्र आत्म शरीर से सम्बन्धित है तथा शुद्धिकरण का केन्द्र है। यह वह स्थान है जहां दिव्य रस अमृत का पान किया जा सकता है।

गोपनीय कुण्डलिनी जागरण मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं ह्रां ह्रीं ह्रं ह्रैं ह्रौं ह्रः जगन्मातः सिद्धिं देहि देहि स्वयम्भू लिंग माश्रितायै विद्युत कोटि प्रभाये महाबुद्धि प्रदाये सहस्त्र दल गामिन्ये स्वाहा।।

यह मंत्र सूर्य के समान तेजस्वी है और जितना भी सम्भव हो सके **कुण्डलिनी यंत्र** के सामने शुद्ध स्फटिक माला से प्रतिदिन एक निश्चित संख्या में जप करते हुये कुल सवा लाख मंत्र जप करे तो निश्चित रूप से कुण्डलिनी जाग्रत हो जाती है।

भारतीय योग शास्त्रों में मानव शरीर में जिन स्थानों पर चक्रों की अवस्थिति बतायी गयी है, आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने भी उन्हीं केन्द्रों पर नाड़ी गुच्छों का समूह पाया है, जो मानव के विभिन्न क्रिया कलापों से घनिष्ट संबंध रखते हैं।

६. **आज्ञा चक्र** : इस चक्र को तृतीय नेत्र, ज्ञान चक्षु, त्रिकुटी, गुरुचक्र या शिव नेत्र भी कहा जाता है। इसका प्रतीक श्वेत वर्णों का द्विदल पद्म है जिन पर 'हं', एवं 'क्षं' स्वर स्थित हैं। यह चक्र भूमध्य के सामने स्थित है। इसके यंत्र का बीज मंत्र प्रणव (ॐ) है एवं वाहन नंदि है इसके इष्ट देव परम शिव एवं शक्ति हाकिनी है। इसका तत्त्व सूक्ष्म मन या मानस् है।

यह चक्र ब्रह्म शरीर का केन्द्र है। परम अस्तित्व को इस छठवें केन्द्र से ही जाना जा सकता है।

७. **सहस्रार** : वस्तुतः यह चक्र नहीं वरन् उच्चतम चेतना का निवास स्थान है जो सहस्र दल वाले चमकीले कमल पुष्प के समान दृष्टिगोचर होता है। यह चक्र सातवें अर्थात् निर्वाण शरीर से सम्बन्धित है। यही वह स्थल है जहां शिव शक्ति का आश्चर्यजनक योग, चेतना का तत्त्व एवं शक्ति से संयोग तथा व्यक्तिगत आत्मा का असीम आत्मा से मिलन होता है। इसके हजार दलों पर बीस बार प्रत्येक स्वर तथा व्यंजन स्थित माने गये हैं।

इसे 'दशम द्वार' या 'ब्रह्मरन्ध्र' भी कहा गया है। यह सूर्य के समान प्रकाशमान है। सही रूप में जीवात्मा का मोक्ष द्वार यही है और विरले योगी ही सहस्रार जागरण में सफल हो सकते हैं।

जून मास के व्रत पर्व त्यौहार

२ जून	ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी वट सावित्री व्रत
४ जून	ज्येष्ठ पूर्णिमा कबीर जयन्ती
६ जून	आषाढ़ कृष्ण द्वितीया सन्यास जयन्ती
७ जून	आषाढ़ कृष्ण तृतीया पाप मोचन तृतीया
१३ जून	आषाढ़ कृष्ण नवमीं सिद्धाश्रम जयन्ती
१५ जून	आषाढ़ कृष्ण एकादशी योगिनी एकादशी
२० जून	आषाढ़ अमावस्या निश्चित सिद्धि दिवस
२१ जून	आषाढ़ शुक्ल द्वितीया जगन्नाथ दिवस
२५ जून	आषाढ़ शुक्ल षष्ठी महावीर स्वामी कल्याण दिवस
२८ जून	आषाढ़ शुक्ल नवमी केतु सिद्धि दिवस
३० जून	आषाढ़ शुक्ल एकादशी देव शयनी एकादशी

सम्मोहन और आपका शरीर

सम्मोहन विज्ञान को मन का विज्ञान कहने के बाद शरीर की बात करना असंगत सा लगता है किंतु स्वस्थ शरीर ही तो स्वस्थ मन का आधार है इस तथ्य से कौन है जो सहमत नहीं होगा?

प्रस्तुत लेख में शरीर को लेकर एक संक्षिप्त विवेचना प्रस्तुत है किंतु बनावटी, उबाऊ और जटिल शास्त्रीय बातों से सर्वथा मुक्त तथा शरीर को तोड़ मरोड़ कर कठिन यौगिक आसनों को करने की धारणा से परे। सर्वथा नवीन तथ्य वर्तमान परिस्थितियों से मेल खाते हुये ....

हम प्रात: उठते हैं। टूथपेस्ट मंजन लगा कर दाँत साफ कर, शौच और स्नान कर अपने दैनिक कार्य पर चले जाते हैं। सुबह की इन कुछ सामान्य सी क्रियाओं को निपटा हम अपने शरीर के प्रति अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं। यहां कर्तव्य शब्द को उल्लिखित करने का निश्चित ध्येय है क्योंकि ईश्वर प्रदत्त इस देह की रक्षा करना, इसको स्वच्छ सबल बनाये रखना हमारे भारतीय जीवन दर्शन में ईश्वर की आराधना ही मानी गई है। उसके उपरांत भी हम अपेक्षा रखते हैं कि लोग हमसे आकर्षित हों, हमारे पास खिंच कर आयें। यह मात्र चिंतन से संभव नहीं होने वाला, इसके लिए तो हमें इस शरीर के विषय में नये ढंग से सोचना होगा और सजाना संवारना होगा। वर्तमान में यौगिक आसनों को लेकर जो धूम मची है वह आज के व्यस्त युग में बेमानी है क्योंकि न तो उनकी जटिलता समझने की किसी के पास फुर्सत है और न जीवन के कीमती घंटे खपाने की। तब फिर हम क्या करें कि अल्प समय में ही अपनी इस देह को सजा सकें उसमें अतिरिक्त निखार ला सकें।

इस मानव शरीर को संवारने के पहले हमें इसे समझना भी होगा। जब हम इसे आंतरिक बल देंगे तो वही बाह्य रूप से सौंदर्य बन कर छलकेगा।

इस मानव शरीर को संवारने के पहले हमें इसे समझना भी होगा और समझ कर जब हम इसे आंतरिक बल देंगे तो वहीं बाह्य रूप से सौंदर्य बन कर छलकेगा। हमारे पूर्वज इसके प्रति पर्याप्त सचेत थे फलस्वरूप उनके पास इस शरीर से कार्य लेने की क्षमता भी कहीं अधिक थी। आज जिसे हम सिद्धि कह और चमत्कार समझ अभिभूत होते हैं वह उनके द्वारा इस शरीर के सहज उपयोग से ही संभव थी। भविष्य ज्ञान, भूत ज्ञान आदि उनके लिए कोई कठिन क्रियायें नहीं थीं।

हमारी परंपरा में इस सम्पूर्ण देह में कुछ केंद्र निर्धारित किये गये जिनके प्रति ध्यान देना दैनिक जीवन का एक आवश्यक अंग ही माना गया। इसके पीछे धारणा यह थी कि हम यदि शरीर के किसी अंग की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं देंगे तो वह शनै:शनै: निष्क्रिय हो जायेगा। इस हेतु प्रतिदिन शरीर के समस्त केंद्रों का कुछ समय चिंतन करने की, उन्हें चैतन्य रखने की व उनमें प्राण शक्ति संचयित करने की परंपरा बनी। जब प्राण शक्ति के संचय की बात आती है तो यह सहज सी जिज्ञासा मन में उठती है कि संचय कैसे और कहां पर? प्राणों का यह

संचय इन्हीं विभिन्न केंद्रों पर किया जाता है। इससे प्रत्येक अंग सबल होकर जहां एक ओर बीमारी, दुर्बलता से मुक्त रहता है वहीं प्राणशक्ति के संचयन से चुम्बकत्व भी बढ़ने लगता है।

शरीर के महत्वपूर्ण केंद्रों की संख्या २६ है। ये इस प्रकार से हैं :

१. पैरों की दोनों तलहटियाँ

२. दोनों पिण्डलियाँ

३. दोनों जंघाएं

४. गुप्तेन्द्रिय

५. नाभि

६. हृदय

७. दोनों फेफड़े

८. दोनों कंधे

९. दाहिना हाथ, भुजा, पंजा

१०. बायाँ हाथ, भुजा व पंजा

११. दोनों आंखें

१२. दोनों कान

१३. मुख

१४. नाक

१५. भृकुटि

इनके चिंतन का क्रम भी यही है जो उपरोक्त रूप से दिया है। इस हेतु अर्थात् इनको चैतन्यता देने हेतु आपको कोई विशेष तैयारी नहीं करनी है। आपको केवल सर्वप्रथम शवासन में चले जाना है और कुछ समय तक उसी अवस्था में रहने के बाद धीरे धीरे श्वास प्रश्वास लेते हुए उपरोक्त क्रम से अर्थात तलहटी से आरम्भ करके क्रमशः भृकुटी तक आना है। भावना करनी है कि इनमें बल संचार हो रहा है। प्रारम्भ में कुछ कठिनाई हो सकती है क्योंकि बाह्य मन और अन्तर्मन एक न होने से मन केंद्र पर टिकता नहीं या क्रम गलत हो जाता है या क्रम भूल जाता है किंतु ऐसी स्थितियां नहीं जिन पर सहजता से काबू न पाया जा सके। शरीर का उपरोक्त ढंग से चिंतन करने के बाद विलोम क्रम भी करना आवश्यक होता है अर्थात् भृकुटी से आरम्भ कर तलहटियों तक आना होता है तब एक चक्र पूर्ण होता है। इस अभ्यास को तभी करना उचित रहता है जब आपके मन में हड़बड़ी न हो तथा वातावरण शांत हो।

योग अष्टक

वर्तमान परिपेक्ष्य को ध्यान में रखकर योगीराज स्वामी वासुदेव जी द्वारा खोजी गई यह विधि सर्वाधिक उपयुक्त है क्योंकि इस पद्धति में वर्णित आठ आसनों को करने में दस मिनट से अधिक समय नहीं लगता।

वर्तमान परिपेक्ष्य को ध्यान में रख योगीराज स्वामी वासुदेव जी द्वारा खोजी गयी विधि जिसे उन्होंने योग अष्टक की संज्ञा दी है, सर्वाधिक उपयुक्त है क्योंकि उसमें वर्णित आठ यौगिक आसनों को करने में दस मिनट से अधिक समय नहीं लगता और कोई विशेष बंधन भी नहीं होता। इन विधियों से जहां एक ओर शरीर सुडौल आकर्षक होता है वहीं आंतरिक रूप से भी चैतन्यता प्राप्त होती है। कुछ साधकों को तो यहां तक अनुभव हुये हैं कि नियम पूर्वक करने से उनके शरीर से सुगंध आनी आरम्भ हो गयी उनका क्रमबद्ध रूप इस प्रकार है :

इससे प्रत्येक अंग सबल होकर जहाँ एक ओर बीमारी दुर्बलता से मुक्त रहता है वहीं प्राणशक्ति के संचयन से चुम्बकत्व भी बढ़ने लगता है।

१. प्रथम चरण :

दोनों पैर मिलाकर खड़े हो एवं दोनों हाथ सीने पर दबाते हुये (प्रणाम मुद्रा में) नेत्र बंद कर मन को एकाग्र करें।

इससे मन की एकाग्रता में सहायता मिलती है तथा वीर्य सिंचित प्रवाहित करने वाली नाड़ी को पर्याप्त बल मिलता है जिससे ओज में वृद्धि होती है।

२. द्वितीय चरण :

सीधे खड़े हो गर्दन को पीछे झुका दोनों नेत्रों के मध्य देखने की चेष्टा करें। यह अपलक तब तक करें जब तक आंखों से पानी न निकलने लगे और दो तीन बार दोहरायें।

इससे नेत्रों को बल तो मिलता ही है साथ ही उनमें कटीलापन आ जाता है जिससे कोई देखने वाला आपको एकटक देखता रह जायेगा। आंखों के नीचे को दाग झुर्रियां भी कुछ ही दिनों के अभ्यास से गायब हो जाती हैं।

३. तृतीय चरण :

सीधे खड़े होकर सिर को तेजी से पीछे एवं आगे फेंके। पीछे फेंकते समय ध्यान रहे कि सिर पीठ से लगे एवं आगे की दशा में ठोड़ी वक्षस्थल से लगे। कुछ देर यह करने के बाद गर्दन को बांये से

दांये एवं फिर दांये से बांये गोल गोल घुमायें। अंत में गर्दन को सीधी तान कर एक दम कड़ा कर तेजी से श्वास प्रश्वास लें।

इस अभ्यास का प्रभाव यह होता है कि सभी नाड़ियों का पुंज गर्दन में होने से एक आंतरिक शुद्धि तो आती ही है साथ ही वाणी की अस्पष्टता, तुतलाहट, पतले पन में भी सुधार हो मिठास आ जाती है।

पंचम चरण : इस क्रिया से जहाँ एक ओर पुरुषों का वक्षस्थल चौड़ा होता है वहीं स्त्रियों के स्तन आकर्षक एवं सुडौल बन जाते हैं।

चतुर्थ चरण :

इसमें सीधे खड़े होकर पहले दोनों हाथों की मुट्ठी बंदकर झटके से आगे फेंके व पीछे फेंकें। कुछ देर करने के बाद दोनों हाथों को सीधा कर मुट्ठी बांध कलाइयों को बांये से दांये घुमायें। इसके पश्चात् उंगलियों को खोलें और जोर से मुट्ठी भींचें।

यह क्रिया हाथों को सौन्दर्य सुडौलता और बल देने में पर्याप्त उपयोगी है।

पंचम चरण :

इस चरण में पहले दोनों हाथों को ऊपर तान कर कमर को पीछे झुकाते हैं तथा फिर दूसरे भाग में गर्दन को पीछे फेंक दोनों हाथों से एड़ियों के पीछे वाले भाग को छूने का प्रयत्न करते हैं।

इस क्रिया से जहां एक ओर पुरुषों का वक्षस्थल चौड़ा होता है वहीं स्त्रियों के स्तन सुडौल एवं आकर्षक बन जाते हैं। हृदय दौर्बल्य, दमा आदि के निवारण हेतु भी यही आसन उपयोगी है।

षष्ठम चरण :

सीधे खड़े हो दोनों हाथ जंघाओं पर जमा जरा सा झुके पहले तो ढेर सी वायु अंदर भर लें फिर उसे निकाल इस स्थिति तक आयें कि पेट पिचक कर गड्ढा सा बन जाये। इसे लगभग पच्चीस तीस बार करें।

इस विधि से पेट की सुडौलता तो मिलती ही है पाचन शक्ति सुधर जाने से चेहरे पर लालिमा आ जाती है। नाभि पर जोर पड़ने से व्यक्ति के अंदर आध्यात्मिक शक्तियों का विकास सहज ही हो उठता है।

सप्तम चरण :

सीधे खड़े हो हाथ पहले पीछे ले जा कर, कमर पर रखे पीछे झुके फिर उसी तरह हाथ जमाये हुये आगे झुक नाक को घुटनों से स्पर्श कराने का प्रयास करें।

इस अभ्यास से कमर की फालतू चर्बी छंट कर शरीर को दर्शनीय तो बनाती है साथ ही वीर्य बल में वृद्धि भी होती है। स्वप्न दोष नपुंसकता, डाईबिटीज, बवासीर जैसे रोगों का निदान भी संभव हो पाता है।

अष्टम चरण :

इस क्रम में सीधे खड़े हो पहले बांये पैर को उछाल कर कमर के समानांतर लायें फिर दांये को। इस क्रिया को कुछ देर लगातार करें।

यह जंघाओं में रक्त संचार की विधि है और उन्हें अतिरिक्त बल देने की प्रक्रिया है। इससे जंघाओं पर जमा चर्बी समाप्त होती है एवं यह विधि घुटनों के दर्द, गठिया में भी पर्याप्त लाभ प्रद सिद्ध हुई है।

इस प्रकार अपने शरीर के प्रति थोड़ा सा सचेत होकर हम सहज ही प्राण संचय करने की श्रेष्ठ दशा बना सकते हैं। जब तक पात्र ही नहीं सबल होगा तब तक उसमें कोई बहुमूल्य पदार्थ रखा भी कैसे जा सकेगा? हमारा आपका शरीर ही वह पात्र है जिसमें हम प्राण संचय कर, चुम्बकत्व भर आकर्षक व सम्मोहनकारी व्यक्तित्व के धनी बन सकते हैं।

अब आप आ गए हैं तो आता नहीं है याद वर्ना हमें आप से कछ कहना जरूर था।
एस.पी.बांगड़

रोग निवारण

"जीवन की श्रेष्ठ दीक्षाओं में से एक है "धन्वन्तरी दीक्षा" जिसका ज्ञान बहुत ही कम योगियों अथवा गुरुओं को है।

धन्वन्तरी तो आरोग्य के 'देवता" हैं, जीवन में रोग मुक्ति, मनस्ताप शांति एवं पूर्ण आरोग्यता के लिये "धन्वन्तरी दीक्षा" सर्वश्रेष्ठ कही गई है।

मानसिक तनाव, कलह, चिन्ता, रोग एवं शारीरिक कष्ट को इस दीक्षा के माध्यम से निश्चय ही हटाया जा सकता है, और व्यक्ति के अन्दर के रोग-अणु विखंडित होने लगते हैं, फलस्वरूप रोगी धीरे-धीरे पूर्ण स्वस्थ होने लगता है।

सम्मोहन और चिकित्सा विज्ञान

क्या सैकड़ों मील दूर बैठी प्रेमिका का हृदय परिवर्तित किया जा सकता है? क्या दो बिछड़े हुए प्रेमियों को मिलाकर उनके जीवन में खुशियों के रंग ही रंग बिखेरे जा सकते हैं? क्या मिठास की वो रिमझिम फुहार जीवन में सदैव बरसती रह सकती है, जिसमें पीड़ा के बदरंग धब्बे न हों? इनके उत्तर सम्मोहन विज्ञान के पास चुनौती से हैं कि 'हां!!'

यह भी तो चिकित्सा ही है कि हृदयों पर मलहम लगाये जाएं, इनसे बड़ी चिकित्सा और हो भी क्या सकती है? आइए देखें सम्मोहन विज्ञान चिकित्सा विज्ञान से जुड़ हमारे जीवन की पीड़ाओं को मिटाने में कैसा सहायक हो रहा है।

सम्मोहन विज्ञान को जो विश्वव्यापी ख्याति मिली उसके पीछे चिकित्सा विज्ञान में उपयोग होना ही आधार है। भारत में इसका प्रयोग तो आध्यात्मिक जीवन तक ही सीमित रहा और कालान्तर में जन सामान्य इसे जादू टोने से संबंधित मान कर ललक के साथ अपना नहीं सके। डॉ. मेस्मर द्वारा इस विद्या की चुम्बकीय व्याख्या एवं चिकित्सकीय उपयोग के बाद पाश्चात्य देशों में क्रमबद्ध रूप से परम्परा बढ़ती रही एवं बाद के वैज्ञानिकों ने नवीन शोध कर इसमें नये आयाम जोड़े डॉ. मेस्मर के बाद डा जेम्स ब्रेड और उनके बाद भारत के ही एक विद्वान् सर्जन डा. जेम्स एस्डेलर ने नवीन प्रयोग किये। डा. जेस्म एस्डेलर ने तो चुनौती पूर्वक सम्मोहित कर न केवल शल्य क्रियाएं ही सफलता पूर्वक संपन्न की, वरन प्रसव जैसे दुरूह विषय को भी हाथ में लिया जिसमें तो अपार वेदना होती है।

इसके पश्चात् जिस विद्वान् ने इसको पर्याप्त लोकप्रियता दी वे थे डा. चारकोट। उन्होंने अनुभव किया कि हिस्टीरिया वास्तव

जीवन में सोलह कला पूर्ण व्यक्तित्व पाने के लिए तीन आधार है-ज्ञान,योग व वैराग्य। वैराग्य में घर बार छोड़ कर जंगलों में भटकना नहीं अपितु अमृत तत्व पान के बाद चित्त वृत्तियों का निरोध है। इसके लिए "शांभवी दीक्षा" सहायक है। ऊर्ध्वरेता की अंतिम सीमा सोलहवीं कला प्राप्त करना होता है जिसे लौकिक अर्थों में भगवान् कहा जाता है, और वह आज के युग में भी संभव है।

अनुशासन हीन पुत्र-पुत्री, एक्सीडेण्ट से अचानक मृत्यु, व्यापार में अप्रत्याशित घाटा इस तरह के अनेक ऐसे कष्ट हैं जिनसे अशांत होना स्वाभाविक है। इससे छुटकारा पाने के लिए अनेक उपाय करते हैं फिर भी सफलता नहीं मिलती और वह व्यक्ति असमय ही वृद्ध हो जाता है। इन सब का सही उपचार "सम्मोहन विज्ञान" है। किन्तु "सम्मोहन" किसी योग्य व जानकार व्यक्तित्व से ही कराना चाहिए अन्यथा आप को हानि हो सकती है।

में मन में दबी कामवासनाओं के कारण ही होता है। अत: यदि रोगी को सम्मोहित कर उचित भावना दे दी जाय तो इसका निदान सम्भव है। बाद में तो सिग्मंड फ्रायड की महत्वपूर्ण और विश्व प्रसिद्ध थ्योरी विश्व के समक्ष आयी जिसमें उन्होंने सिद्ध किया कि किस तरह से सम्मोहन मानव के शैशव से लेकर वृद्धावस्था तक उपयोगी होता है। डा. चारकोट की व्याख्या के बाद ही वैज्ञानिक और डाक्टर इसकी व्यापकता के विषय में सोचने को बाध्य से हो गये।

मानसिक चिकित्सा

यद्यपि निरन्तर विकसित होता सम्मोहन ज्ञान चिकित्सा के कई विभागों में अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है, किन्तु जिस क्षेत्र में इसका सर्वाधिक ऋण है वह है मानसिक समस्याओं का क्षेत्र। मानव मन अत्यंत कोमल होता है। कब उसके मन पर जाने अनजाने में कौन आघात लग जाय और वह जीवन भर के लिए कुंठित हो जाय, या मनो ग्रंथियों में जकड़ जाय इसका कोई निश्चित अनुमान नहीं लगा सकता और न ही इसका कोई निश्चित समाधान ही ढूंढा जा सका है। ऐसे में सम्मोहन ज्ञान ही ऐसा एक मात्र माध्यम बचता है, जिससे किसी के अतीत में झांककर उसके मन के रहस्यों को समझा जा सकता है और तब उसके मन की गांठे सुलझाई जा सकती हैं। साथ ही यह भी निर्देश दिया जा सकता है कि जब वह माध्यम सम्मोहन निद्रा से मुक्त हो तो यह भूल जाय कि उसे सम्मोहित किया गया था, अथवा उसे कोई निर्देश दिया गया था। इसका प्रभाव यह होता है कि व्यक्ति यह समझता है कि उसने अपने प्रयासों से ही समस्या सुलझा ली। उसे ऐसा सोचने भी देना चाहिए क्योंकि इस तरह से जहां एक ओर वह मानसिक रूप से स्वस्थ होता है वहीं अपने आत्मविश्वास में भी वृद्धि करता है। अब मनोरोगियों को आवश्यक नहीं कि मनोचिकित्सालय में कैदियों की तरह जीवन भर सड़ें या बिजली के झटकों की दु:साध्य यंत्रणा सहे अथवा लम्बे लम्बे उपचार के क्रमों से जीवन पर्यंत उलझें।

मनोरोगियों की ही एक श्रेणी है जिसमें वे व्यक्ति आते हैं जो किसी दुर्घटना में अथवा किसी मानसिक पीड़ा में अपनी स्मरण शक्ति खो बैठते हैं। इसका सामान्य चिकित्सा पद्धति प्राय: कोई उपचार नहीं है। यूं ही कुछ दवाईयों के सहारे_जीवन एक प्रकार से घसीटा जाता है, जबकि सम्मोहन इस क्षेत्र में निश्चित उपाय देता है। ऐसी स्थिति में होता यह है कि बाह्य आघात से या मनोघात से व्यक्ति की जो स्मरण शक्ति लुप्त होती है वह उसकी चेतन पक्ष से होती है, अन्तर्मन से नहीं। अत: सम्मोहन कर्ता यह उपाय करता है कि व्यक्ति के अन्तर्मन को स्पर्श कर उसे यह आदेश देता है कि वह जगने पर बाह्य मन को भी समस्त बातें स्मरण करा दे। इस प्रकार से व्यक्ति धीरे धीरे सन्तुलित हो जाता है।

शरीर की पीड़ा

सम्मोहन का जो दूसरा उपयोग है वह व्यक्ति के शारीरिक पक्ष की पीड़ाओं के निवारण से संबंधित है और इस प्रकार से कई प्रकार की पीड़ाओं का समाधान संभव है। विदेशों में तो शल्य क्रियाएं तक व्यक्ति को सम्मोहित कर की जाने लगी हैं, क्योंकि मूर्छित करने वाली औषधियां जैसे क्लोरोफार्म आदि व्यक्ति के शरीर के बहुत अनुकूल नहीं होती। यदि इनकी बहुत कम मात्रा दी जाय तो आपरेशन के मध्य ही व्यक्ति को चेतना आने का भय रहता है और वहीं अधिक मात्रा प्राण घातक नहीं तो तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) के लिए अत्यंत हानिकारक तो होती ही है। शल्य के साथ साथ अमेरिका में तो अब सम्मोहन के माध्यम से शत प्रतिशत प्रसव भी सम्पन्न कराये जाने लग गये हैं, क्योंकि गर्भवती महिला का मानस और शरीर क्लोरोफार्म जैसी तीव्र दवा सहने की स्थिति में नहीं होता, जबकि सम्मोहन से उसे पूर्ण अनुकूलता मिल जाती है।

यह आवश्यक नहीं कि व्यक्ति को प्रकट शारीरिक पीड़ाएं ही हों उसे अन्य प्रकार की भी जो पीड़ाएं शरीर में व्याप्त होती हैं, उसमें हृदय रोग, ब्लडप्रेशर, हाईपरटेन्शन, नाड़ी की गति बढ़ जाना, बोलते समय घबराहट होना आदि जटिल बीमारियां आती हैं। इनका प्रचलित निदान तो ट्रैंक्वलाईजर ही है, और वे तो शरीर को और खोखला ही बना जाती हैं। इसके विपरीत सम्मोहन के माध्यम से व्यक्ति के मन को छूकर उपचार किया जाता है यह रोग तो वास्तव में अस्वस्थ मन की शरीर पर प्रकट हुयी प्रतिक्रिया होते हैं जिनका उपचार भी मन पर नियंत्रण कर उसे स्वस्थ कर संभव हो पाता है। व्यक्ति मानसिक तनाव के कारण ही पेट की कई जटिल बीमारियों से ग्रसित हो उठता है जिसमें अल्सर जैसी गम्भीर बिमारियां भी आती हैं। इनका उपचार भी मात्र पेट की

हकलाहट, बच्चों की पढ़ाई में अरुचि, कद का विकास, रंग का काला होना दमा जैसे विभिन्न क्षेत्रों में धीरे धीरे सम्मोहन विज्ञान के सफल कदम पड़ते जा रहे हैं।

दवा लेने से ही नहीं वरन् अन्तर्मन को स्वस्थ कर ही हो सकता है और ऐसा केवल सम्मोहन विज्ञान के माध्यम से ही तो हो सकता है।

ग्रन्थियां

प्रायः व्यक्ति अच्छी कद काठी का होते हुए भी अपनी वाणी या श्रवण की किसी ऐसी हीनता से ग्रस्त हो सकता है, जिसका कुप्रभाव उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर पड़ने लगता है और उसे सभी जगह झेंप का सामना करना पड़ता है। प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों में कोई निश्चित विकास मिल भी नहीं पाता और मिल भी नहीं सकता। इसका कारण यह होता है कि इन ज्ञानेन्द्रियों के पीछे जो ग्रन्थि सक्रिय होनी चाहिए वह किसी कारणवश दबी रह जाती है अथवा विकसित नहीं हो पाती और चिकित्सा के माध्यम से संभव भी नहीं। यह तो व्यक्ति की प्रबल इच्छा शक्ति अथवा भावना जाकर उस ग्रन्थि का स्पर्श कर उसे उत्तेजित करती है, तभी विकास संभव हो पाता है व्यक्ति की यह प्रबल इच्छा शक्ति कोई कुशल सम्मोहन कर्ता उसके अंतर्मन को स्पर्श कर अपनी भावना के माध्यम से ही दे सकता है। शरीर की अन्यान्य ग्रन्थियों के विषय में भी यही तथ्य सत्य है। हमारी लम्बाई, पुरुषोचित या स्त्रियोचित सुन्दरता के लक्षणों को उभरने के पीछे भी तो कई ग्रन्थियों का ही महत्व होता है।

विदेशों में वैज्ञानिक प्रारम्भिक सफलताओं से उत्साहित हो नित्य नये क्षेत्र में संभावनाओं पर विचार व प्रयोग करते ही जा रहे हैं। आश्चर्यजनक परिणाम तो तब मिले जब उन्होंने ढूंढ निकाला कि सम्मोहन का उपयोग क्षय रोग, दमा व चर्मरोग जैसी प्रायः असाध्य

आपकी दैहिक पीड़ा के पीछे भी छिपा होता है कोई मानसिक द्वंद्व, तनाव या गुत्थी।

माने जाने वाली बीमारियों में भी संभव है। यह सर्व विदित तथ्य है कि हमारा दुर्बल शरीर ही बीमारियों के कीटाणुओं से संक्रमण ग्रस्त हो, हमें रोगी बना देता है एवं उस दशा में फिर मन की दुर्बलता और निर्बल बना जाती है। इसी समय यदि व्यक्ति को बाह्य रूप से भावना देकर पर्याप्त अंतर्बल प्रदान कर दिया जाय तो कोई कारण ही नहीं कि वह शीघ्र स्वस्थ न हो उठे। सम्मोहन के अनेक उपयोगों में यह भी एक उपयोग आता है कि किसी रोगी को यदि किसी पदार्थ विशेष से घृणा हो तो उसे वह पदार्थ खाने की प्रेरणा दी जा सके या कोई विजातीय पदार्थ छुड़वाया जा सके।

सम्मोहन विज्ञान का इस युग में जो सहयोग मिल रहा है वह निरन्तर बढ़ती जा रही नशीले पदार्थों की समस्या के सन्दर्भ में है। नशा करने के पीछे अधिकांशतः व्यक्ति की कोई मनोग्रन्थि होती है, सामाजिक या घरेलू जटिलताएं हो सकती हैं, कार्य का बोझ हो सकता है, या ऐसा ही अन्य कुछ और जिसका सामान्य उपचार पद्धति में न तो कोई निदान सोचा गया है और न ही उपचार। सम्मोहन विज्ञान ने इससे गहराई में जाकर समझा है, और उपचार दिया है जिससे धीरे धीरे यह सम्मानीय स्थिति प्राप्त करते करते पूर्ण विद्या की श्रेणी में आ गया है। चिकित्सा विज्ञान में आज विभिन्न विषयों के साथ सम्मोहन विज्ञान स्वतन्त्र विषय के रूप में पढ़ाया जाने लग गया है। ■

गर्भ स्थित बालक की कुंडलिनी जागरण

"कुण्डलिनी जागरण" गर्भस्थ प्रक्रिया भी है, जब गर्भस्थ शिशु ४-५ महीने का हो जाय, तब उस गर्भस्थ बालक की कुण्डलिनी जाग्रत कर उसे बुद्धिमान मेधावी, चतुर, इंजीनियर, डॉक्टर, योगी और किसी भी क्षेत्र का श्रेष्ठतम व्यक्तित्व बनाया जा सकता है, यह हजारों बार आजमाया है, और शत प्रतिशत सफलता मिली है, अभिमन्यु की गर्भस्थ कुंडलिनी चेतना इसी का उदाहरण है।"

हरितालिका दिवस

(२०.८.९३)

जीवन में रस की वर्षा होती है अन्नपूर्णा साधना सिद्धि से

जिस प्रकार के वातावरण में हम रहते हैं, जिस भूमि पर निवास करते हैं तथा जो भूमि व्यक्ति की कार्य स्थली है, यह सारी बातें, मनुष्य के चिन्तन, कार्य क्षमता उससे सबसे अधिक प्रभावित करती हैं जिस घर में सुख शान्ति नहीं होती है, उस घर में लक्ष्मी का कभी वास नहीं होता,लक्ष्मी का अर्थ केवल रुपया ही नहीं है, अपितु, धन, धान्य, वस्त्र, जमीन, प्रेम - स्नेह, सुलक्षणा पत्नी, सुयोग्य संतान, सुयोग्य मित्र आदि हैं, **शास्त्रों में लक्ष्मी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्वरूप अन्नपूर्णा है**, इसका तात्पर्य यह है, कि जिस घर में अन्नपूर्णा देवी का निवास रहता है, उसको केवल अपने भरण पोषण संबंधी चिन्ताएं ही नहीं, अन्य किसी भी प्रकार की चिन्ताओं का सामना नहीं करना पड़ता।

मन्त्र महोदधि में कहा गया है, कि

कुबेरो यामुपास्याशु लब्धवान्निधिनाथताम्।
शम्भोः सख्यं दिगीशत्वं कैलासाधिशतामपि।।

अर्थात् अन्नपूर्णा देवी का महत्व इतना है कि स्वयं कुबेर जो कि लक्ष्मी के प्रदाता हैं, इसकी साधना करने से निधियों के नाथ हो गये, भगवान शिव के साथ मित्रता हो गई, दिक्पालत्व प्राप्त हो गया तथा कैलाश का स्वामित्व प्राप्त कर लिया।

रूद्रयामल तंत्र में कहा गया है, कि सौम्य मूर्ति, पूर्ण चन्द्रमा के समान मुख वाली मोती की माला धारण किये हुए, आशीर्वाद मुद्रा युक्त हस्त वाली अन्नपूर्णा के ध्यान से सात जन्मों की दरिद्रता का नाश होता है, शारदा तिलक में कथन है, कि क्षुद्रता दारिद्रताविनाशनी तेजस्व रूपिणी प्रिय प्रेरणादायनी, सुख शासन की देवी अन्नपूर्णा देवी की साधना समस्त दृष्टियों से सुख प्रदान करने वाली है।

> **"विश्वामित्र संहिता" में कहा गया है कि अन्नपूर्णा देवी रत्न, आभूषण, वस्त्र, अन्न, भूमि की जनक है और स्थिर लक्ष्मी का साकार स्वरूप है जिसकी साधना प्रत्येक गृहस्थ पुरुष स्त्री को अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए, यह वही अद्वितीय साधना है, जिसे अपनी पूर्णता के लिए 'देवाधिदेव भगवान शिव" को भी सम्पन्न करनी पड़ी।**

यदि कोई स्त्री इस साधना को सम्पन्न करती है, तो वह पति की अत्यन्त प्रिय होती है और उसका प्रभाव पूरे परिवार पर स्थिर हो जाता है।

यह साधना व्यक्ति के जीवन में स्फूर्ति एवं

आनन्द देने वाली साधना है और इसे सम्पन्न करने से कर्ज सम्बन्धी चिन्ताएं पूर्ण रूप से दूर हो जाती हैं।

विश्वामित्र संहिता में कहा गया है कि अन्नपूर्णा देवी रत्न, आभूषण, वस्त्र, अन्न, भूमि की जनक है, स्थिर लक्ष्मी का साकार स्वरूप है, जिसकी साधना प्रत्येक गृहस्थ पुरुष स्त्री को अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए।

उपरोक्त सभी ऐसे शास्त्रोक्त कथन एवं जीवन के सत्य हैं, जिनसे मुंह नहीं मोड़ा जा सकता है, दु:ख की समाप्ति के बिना सुख संभव नहीं है और सुख की पूर्णता के पश्चात् ही जीवन में पूर्णता है।

तान्त्रिक साधनाओं को सम्पन्न करने के लिए ही विशेष मुहूर्त की अवश्यकता होती है। उचित समय पर ही साधना सम्पन्न करने से साधना का फल कई गुना अधिक प्राप्त होता है।

अन्नपूर्णा देवी की साधना हरितालिका दिवस (भाद्रपद शुक्ल तृतीय तदनुसार २०.८.९३) को ही सम्पन्न की जानी चाहिए। उस दिन पूरे परिवार के साथ प्रसन्न मन से इसे सम्पन्न करें। हरितालिका अन्न पूर्णा दिवस है, क्योंकि इस समय तक वर्षा ऋतु अपना मधुर प्रभाव पृथ्वी पर देते हुए जलाशयों को पूर्ण कर देती हैं। अन्नपूर्णा तो परिपूर्णता की देवी है, अत: शास्त्रों में कहा गया है, कि इस शुभ दिवस के दिन ही यह साधना संपन्न करनी चाहिए।

साधना प्रयोग

अन्नपूर्णा की इस साधना का क्रम एवं नियम कुछ विशेष प्रकार के हैं, जिनका विशेष रूप से पालन आवश्यक है। पूर्ण सामग्री के साथ नियम से साधना क्रमानुसार सम्पन्न करने से ही साधना में अभीष्ट सिद्धि प्राप्त होती है। जहां तक सम्भव हो सके, नियमों का भलीभांति प्रयोग करना चाहिए।

इस विशेष साधना में "सात हकीक पत्थर", "एक अन्नपूर्णा नारियल" तथा एक "हरितमाला" आवश्यक है, इसके अतिरिक्त अष्टगंध, सुपारी, गेहूं, कुंकुम, गुलाल, तांबे का पात्र, जल, पुष्प, फल, प्रसाद साधना प्रारम्भ करने से पहले रख दें।

साधना क्रम

यदि पूरे परिवार के साथ यह साधना सम्पन्न कर सकते हैं, तो अवश्य सम्पन्न करें

शास्त्रों में लक्ष्मी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्वरूप है "अन्नपूर्णा" इसका तात्पर्य यह है कि जिस घर में अन्नपूर्णा देवी का निवास रहता है, उसको केवल अपने भरण पोषण सम्बन्धी चिन्ताएं ही नहीं-अन्य किसी भी प्रकार की चिन्ताओं को सामना नहीं करना पड़ता।

और सम्भव हो तो पति पत्नी दोनों साथ-साथ साधना सम्पन्न करें। इस दिन स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर पूजा स्थान में बैठें, सामने हरा वस्त्र बिछा कर दिये गये चित्र के अनुसार गेहूं से नौ खानों का यह विशिष्ट "पन्द्रहिया यंत्र" बनाये जो कि अन्नपूर्णा देवी का मूल यंत्र है, प्रत्येक खाने में दिये गये चित्र के अनुसार संख्या लिख दें, फिर सात हकीक नग स्थापित करें, तथा यंत्र के आगे भी गेहूं की ढेरी बना कर उस पर अन्नपूर्णा नारियल स्थापित करें।

सर्व प्रथम संक्षिप्त रूप से गुरु पूजन करने के पश्चात अन्नपूर्णा देवी का ध्यान करें, ध्यान मंत्र निम्न है -

तप्तस्वर्णनिभा शंशाकमुकुटा रत्नप्रभाभासुरा

नानावस्त्रविराजितात्रिनयना भूमीरमाभ्यां युता।

दर्वीहाटकभाजनं च दधतीरम्योच्चपीनस्तनी

नृत्यन्तं शिवभासकल्यमुदिता ध्यायेन्नपूर्णेश्वरी।।

अर्थात तपे हुए सोने के समान कान्ति वाली चन्द्र मुकुट धारण किये हुए रत्नों एवं नाना वस्त्रों वाली शिव माहेश्वरी अन्नपूर्णा देवी, आपका मैं ध्यान करता हूं।

पन्द्रहिया यंत्र

८	१	६
३	५	७
४	९	२

ऊपर चित्रानुसार जो **"पन्द्रहिया यंत्र"** बनाया है, वे नौ खाने नौ पीठ शक्तियों के प्रतीक है, इनमें सर्वप्रथम पहले खाने में हकीक पत्थर पर हाथ रखते हुए सुपारी रखें, और ऊँ अजायै नम:, दूसरे खाने में ऊँ विजयायै नम:, तीसरे खाने में ऊँ अपरायै नम:, चौथे खाने में ऊँ अपराजितायै नम:, पांचवें में ऊँ नित्यायै नम:, छठे में ऊँ विलासिन्यै नम:, सातवें में ऊँ दोग्ध्यै नम:, आठवें में ऊँ मंगलायै नम:, नवम खाने में ऊँ लक्ष्म्यै नम: कह कर सुपारी रखें।

इस प्रकार नव शक्तियों की पूजा करने के पश्चात "ऊँ नम: शिवाय" मंत्र का ११ बार जप करें, प्रत्येक मंत्र के साथ सामने एक बिल्व पत्र अर्पित करें।

शिव पूजन के पश्चात अन्नपूर्णा जो कि लक्ष्मी स्वरूप हैं, का ध्यान करते हुए प्रार्थना करें कि 'हे अन्नपूर्णा देवी! आप अन्न, धन, धान्य एवं देहादिक सुख देने वाली हैं, अत: मुझे यह सब प्रदान करें।"

इस पूजन क्रम में घी का दीपक निरन्तर पूजा स्थान में जलते रहना चाहिए। देवी के समक्ष फल, पुष्प, प्रसाद अर्पित करें तथा अपनी समस्त शक्तियों को प्रेरित करते हुए प्रसन्न मन से अन्नपूर्णा मंत्र का मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हरित माला से जप करें।

अन्नपूर्णा मंत्र

।। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि समाशिमतमन्नं देहि देहि अन्नपूर्णायै नमः ।।

इस अत्यन्त शक्तिशाली सौभाग्य प्रदायक मंत्र की उसी स्थान पर बैठे हुए पांच माला मंत्र जप करें, जब जप कार्य समाप्त हो जाय तब अन्नपूर्णा देवी की आरती सम्पन्न करें, जब साधना क्रम पूर्ण हो जाय, तो अन्नपूर्णा नारियल अपने घर में रख दें तथा हकीक पत्थर सरोवर अथवा कुएं में अर्पित कर दें। पूजा कार्य में प्रयोग आये गेहूं किसी पीपल के वृक्ष के नीचे डाल दें, जहां कि पक्षी इन्हें चुग सकें।

साधना की पूर्णता के पश्चात अपनी श्रद्धा के अनुसार ब्राह्मण को भोजन करायें, एवं वस्त्र दान इत्यादि करें।

अन्नपूर्णा साधना के संबंध में कहा गया है कि त्रैलोक्य रक्षक पवित्र मंत्र का ध्यान एवं पाठ करने से सभी देवगणों को सुफल प्राप्त हुआ है तथा इसकी सिद्धि के फलस्वरूप ही ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा रूद्र प्रत्येक कल्प में सृष्टि का सृजन, पालन एवं संहार करते हैं।

अन्नपूर्णा पुरश्चरण सम्पन्न कर भोजपत्र पर इसे लिखकर चांदी के ताबीज में रखकर कंठ में धारण करने से साधक को वाक्सिद्धि प्राप्त हो जाती है। दक्षिण भुजा में इसे धारण करने से साधक के सभी दोष दूर हो जाते हैं तथा शत्रुओं का प्रहार उसे स्पर्श नहीं कर पाता है।

नाहि ऐसो जन्म बार बार

का जानूं कछु पुण्य प्रकटे मानुस अवतार

अंधियारा पाख गया। एक एक दिन करके पूर्णिमा के दिन आये उमस और तपन के भरे दिनों बाद आये उजियारे दिन, सावन के आने के दिन, रस मय होने के दिन। इस में फिर से झूले पड़ेंगे और पींगे बढ़ेंगी, फिर से प्रेम की गाथायें दोहराई जायेंगी, ये कजरी गाने के दिन होंगे और उल्लास भरे दिन होंगे। यह धरा भी अमलतास के लाल फूलों की चोली पहन कर धानी रंग का घाघरा पहन लेगी, चोटियों सी लहराती नदियां चल पड़ेंगी। फिर से रीझने रिझाने की अनंतकाल से आ रही गाथायें दोहरायी जायेंगी जिनमें नित्य नवीनता बनी ही है।

ठीक इसी परिवर्तन के मध्य में है **गुरु पूर्णिमा**। यानि आषाढ़ और सावन के मध्य का दिन। खूब तप चुके खरे हो गये जीवन पर बरसने के लिये। कुछ बीज बिखेरने के दिन कि अब ये फूटें कोमल धान की ही फसल की तरह और फिर हौले हौले पुष्ट होते हुये कई कई दानों में बदल जायें। इस धरा की क्षुधा भी तो बहुत बढ़ चुकी है। कुछ एक दानों से वह तृप्त भी नहीं होने वाली, एक पूरी की पूरी पुष्ट फसल चाहिये होगी। नैराश्य की तपन से बोझिल हो गये मन पर ठन्डी हवा की सहलाहट चाहिये। दुर्गन्ध से भरे मनों पर सोंधी हवा का झोंका चाहिये। यही सब घटित होने का दिन है गुरु पूर्णिमा। वसन्त के किशोर अल्हड़ दिन बीत जाने के बाद यौवन की जो तपन भरी प्रौढ़ावस्था आ जाती है, उसे फिर से रस मय करने का अवसर होता है वर्षा, जब कि कोमलता भी कुछ पक चुकी हो और भीगने को तत्पर हों। गुरु पूर्णिमा ठीक सन्धि काल पर आकर घटित होती है। शिष्य को वसन्त की मादक अठखेलियों से गुजार कर, साधना की गर्मी की तपन देकर फिर से रस युक्त कर देने का अवसर होता है गुरु की पूर्णिमा जिससे वह स्वयं शरद पूर्णिमा का चांद बन सके। गुरुदेव के विशाल नयनों की तरह शीतल, करुणामय और अमृत युक्त। रस वर्षा करता हुआ, हृदय के जख्मों को भरता हुआ।

पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी

पूर्णिमा तो अपने आप में ही प्रतीक है पूर्णता की, चाहे वह साधना की पूर्णता हो, प्रेम की पूर्णता हो अथवा जीवन की ही पूर्णता हो। आषाढ़ पूर्णिमा सही अर्थों में गुरु शिष्य के प्रेम की पूर्णता की पूर्णिमा है, धीरे-धीरे एक एक कला बढ़कर पूर्ण प्रेम युक्त होने की। यह वह अलौकिक पूर्णिमा है जो संसार के सबसे अनूठे और मधुर गुरु शिष्य के प्रेम की साक्षीभूत होने वाली

है। इसमें लिजलिजी भावुकतायें नहीं वरन ठोस भूमि पर खड़े होकर एक एक तार कसकर बजने वाली देव वीणा का संगीत है, और जिस चांदनी के तले यह प्रेम पनपता है वह होती है प्राणों की चांदनी जो काल के विस्तृत नभ पर फैली होती है, इस छोर से उस छोर तक। इस नभ में, प्राणों के इस विस्तृत नभ में खिले होते हैं स्मृतियों के अनगिनत तारें जो टिमटिमाते हैं और मन को स्पन्दनशील रखते हैं। महत्व उनके प्रकाश का नहीं होता महत्व तो होता है उनके टिमटिमाने का, हृदय की धड़कनों को बताने करने का। देव, ऋषि, मुनि, पितृ सभी तो इस चांदनी में नहाने के लिये, अपने को भिगोने के लिये उतर आते हैं। गुरू पूर्णिमा का पर्व तो बहाना बना लेते हैं अलौकिक गुरु रूपी दिव्य चन्द्र की चांदनी में अपने को तृप्त करने का।

यह धरा बहुत उदास हो गयी है, बहुत शुष्क और नीरस हो गई है। इस पर पुनः महारास रचाना ही होगा द्वापर के बाद जो संगीत मौन

> ***और मैं पुकारता रहा, तुम अनसुना करते रहे, मैं चीखता रहा, तुम कानों में उंगलियां डाले बैठे रहे, हर बार मैंने प्राण तत्व समर्पित किये, और हर बार तुम अनजान से बिसुरते रहे, और मेरा ऋण तुम पर चढ़ता रहा।***
>
> ***–गुरु सूत्र***

हो गया वह पुनः गुंजरित हो यही इस युग की सर्वोच्च साधना है। अन्य साधनायें इसके बाद ही आयेंगी। इस युग में भी महारास रचा जायेगा। गुरुदेव का महारास। गुरु पूर्णिमा इसी महारास को समझाने का और जीवन में उतारने का अवसर हैं गुरु पूर्णिमा साधना की धूप में तप चुके साधकों को गुरु के प्रेम के बरसने का दिन है, कि अंकुर फूटे मानवता के, दया के, और करुणा के, जिसकी कि इस युग में सभी व्याख्याओं, विवेचनाओं और उपदेशों से अधिक आवश्यकता है।

गुरु रूप गम्भीर-घटाटोप बादल जब आकर आपके जीवन में बरसेंगे तभी तो भीतर तक जाकर कुछ भीग सकेगी और फिर उसी भीगी जमीन में तो अंकुर फूटेंगे। ये जमीन तो परती हो गई वेदनाओं पीड़ाओं की तपन सहते-सहते। लौकिक प्रेम इस पर कुछ छींटे भले ही डाल दे, इसे तर नहीं कर पायेंगे। इसे

> ***पिछले पच्चीस जन्मों का तो मैं साक्षी हूं ही, और हर जीवन में मैंने तुम्हें पुकारा है, तुम्हें आवाज दी है, जीवन की पगडंडी पर चलने का आह्वान किया है, और समझाने की कोशिश की है, कि तुम मेरी उंगली पकड़ कर चलो, मैं तुम्हें निश्चय ही पूर्णता तक पहुंचा दूंगा।***
>
> ***गुरु सूत्र***

तर केवल गुरुदेव का अलौकिक और निस्वार्थ प्रेम ही कर सकेगा। फिर जब आपके अन्दर की परती जमीन भीगकर जो गुरु प्रेम का जल संचित कर लेगी वही बहेगा आंसुओं की नदी में। धरती भी तो यही करती है आकाश से टपके जल को अपने अन्दर संजो लेती है और फिर हजारों-लाखों की प्यास बुझा देती है।

यह परिवर्तन के क्षण हैं। युग सन्धि है। जबकि किसी अद्वितीय व्यक्तित्व ने स्पष्ट और बिना लाग लपेट के कहा कि जीवन में भौतिकता भी उतनी ही आवश्यक है जितनी कि आध्यात्मिकता। यहां थोथे और गढ़े हुये शब्द नहीं हैं और न लफ्फाजी। यहां तो ओज से भरे हृदय के वे प्रेम पूर्ण शब्द हैं जो हृदय को जाकर सीधे स्पर्श करेंगे ही। क्योंकि उनमें बनावट नहीं है और उस स्पर्श से जिस दिन आपके हृदयों पर पड़े पत्थर हट गये तो अन्तः सलिला बहेगी ही। आपमें से प्रत्येक के हृदय में स्वच्छ धारा है ही किन्तु आवश्यकता है कि कोई उस पर बीच में पड़े पत्थरों को हटा सके। यह कार्य किसी भी शास्त्र, किसी भी उपदेश, किसी भी चर्चा से नहीं हो सकता। बस यहीं पर आकर पूज्य गुरुदेव की एक अप्रतिम शैली है मंद प्रवाह को गति देने की। इसी के कारण तो वे सर्वोच्च रूप से वन्दनीय है। और इसी के कारण वे ईश्वर से भी एक श्रेणी ऊपर के पद पर प्रतिष्ठित हैं क्योंकि वे अपनी उच्चता, अपनी गरिमा, अपना देवत्व त्याग कर हमारे आपके मध्य उपस्थित हैं। ये भी निश्चित जानिये कि जिस दिन आपके हृदय की अन्तःसलिला पूर्ण वेग से प्रवाहित होगी उस दिन सर्वप्रथम आप ही उसमें स्नान कर तृप्त और आनन्द युक्त होंगे। धन्य-धन्य और कृत्यकृत्य हो जायेंगे।

दिनांक ३ जुलाई ऐसे ही दिव्य व्यक्तित्व के साहचर्य का दिन है। साक्षीभूत बनने का दिन है एक नये मार्ग का। और यह नया मार्ग कोई अहंमन्यता नहीं, नया पंथ घोषित करने का। यह तो एक प्रयास है कि आप जकड़न से मुक्त हो सके। वह सब कह सुन सकें, कर सकें जो हमारी आपकी रुढ़ियों ने वर्जित कर दिया, पाप घोषित कर दिया। और पूरी की पूरी पीढ़ी को कुंठित कर दिया। जिन्हें जीवन को समझने की उसे पूर्णता से जीने की ललक है, उन्हें यही मार्ग भायेगा, क्योंकि यही सनातन धर्म है। सनातन धर्म का अर्थ केवल कुछ देवी देवताओं का पूजन ही नहीं वरन् जीवन की अविछिन्न धारा में अवगाहन करके स्वच्छ व तृप्त होना है। सनातन धर्म का अर्थ केवल पुराण नहीं, श्रीमद्भगवत् गीता नहीं रामायण नहीं या इनका अखण्ड पाठ नहीं। सनातन धर्म का अर्थ तो बहना और छलछलाना है। जिस दिन आप बहना और छलछलाना सीख जायेंगे उस दिन आपको गीता बिना पढ़े समझ में आ जायेगी, पुराण आपके रग-रग में बहेंगे अन्यथा स कहिये क्या गीता के उद्धरण पढ़कर आपके हृदय में कोई संचार हुआ? निश्चित रूप से नहीं। हम स्वयं को धोखा दे सकते हैं, किन्तु अन्ततोगत्वा वह धोखा बहुत देर तक चलता नहीं।

आह्वान

पूज्य गुरुदेव स्पष्ट कहते हैं कि बहुत शास्त्र रचे जा चुके हैं बहुत मार्ग बनाये जा चुके हैं, किन्तु जो पग-पग पर जीवन धड़क रहा है उसे पहचानना कोई नहीं सिखा सका। यही कारण है वैमनस्य, विषाद, तनाव और परस्पर घृणा का। और जीवन की यह शैली केवल गुरुदेव ही अपने संस्पर्श से सिखा सकते हैं। आपने यदि उस शिशु का आनन्द देखा हो जो उसे किसी नयी वस्तु को देखने पर मिलता है या किसी मां के आनन्द को छलकते देखा हो, परखा हो जो उसे अपने अबोध शिशु को समझाने पर आता है, तो ठीक वहीं संबंध है गुरू शिष्य के मध्य। हम अपनी भौतिक, वासना में डूबी आंखों से भले ही इस आनन्द को समझना भूल गये हों किन्तु इस आनन्द की स्थिति से मुख नहीं मोड़ सकते और मुख मोड़ कर पाया भी क्या-उदासी और नैराश्य। तृप्ति नहीं मिली। यही तृप्ति आपके जीवन में आ सके, यही हमारी शुभकामना है। इसी के लिये निमन्त्रण है। कल को आप जब इस अनूठे प्रेम को छककर पी लेंगे तो फिर आप भी निमन्त्रण भेजेंगे दूसरों को। शुभकामना भेजेंगे सभी को। क्योंकि यह ऐसा ही अमृत है कि जिसने छक कर पी लिया वह बांटे बिना नहीं रह सकता। आपके बांटने के ढंगों में अन्तर हो सकता है, आपकी शैली अलग हो सकती है। हो सकता है आप नाचते हुये बांटे जैसा कभी मीरा ने इस अमृत को पिया और राजमहल छोड़ कर सड़कों पर बांटने निकल पड़ी। हो सकता है आपके मन में कोई चिंगारी फूट उठे और आप कबीर की तरह इस समाज की कुरीतियों पर प्रहार कर बैठें। हो सकता है आपकी वाणी अवरुद्ध हो जाये आप कुछ बोल ही न पायें केवल आपकी आंखों से अश्रुपात ही होता रहे। हो सकता है आप अपनी इस पत्रिका का प्रचार प्रसार करके बांटे। या यह भी हो सकता है कि आप केवल गुमसुम रह कर खोई-खोई आंखों से इस विश्व को अपार करुणा से निहारते ही रह जायें। कई स्थितियां संभव हैं किन्तु प्रत्येक रूप में आपके अन्दर से अमृत का प्रवाह दूसरे हृदय पर होगा ही क्योंकि यह अमृत पूज्य गुरुदेव प्रदत्त है संभव है आज आपके इस बांटने को कोई ना समझे किन्तु आप जिस अलौकिक आनन्द के साक्षीभूत बनेंगे वह तो केवल युगों-युगों में कुछ एक को ही मिल पाता है। कई मीरा, कई कबीर, कई सूरदास, कई तुलसी नहीं होते। प्रत्येक युग में कोई-कोई बिरला ही होता है आप क्यों न उस बिरलों में से एक हों।

यह गुरू पूर्णिमा वर्ष में पड़ने वाला एक पर्व मत समझ लीजिएगा। यह गुरू पूर्णिमा तो वर्षों-वर्षों ही नहीं युगों-युगों में पड़ने वाला अवसर बनने जा रही है।

जिनके सौभाग्य के क्षण आ गये होंगे वे ही दौड़ते हुये आकर गुरूदेव की बाँहों में समा सकेंगे।

जब इस समाज की एक इकाई दूसरी इकाई को बांटने ही लगेगी तो सचमुच यह धरा छोटी पड़ जायेगी प्रेम के विस्तार को। यही हमारा स्वप्न है। हमारी संस्था को पूज्य गुरुदेव ने "सिद्धाश्रम साधक परिवार" नाम दिया है। 'परिवार' शब्द का जोड़ना महत्वपूर्ण है क्योंकि हम सब देह गत रूप से नहीं अपितु आत्मगत रूप से भाई बहिन ही हैं। हमारा चिन्तन भी तो संपूर्ण विश्व को एक परिवार सदृश्य मानने का ही रहा है। जीवन की उसी विराटता पर ले जाने की पाठशाला है अपनी यह संस्था। हमारा आज का परस्पर प्रेम ही कल हमारी सीमायें विस्तारित कर इस देश के परे ले जायेगा। गुरु पूर्णिमा एक शास्त्रोक्त पर्व तो है ही, गुरु जो देव हैं, उनकी वन्दना करने का, उनकी अभ्यर्थना करने का। किन्तु वे गुरु से भी अधिक हमारे पिता हैं और गुरु पूर्णिमा केवल एक पर्व ही नहीं। यह तो उनके पुत्रों -पुत्रियों का उनके चरणों में बैठने का अवसर है। यह परिवार की बात है और यही हमारी गुरु पूर्णिमा मनाने का अर्थ है। यही गुरुदेव का भी सन्देश है। उन्हें व्यक्ति पूजा नहीं चाहिये। जो अलौकिक व्यक्तित्व होते हैं वे इस तरह की भावनाओं से बहुत ऊँचे उठे होते हैं। उनका तो यह स्वप्न है कि आप में से प्रत्येक गुरु पद पर आसीन हों, गुरुत्व धारण करें। आनन्द का, प्रेम का विस्तार कर सकें। यह गुरु पूर्णिमा केवल फल-फूल भेंट करने, चरणस्पर्श करने तक ही सीमित न रह जाये, ऐसी तो कई गुरु पूर्णिमायें हो चुकी। वास्तविक गुरु पूर्णिमा तो वह है कि आपको ही पूर्ण चन्द्र सदृश्य बनकर इस अंधियारे पाख को समाप्त कर उजियारा लाना है।

जिनका कद हिमालय से भी ऊँचा होता है, जिनके अंदर समुद्र से भी अधिक गहराई होती है, वे ही इस तरह की बात कह सकते

"गुरु-पूर्णिमा" के अवसर पर छलकता है "अमृत कलश"। जिसने भी पिया मस्त हो गया। जब वह व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है तो निश्चय ही उनके अन्दर से अमृत का प्रवाह दूसरों के हृदय पर पड़ता है। आप जिस अलौकिक आनन्द के साक्षीभूत बनेंगे वह तो युगों युगों में किसी विरले को मिल पाता है।

क्योंकि यह अमृत की धारा प्रवाहित होती है सदगुरु के श्री चरणों से।

हैं। आज के युग में जब गुरुपद एक प्रतिस्पर्धा का विषय बन गया हो तब आप ही सोचिए जो व्यक्तित्व इतने दम खम से कहता हो कि मैं एक नहीं अनेक शंकराचार्य पैदा कर दूंगा उसमें कितना अधिक ओज कितना अधिक साहस और समाज के प्रति कितनी तड़प है कि काश! किसी भी प्रकार से यह परिवेश बदले, नये वातावरण का सृजन हो। शिष्य के नाते आपका इतना दायित्व तो बनता ही है कि आप उपस्थित तो हों। गुरुदेव इससे अधिक आपके ऊपर कोई भार या दायित्व आरोपित भी नहीं करते। वे केवल आपसे आपकी उपस्थिति की अपेक्षा करते है। शेष सब कुछ वे खुद ही घटित कर देने का वायदा करते हैं।

जो युगान्तरकारी व्यक्तित्व होते हैं वे समाज को दिशा देकर दिव्यलोक में विलीन से हो जाते हैं। पीछे रह जाती हैं वेदना, पछतावा। अभी तो समय है। अभी आप अपने सम्पूर्ण जीवन में परिवर्तन कर सकते हैं। यह ऐसे ही क्षण हैं। जब पेड़ फूलों से लदा हो तभी उसके नीचे बैठकर सुगंधित हो लीजिए। कल सुबह तो फूल झड़ जायेंगे फिर यह बात नहीं रह जायेगी। माला तो वृक्ष पर लगे फूलों को चुन कर ही बन पाती है। जमीन पर गिरे पुष्पों की माला नहीं बनाई जाती। आप आज ही स्मृतियों, मधुर क्षणों के पुष्पों को लेकर गुरुरूपी वृक्ष से चुन-चुनकर एक माला गूंथना आरम्भ कर ही दीजिए।

गुरु पूर्णिमा शिविर स्थल

इस वर्ष जिस सौभाग्यशाली साधक को इस आयोजन का भार मिला है वे हैं पानीपत के अधिशासी अधिकारी श्री सत्यवीर सक्सैना इनका पता है - बस स्टैंड के सामने पानीपत

फोन : कोड -०१७४२

ऑफिस - २१९५० घर - २३८१८

यह शिविर १.२.३ जुलाई ९३ को सम्पन्न होगा। इस महत्वपूर्ण शिविर में शिविर शुल्क समस्त दबाबों के बावजूद मात्र ६६०/- ही रखा गया है। यदि कोई साधक साधना शिविर में भाग ले रहा है तो उसके परिवार का कोई एक सदस्य मात्र ३३०/- में ही साधना शिविर में रह सकता है।

आपको किसी भ्रम में नहीं रहना हैं। प्रत्येक स्थिति में "गुरु पूर्णिमा" शिविर में भाग लेना ही है।

पानीपत दिल्ली से मात्र १२० कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

लक्ष्मी सम्मोहन प्रयोग

सम्मोहन प्रयोग मात्र मनुष्य, पशु या पक्षियों पर ही नहीं होता, अपितु लक्ष्मी पर भी किया जा सकता है। योगी ॐकारा नन्द ने गुरु आज्ञा से यह गोपनीय साधना रहस्य जन हितार्थ स्पष्ट की है।

रात्रि को १० बजे शुद्ध जल से स्नान करके, पीले वस्त्रों में आसन पर बैठ जायें। सामने एक थाली के मध्य में "श्रीं" लिखें तथा इसके चारों दिशाओं में स्वस्तिक चिन्ह बनायें। "श्रीं" के ऊपर "लक्ष्मी सम्मोहन यंत्र" स्थापित करें तथा चारों स्वस्तिक पर एक एक "सुपारी" रखें। संक्षिप्त गुरु पूजन के बाद, यंत्र का पंचोपचार द्वारा पूजन करें। "आकर्षण माला" के द्वारा निम्न मंत्र का ५१ माल जप तीन दिन तक करें।

तीन दिन के पश्चात यंत्र पूजा स्थान में रहने दें और सुपारी जहां आप पैसे रखते हों वहां रख दें इस प्रकार लक्ष्मी सम्मोहित होकर साधक के लिए पूर्ण लाभप्रद सिद्ध होती है।

निधि विद्या भूगर्भ सिद्धि एवं अक्षय कोष सिद्धि हेतु धनाधीश कुबेर साधना

धनाधीश कुबेर समस्त पृथ्वी पर जो सम्पदा बिखरी हुई है, उसके अधिपति हैं, यही नहीं अपितु जमीन के अन्दर जितना भी धन, रत्न और सम्पदा छिपी हुई है, उसके अधिपति भी कुबेर हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति, जुआ द्वारा या लॉटरी अथवा अन्य श्रेष्ठ उपायों द्वारा लक्ष्मी की स्थायी प्राप्ति का आधार भी कुबेर को ही माना गया है। देवताओं और मनुष्यों के निवास करने योग्य जितनी भी पृथ्वी है, उस सारी पृथ्वी की सम्पदा के एक मात्र अधिपति देवता धनाधीश कुबेर है। भगवान् विष्णु भी लक्ष्मी को प्रसन्न रखने के लिए कुबेर को ही आधार मानते हैं, स्वर्णमयी लंका के निर्माण में कुबेर का महत्वपूर्ण हाथ रहा है, कुबेर ही सही अर्थों में लंका के अधिपति थे, और ब्रह्मा ने स्वयं अपने हाथों से उन्हें पुष्पक विमान भेंट किया था।

पुराणों के अनुसार महर्षि पुलस्त्य के पुत्र योगीराज विश्रवा ने भारद्वाज की कन्या इलविला से विवाह किया था, और इसी से कुबेर की उत्पति हुई थी, बाल्यावस्था से ही कुबेर भगवान् ब्रह्मा के साधक बने और ब्रह्मा की साधना कर उन्होंने विशेष सिद्धि प्राप्त की ब्रह्मा ने इन्हें संसार की समस्त सम्पत्ति का अधिकारी बनाया और कैलाश पर्वत के समीप अलकापुरी के ये स्वामी बने।

सही अर्थों में देखा जाय तो वेदों और पुराणों में लक्ष्मी की साधनाएं कम दी गई हैं, इसकी अपेक्षा कुबेर साधना पर विशेष बल दिया गया है, उनके अनुसार यदि जीवन में पूर्ण ऐश्वर्य प्राप्त करना है, तो कुबेर साधना के द्वारा ही संभव है। इस साधना के तीन लाभ महर्षियों ने बताये हैं -

१. कुबेर साधना सिद्ध करने से धनाधीश कुबेर प्रसन्न होते हैं, और साधक के जीवन में सभी दृष्टियों से समृद्धता एवं सफलता प्रदान करते हैं।

२. कुबेर साधना के द्वारा साधक को विशेष सिद्धि प्राप्त हो जाती है, जिसे "भूगर्भ सिद्धि" कहा गया है, इसके द्वारा साधक का जमीन के अन्दर छिपे हुए खज़ाने का पता चल जाता है, उसे यह पता चल जाता है, कि कहां पर कितनी गहराई में कितना स्वर्ण भण्डार या द्रव्य गड़ा हुआ है, और उसको किस प्रकार से निकाला जा सकता है।

३. इस साधना के द्वारा साधक के जीवन में "अक्षय कोष सिद्धि" प्राप्त होती है, वह ज्यों ज्यों खर्च करता है, त्यों त्यों उसकी सम्पत्ति बेतहाशा बढ़ती ही जाती है, यह पता ही नहीं चलता, कि इतना धन कहां से आ रहा है और किस प्रकार से आ रहा है, यह इस साधना की सिद्धि का चमत्कार है।

मेरा अनुभव

मेरे पिताजी वीतरागी थे, मेरी मां की मृत्यु के बाद उन्होंने संन्यास धारण कर लिया था, उनके जीवन में मैं अकेला ही पुत्र था, परन्तु वे अधिकतर हिमालय में ही विचरण करते रहते थे, नवीन स्थानों का पता लगाना, उच्चकोटि के योगियों और संन्यासियों से मिलना उनका स्वभाव था, हिमालय में ही उन्होंने तीन बार मानसरोवर की यात्रा की थी और पूरे कैलाश पर्वत की परिक्रमा कर अलकापुरी पर्वत पर

विचरण किया था।

कुबेर के गन्धमादन पर्वत पर विचरण करते समय मेरे पिताजी की एक वृद्ध संन्यासी से भेंट हुई थी और उन्होंने मेरे पिताजी को धनाधीश कुबेर साधना सम्पन्न करवा दी थी, उन्होंने बताया था कि इस साधना से जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव रहेगा ही नहीं। रवाना होते समय उस ऋषि ने मेरे पिताजी को एक लाल झोली भेंट कर दी थी, जिसे मेरे पिताजी बगल में रखते थे, परन्तु वह छोटी सी झोली, जो उनके बगल में दबी रहती थी, अपने आप में चमत्कारिक थी, वे उसमें से जितना भी द्रव्य निकालते, झोली खाली होती ही नहीं थी, उन्होंने अपने जीवन में ३२ भण्डारे किये थे और एक एक बार में हजारों लाखों साधु सन्यासियों को भोजन करवाया था। लोग देखते कि वे फक्कड़ आदमी थे, अपने पास एक दण्ड, एक लंगोटी और उस झोली के अलावा कुछ भी नहीं रखते थे, परन्तु फिर भी उन्हें यह विशेष सिद्धि प्राप्त थी कि वे उस झोली में से जितना भी द्रव्य निकालते वह झोली खाली ही नहीं होती थी, यह तो मैंने अपनी आंखों से देखा था और हजारों बार अनुभव किया था।

अंतिम समय में वे घर पर आ गये थे और मुझे लगभग डेढ़ वर्ष तक लगातार उनकी सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, उन्हें भूगर्भ सिद्धि प्राप्त थी। कई लोगों के घर में छिपी हुई निधि को उन्होंने निकलवाया था, उन्हें इस बात का इतना अच्छा अभ्यास था, कि वे जमीन में गड़ी हुई सम्पति का प्रामाणिक विवरण दे देते थे, और साथ ही साथ वे उस विशेष स्थान को बता देते थे, जहां सम्पति गड़ी हुई होती थी और यह भी बता देते थे कि वह सम्पति कितनी गहराई में गड़ी हुई है और किस प्रकार से निकाली जा सकती है।

अपने अंतिम दिनों में वे अत्यन्त कमजोर हो गये थे, एक दिन उन्होंने कुबेर साधना की चर्चा की और बताया कि वह साधना यों तो कभी भी सम्पन्न की जा सकती है, पर ग्रहण के समय दीपावली या महालक्ष्मी जयन्ती के अवसर पर **या किसी भी अमावस्या को** इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

साधना विधि

मेरे पिताजी ने जिस प्रकार से मुझे इसका प्रयोग और विधि समझाई थी वह अपने आप में महत्वपूर्ण है। मैंने अनुभव किया है कि धन प्रदायक साधनाओं में यह सर्वश्रेष्ठ और अपने आप में अद्वितीय है। वास्तव में ही जो दुर्भाग्यशाली होते हैं, वे ही ऐसे अवसर को हाथ से जाने देते हैं। साधकों को चाहिए कि वे वर्ष में जब भी अवसर मिले, इस साधना को तो अवश्य ही सम्पन्न करें।

साधक प्रातः काल स्नान कर शुद्ध पीले वस्त्र धारण कर अपनी पत्नी के साथ या अकेले पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और सामने एक पात्र में जो कि स्टील या लोहे का न हो, केसर से स्वस्तिक का चिन्ह बनावे उस पर चावलों की ढेरी बनाकर उस ढेरी पर एक छोटा सा पात्र या कटोरी रख दें और उस में **कुबेर यंत्र** को स्थापित कर दें, यह मंत्र रावण संहिता के अनुसार सिद्ध और चैतन्य होना चाहिए यदि संभव हो तो इसके साथ ही **कुबेर चित्र** भी स्थापित कर दें। कुबेर यंत्र के चारों ओर **चार महालक्ष्मी फल** स्थापित करना अतिआवश्यक ही है।

शास्त्रों में बताया गया है, कि श्वेत वर्ण, मोटा शरीर, अष्ट दन्त एवं तीन चरणों वाले गदाधारी कुबेर अत्यन्त ही सुन्दर दिखाई देते हैं, इनके अनुचर यक्ष निरन्तर इनकी सेवा में बने रहते हैं, अप्सरायें इनके सामने नृत्य करती रहती हैं और इनका सारा शरीर स्वर्ण तथा रत्नों से आच्छादित है।

यदि चित्र नहीं हो तो यंत्र को तो स्थापित कर ही दें फिर सामने आटे का चार मुंह वाला दीपक लगाकर उसमें घी भर लें और चार बत्तियां लगा लें, जिसे चौमुहा दीपक कहते हैं।

इसके बाद साधक सबसे पहले संक्षिप्त गणपति पूजन करें। सामान्य भाव से लक्ष्मी का पूजन करें और फिर कुबेर चित्र का पूजन कर, उसे स्थापित करें। तत्पश्चात् निम्न यंत्र एक अन्य थाली में बनावे।

१६	१	१४	७
६	४	५	३
१५	९	२	८
१५	११	७	१३

यह चांदी की सलाका या किसी अन्य सलाका के द्वारा निर्मित करे, और इसकी पूजा करें। इसके बाद दोनों हाथ जोड़ कर भगवान् कुबेर का ध्यान करें।

ध्यान

मनुज बाह्य-विमानपरिस्थितिं गरूड़ रत्न निभं निधि नायकम्।

शिव-सखा मुकुटादि-विभूषितं,वर-गदे दधतं भज तुन्दिलम्।

इस प्रकार से ध्यान सम्पन्न कर फिर हाथ में जल लेकर विनियोग करें

विनियोग

ॐ अस्य श्री कुबेर मंत्रस्य विश्रवा ऋषिः, बृहती छन्दः। कुबेरः देवता, अक्षय निधि सिद्धये जपे विनियोगः।

तत्पश्चात् ऋष्यादि-न्यास करें -

विश्रवा ऋषये नमः शिरसि, बृहती छन्द से नमः मुखे

कुबेर देवतायै नमः हृदि, अक्षय निधि

सिद्धये जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

ऐसा करने के बाद साधक निम्न प्रकार से अपने शरीर को स्पर्श करता हुआ अंग न्यास करे -

षडंग न्यास, कर न्यास, अंग न्यास

ॐ यक्षाय अंगुष्ठाभ्यां नमः हृदयाय नमः

ॐ कुबेराय तर्जनीभ्यां स्वाहा शिरसे स्वाहा

ॐ वैश्रवणाय मध्यमाभ्यां वषट् शिखायै वषट्

ॐ धनधान्याधिपतये अनामिकाभ्यां हुं कवचाय हुं

ॐ अक्षय निधि

समृद्धिं मे कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् नेत्र त्रयाय वौषट्

ॐ देहि द्रापय करतल कर पृष्ठाभ्यां फट् अस्त्राय फट्

इसके बाद **शुद्ध स्फटिक माला** से भगवान् कुबेर का गोपनीय मंत्र आठ माला मंत्र जप सम्पन्न करे। यह मुझे मेरे पिताजी ने अत्यन्त गोपनीय ढंग से दिया था जो कि अपने आप में दुर्लभ और अद्वितीय रूप से चमत्कारिक है।

कुबेर मंत्र

ॐ यक्षाय कुबेराय धन - धान्याधिपतये अक्षय निधि समृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा।

जब मंत्र जप पूरा हो जाय तब इसी मंत्र की १०८ शुद्ध घृत की आहुतियां दे दें, और उस माला को अपने गले में धारण कर लें और यंत्र को जहां रुपये पैसे रखते हैं, वहां पर स्थापित कर दें। यदि संभव हो तो किसी कन्या को या ब्राह्मण को अपने घर में बुलाकर भोजन करवा दें, ऐसा करने पर यह प्रयोग सिद्ध होता है। महालक्ष्मी फलों को पीले वस्त्र में बाँध कर तिजोरी में भी जहाँ धन रखते हों, वहाँ स्थापित कर दें।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त दुर्लभ और महत्व पूर्ण है, कई साधक तो प्रत्येक अमावस्या को यह प्रयोग सम्पन्न करते हैं। कहा जाता है कि जो एक वर्ष तक प्रत्येक अमावस्या को यह प्रयोग सम्पन्न कर लेता है, उसकी आगे की सात पीढियां पूर्ण संपन्न और सुख सौभाग्य युक्त बनी रहती हैं।

ज्ञान रस से सराबोर

वर्ष १९९१ के अद्वितीय बारह अंक

ज्ञान रस से सराबोर मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान के वर्ष ९१ के अद्वितीय बारह अंक

जिनमें गूढ़ ज्ञान, दुर्लभ सामग्री प्रकाशित है, पूर्ण वैज्ञानिक विवेचन के साथ।

जो झकझोर कर रख देगी आपको और आपकी आस्थाओं को।

जिसका एक एक पन्ना जीवन्त दस्तावेज है, गुरु कृपा है धरोहर है भावी पीढ़ियों के लिए दर्शन है ज्ञान का, प्रक्रिया है जागरण की।

सौभाग्यशाली हैं आप जिन्हें गुरु अमृत वचनों का यह अमृत पान प्रत्यक्ष प्राप्त हो रहा है।

सबसे पहले देखिए, परखिए, कुछ झलकियों को जो पूर्ण साज सज्जा के साथ आतुर हैं, आप के हाथों में पहुंचने को

१. तन्त्र के पंच मकार रहस्य

२. क्या साधना हेतु दीक्षा आवश्यक है?

३. वर्तमान जीवन में सारी समस्याओं का समाधान महाविद्या साधनाओं से ही है।

४. सात अद्वितीय टोटके जो अपने आप में अचूक हैं।

५. आइये अदृश्य अशरीरी शक्ति को वश में करें।

६. रूप एवं यौवन चुराने का क्षण आ गया है।

७. क्या सिद्धाश्रम की अशरीरी आत्माएं "सिद्धाश्रम साधक परिवार" के शिष्यों को संदेश भेजती है।

८. दुर्गा को तो प्रत्यक्ष किया जा सकता है।

९. सिद्धि पुरुष बनने की अपूर्व अलौकिक "शैव साधना"।

१०. सौ सौ कार्य खुद-ब-खुद सम्पन्न हो जाते हैं इस अद्वितीय मणि माला से।

११. हिमालय की दुर्गम यात्राएं तो सूक्ष्म शरीर से ही सम्भव हैं।

१२. आज भी सोलह कला पूर्ण व्यक्तित्व हमारे बीच हैं।

१३. कर्ण पिशाचिनी सिद्धि।

१४. जीवन का नव निर्माण करना है तो सम्पन्न करे कामख्या तंत्र साधना।

१५. जीवन में सफलता के पांच सुगन्ध सूत्र।

१६. सन्तान प्राप्ति का नागार्जुन प्रयोग।

१७. नाथ सम्प्रदाय की अदभुत हठ योग साधना।

१८. अठ्ठारह सिद्धियां जो पूरे साधना ग्रन्थों का निचोड़ हैं।

१९. पारद श्री यन्त्र, लक्ष्मी आबद्ध की श्रेष्ठतम प्रक्रिया।

२०. कायाकल्प संभव है इस धन्वन्तरी प्रयोग से।

अन्य भी बहुत कुछ..................

प्राप्ति स्थान

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान

डा. श्रीमाली मार्ग हाईकोर्ट कालोनी

जोधपुर ३४२००१ (राज.)

आप केवल ०२९१-३२२०९ पर सामग्री लिखा दें, हम आप पर विश्वास करते हुए वी.पी. से आपकी मनचाही सामग्री भिजवा देंगे।

शशिदेव्य अप्सरा साधना
जीवन में छलछलाहट लाने की क्रिया

प्रेमिका के रूप में शशिदेव्य अप्सरा सिद्ध होने पर पूर्ण श्रृंगार युक्त हो कर आपके आंखों के सामने रहती है, देवताओं को भी सम्मोहित करने वाली इस अप्सरा की साधना अपने आप में एक सौभाग्य है।

अप्सरा से संबंधित जितनी भी साधनाएं है, उनमें शशि देव्य अप्सरा साधना अपने आप में सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय मानी गई है, क्योंकि शशिदेव्य अप्सरा अत्यन्त दयालु स्वभाव की है और शीघ्र ही सिद्ध होकर प्रत्यक्ष उपस्थित हो जाती है इस साधना को सिद्ध करने के बाद शशिदेव्य अप्सरा जीवन भर साधक के नियंत्रण में रहती है और साधक जो भी आज्ञा देता है, उसका मनोयोग पूर्वक पालन करती है। शशिदेव्य अप्सरा साधक को प्रेमी के रुप में ही अनुभव करती हैं, और निरन्तर उसे वस्त्र, धन, आभूषण और सुख प्रदान करती रहती है। उसकी निर्धनता को हमेशा हमेशा के लिए समाप्त कर देती है, और उसे अपने जीवन में संपन्न और ऐश्वर्य वान बना देती है। शशिदेव्य अप्सरा अत्यधिक सुन्दर तेजस्वी और सौन्दर्य की साकार प्रतिमा है, अत्यन्त नाजुक, कमनीय और षोडस वर्षीय युवती के रूप में साधक के सामने सज धज कर बराबर बनी रहती है और साधक चाहे तो दृश्य रूप में और वह चाहे तो अदृश्य रूप में उसके सामने रहती है, और उसका कार्य करके प्रसन्नता अनुभव करती है।

आज के युग में मेरी इन पंक्तियों को पढ़ कर सामान्य व्यक्ति विश्वास नहीं करेगा, जिनको बुद्धि का अजीर्ण है, जो संसार में अपने आपको ही बुद्धिमान समझ बैठे हैं उन को तो भगवान भी नहीं समझा सकता जो पग-पग पर आलोचना करने में ही अपनी शान समझते हैं, उनको साधना के बारे में कुछ बताना बेकार है। भर्तृहरी ने एक स्थान पर कहा है कि उल्लू दिन को अपनी आंखें बन्द किये रहता है, और उसको यदि पूछा जाय तो वह दृढ़ता के साथ यही कहता है, कि आकाश में सूर्य उगता ही नहीं, या सूर्य जैसा कोई देवता है ही नहीं और सूर्य से किसी प्रकार का प्रकाश रोशनी नहीं होती, तो इसमें सूर्य का क्या दोष ? ठीक इसी प्रकार आज के वातावरण में सांस लेने वाले साधक भी इसी प्रकार से यदि अविश्वास की दीवार पर खड़े हो कर कहें कि साधना होती ही नहीं या अप्सरा के प्रत्यक्ष दर्शन संभव नहीं तो इसमे तपस्वियों शास्त्रों और गुरू का क्या दोष ?

अप्सरा साधना प्रयोग

अप्सरा साधना संभव है, और इसे कोई भी साधक मनोयोग पूर्वक सम्पन्न कर सकता है। जब मुझे इस साधना से लाभ हुआ है, जब मैंने इस साधना से सफलता पाई है तो आप भी सफलता पा सकते हैं। यह साधना कठिन

शशिदेव्य अप्सरा अत्यधिक सुंदर तेजस्वी और सौन्दर्य की साकार प्रतिमा है। अत्यंत नाजुक, कमनीय और षोडश वर्षीय युवती के रूप में साधक के सामने सजधज कर बराबर बनी रहती है, साधक चाहे तो दृश्य रूप में और चाहें तो अदृश्य रूप में।

नहीं है, आवश्यकता इस बात की है, कि आपमें विश्वास हो, धैर्य हो, अपने मार्गदर्शक या गुरु के प्रति आस्था हो और हमारे शास्त्रों के प्रति विश्वास हो, क्योंकि विश्वास के द्वारा ही जीवन में सब कुछ संभव है। जो प्रयत्न करता है, वह सफल हो जाता है।

किसी भी युद्ध को बिना अस्त्र-शस्त्र के नहीं जीता जा सकता ठीक इसी प्रकार साधना में यंत्रों की आवश्यकता होती है और उसके द्वारा ही साधना के युद्ध को जीता जा सकता, और सफलता प्राप्त की जा सकती है।

पत्रिका में प्रत्येक साधना के साथ सामग्री का विवरण और उसकी न्यौछावर अंकित होती है, इसके पीछे कोई स्वार्थवृत्ति नहीं है, इसके दो मूल कारण है, एक तो यह कि केवल साधना ही लिख दी जाय और साधना सामग्री के बारे में विवरण नहीं हो तो साधक दिग्भ्रमित हो जाता है, उसे समझ में नहीं आता किस प्रकार से साधना सम्पन्न की जाय, और दूसरे जहां साधना सामग्री का विवरण होता है, वहां उसकी न्यूनतम न्यौछावर भी इसलिए अंकित कर दी जाती है कि साधक को व्यर्थ का पत्राचार न करना पड़े। इससे काफी समय व्यर्थ में ही बरबाद हो जाता है।

पत्रिका, श्रेष्ठ पंडितों के द्वारा प्रत्येक यंत्र को मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठा युक्त करके भेजने की व्यवस्था करती है और यह भी प्रयत्न करती है कि कम से कम व्यय आये फिर भी आज के युग में पंडितों की दक्षिणा और पूजन सामग्री आदि के भाव इस कदर बढ़ गये हैं, कि उस पर अधिक व्यय आ ही जाता है। फिर भी हमारा यह प्रयत्न होता है साधकों को प्रामाणिक सामग्री एक स्थान से मिल सके और वे साधना सम्पन्न कर इसका लाभ उठा सके।

शशिदेव्य साधना प्रयोग

यह अप्सरा साधना मात्र आठ दिनों की साधना है, किसी भी शुक्रवार से यह साधना प्रारम्भ की जाती है, और अगले शुक्रवार को यह साधना सम्पन्न हो जाती है। इसमें यह आवश्यक नहीं है कि एक ही स्थान पर बैठ कर साधना सम्पन्न की जाय, यदि आपको इस अवधि में किसी अन्य स्थान पर जाना पड़े तो वहां पर बैठ कर के भी रात्रि में इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है, यह रात्रि कालीन साधना है और इसको रात में ही सम्पन्न करना चाहिए।

इस साधना में किसी विशेष प्रकार के वस्त्र या आसन आदि की आवश्यकता नहीं है, साधक चाहे तो धोती या अन्य किसी भी प्रकार के वस्त्र धारण कर इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। साधना काल में अपने शरीर पर गुलाब का इत्र लगा कर साधना में बैठें तो ज्यादा उचित रहता है।

सामने किसी पात्र में गुलाब की पंखुड़ियां बिछाकर (गुलाब न हो तो अन्य किसी भी प्रकार के सुगन्धित पुष्प का उपयोग हो सकता है) उस पर **शशिदेव्य अप्सरा यंत्र** को स्थापित कर दें। यह यंत्र अत्यन्त ही महत्वपूर्ण माना गया है, इस यंत्र को गुलाब की पंखुड़ियों पर स्थापित कर उस पर केसर का तिलक करे और फिर अपने दाहिने हाथ पर बांये हाथ से केसर से "शशिदेव्य अप्सरायै नमः" अक्षर लिखे और फिर दाहिने हाथ से ही हकीक माला के द्वारा मंत्र जप करे। इसमें अप्सरा माला का प्रयोग करना चाहिए।

शशिदेव्य अप्सरा अत्यंत सुंदर और दयालु स्वभाव की है जो शीघ्र ही सिद्ध हो जाती है। यदि साधक पुष्य नक्षत्र में इस साधना को करें तो सफलता प्राप्ति की संभावना बढ़ जाती है।

सबसे पहले अपनी आंखों के सामने अत्यंत सुन्दर, आकर्षक मन मोहक अप्सरा का चिन्तन करें, और फिर निम्न प्रकार से उसका ध्यान और आह्वान करे।

त्रैलोक्य मोहिनी गौरी विचित्राम्बर-धारिणी
विचित्रालंकृता रम्या नर्तकी-वेष धारिणीम्।
पूर्ण चन्द्राननां गौरी विचित्राम्बर-धारिणी
पीनोन्नत-कृता-रामां सर्वज्ञामभ्य-प्रदाम्।
कुरंग नेत्रां शरविन्दु-वक्त्रां विम्बाधरां चन्दन गन्ध-माल्यां।
चीनांशुकां पीन-कुचां मनोज्ञा दिव्या सदा काम-करां विचित्राम्।

ध्यान के बाद निम्न मंत्र की ५१ माला मंत्र जप करें

मंत्र

ॐ ह्रीं आगच्छागच्छ शशिदैव्य अप्सरायै नमः।

५१ माला मंत्र जप होने के बाद साधक विश्राम करें, इस प्रकार नित्य करे, पर अपने साधना के रहस्य किसी को न बतावे, यदि इन आठ दिनों में कुछ दृश्य दिखाई भी दे तब भी किसी को न कहे।

अगले आठवें दिन शुक्रवार की रात्रि को अत्यन्त सुन्दर आकर्षक मनमोहक शशिदेव्य अप्सरा साधक के सामने सशरीर उपस्थिति होती है, और वह साधक के पास ही घुटनों से घुटना सटा कर बैठ जाती है, और लज्जा के साथ कहती है कि मैं तुम्हारे वश में रहूंगी, जब वह हाथ पर हाथ रख कर वचन दे, तब साधक अपने आसन से उठा, खड़ा हो और वह सामने पात्र में रखा हुआ **शशिदेव्य अप्सरा यंत्र** स्वच्छ वस्त्र में लपेट कर किसी गुप्त स्थान पर रख दें। जब भी उस यंत्र को स्पर्श कर पीछे दिये हुए मंत्र का मात्र ११ बार उच्चारण किया जायेगा तब वह प्रत्यक्ष प्रगट होगी और उसे जो भी कार्य सौंपा जायेगा वह अवश्य ही पूर्ण करेगी। इस साधना को किसी भी आयु का साधक सिद्ध कर सकता है। यह साधना पूर्णतः प्रामाणिक है।

जिनके घर तंतर नारेल
लक्ष्मी जी का ऐल फेल

जिसने तंतर नारेल साजा, क्या करेगा बिगड़ा राजा

सम्पूर्ण जीवन का सौभाग्य तांत्रोक्त नारियल

उत्तर प्रदेश के महत्वपूर्ण नगर वाराणसी से थोड़ी ही दूरी पर स्थित है मां विंध्यवासिनी का प्राचीन मंदिर। मंदिर न कह कर चैतन्य शक्तिपीठ कहना ही अधिक उचित होगा। तांत्रिकों की तीर्थ स्थली, जो कामाख्या तक नहीं जा सकते वे यहीं आकर कृत्य कृत्य हो उठते हैं, बगल में बहती हुई गंगा, योगियों, तपस्वियों की मां। इसमें वे इसी प्रकार किलोल करते हैं, जैसे मां की गोद में शिशु। ऊँची-ऊँची पहाड़ियों से घिरी तप: स्थली और मां का आश्वस्त करता चैतन्य धड़कता विग्रह। आस-पास फैली गुफायें-मानों मां ने अपने आने वाले लाड़लों के लिये स्वयं रुचि ले लेकर बनाया हो। सम्पूर्ण वातावरण अद्भुत अलौकिक रमणीक।

उन्हीं दिनों परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के दर्शन की इच्छा लेकर मैं वाराणसी आया। सुना था वे दशाश्वमेघ घाट पर चिता साधना में तल्लीन हैं। मेरी इच्छा उनके दर्शन करने की हो उठी थी। उनके अद्भुत आत्मलीन फक्कड़ व्यक्तित्व की चर्चा योगियों के मध्य विस्मय और अत्यंत श्रद्धा से होती सुन मैं उनका शिष्य बनने को आतुर हो उठा। मैं वाराणसी पहुंचा, उन्होंने कहा इस समय मैं अपनी साधना में लीन हूं, अत: चार माह बाद मिलना। उसके बाद ही वे दीक्षा देकर साधना रहस्य समझायेंगे। मैं ऊहापोह में पड़ गया कि अब चार माह कैसे व्यतीत करूं। उन्होंने मेरी ऊहापोह देखकर मुझे सामान्य गुरु दीक्षा दे दी और कहा विंध्यवासिनी देवी के क्षेत्र में जाकर साधना करो। उस चैतन्य भूमि में दो-चार माह रहने से स्वत: ही परिवर्तन अनुभव करोगे।

"तांत्रोक्त नारियल" साधना क्षेत्र में अत्यन्त उपयोगी है। इसकों पास रखने से भूत प्रेत बाधा, तांत्रिक प्रभाव व अन्य किसी भी प्रकार का भय व्याप्त हो ही नहीं सकता।

गुरुदेव की आज्ञा लेकर मैं वाराणसी से विंध्यवासिनी देवी के मंदिर की ओर प्रस्थान कर गया। वहां पहुंच कर शक्ति पीठ या दर्शन किये और साधना हेतु उपयुक्त स्थान खोज अपनी साधना में तल्लीन हो गया। गंगा के तट पर खुले आकाश के नीचे मेरा निवास था। भिक्षाटन से जो कुछ मिलता उससे उदरपूर्ति करके मैं शेष समय अपनी साधना में व्यतीत करता। वर्षा का काल निकल चुका था किंतु जाड़ा आने में विलम्ब था इसी से मौसम अत्यन्त सुखद था। कुछ दिन बाद मैंने अनुभव किया कि तीर्थ स्थान होने के कारण वहाँ आगमन अधिक रहता है जो साधना के लिये अनुकूल नहीं। साधना की गोपनीयता भंग हो जाने का भी भय बना रहता था। मैंने यही बात वहीं पर भजन पूजन में लीन वयोवृद्ध साधु श्री भोलानाथ जी से कही। वे मेरी बात से सहमत थे और उन्होंने ही मुझे सुझाव दिया कि मैं थोड़ी दूर पर स्थित कालीखोह की ओर चला जाऊं। वह स्थान तांत्रिक साधनाओं की ऊर्जा से भरा हुआ है। क्योंकि देश के श्रेष्ठ साधक व साधिकायें इस स्थान पर तांत्रोक्त ढंग से साधनाओं में लीन है। प्राकृतिक रूप से भी वह क्षेत्र ऐसा है कि व्यक्ति सहज ही एकांत वास का सुगम स्थान ढूंढ सकता है।

मुझे उनकी वाणी में गुरुदेव का ही संकेत मिला और मैं उनसे विदा लेकर काली खोह की ओर बढ़ गया। सचमुच पूरा का पूरा क्षेत्र तप की ऊर्जा से भरा हुआ है। प्रारम्भ के दो तीन दिन तो कौतूहल वश वहां के स्थान देखने में निकल गये। तीसरे दिन जब मैं भिक्षा मांग कर वापस अपने स्थान पर लौट रहा था तो ठीक उसी स्थान से जहां से घने जंगल आरम्भ होते थे मुझे एक स्वस्थ व आकर्षक लगभग २४-२५ वर्ष की युवती खड़ी मिली। उसका कद मझोला और रंग गेहुंआ था। चेहरा अंडाकार लावण्य, और ममता से भरा हुआ। उसने घाघरा और चोली पहन रखी थी। उसकी वेशभूषा से कोई भड़कीलापन नहीं टपक रहा था। उसकी आंखों में अत्यधिक सौन्दर्य और चुम्बकत्व भरा था, जिसे वह सहज ही अपनी ओर मानों खींच रही थी। मुझे देखकर वह यूं मुस्कराई मानों मेरी ही प्रतीक्षा कर रही है, और मुझसे वर्षों से परिचित है। मैं अचकचा गया। उसने सहज भाव से पूछा "संन्यासी हो? साधना करने आये हो?'' मैं उसकी ओर इस तरह से सम्मोहित सा देख रहा था कि सिर हिलाकर ही उत्तर दे सका। उसने मुझसे मेरा नाम तो नहीं पूछा लेकिन यह अवश्य पूछा कि तुम किसके शिष्य हो? जब मैंने पूज्यपाद गुरुदेव का पूरा नाम उच्चरित किया तो उसके चेहरे पर एक अत्यन्त मधुर मुस्कान फैल गयी, जैसे कोई अपने गहन परिचित का नाम सुनकर खुश हो उठता है। वह बोली, "हां मैंने भी उनका नाम सुना है। सुना है वे साधना में जितनी उच्च स्थिति पर है उतने ही दृढ़ और कठोर भी है।'' अब मैं इस विषय में क्या कहता? चुप ही रह गया। उसने अपना परिचय इस रूप में दिया कि वह भी इसी क्षेत्र में साधना में संलग्न है और स्नेह से पूछा कि साधना के लिए क्या कोई उपयुक्त स्थली ढूंढी। मैं उस समय तक इधर-उधर ही भटक रहा था। कोई निश्चित स्थान नहीं पाया था। तब उसने स्वयं ही मुझे एक स्थान बताया और कहा उस स्थान को देख लो, हो सकता है तुम्हें भा जाय। उसने यह भी कहा कि वह यहां पर थोड़ी ही दूर पर कहीं गुप्त स्थान में साधनारत है, किन्तु मुझसे मिलने का अवसर आता रहेगा। मैं उसके अचानक स्नेह से हतप्रभ था।

मैंने उसके बताये स्थान पर जाकर पाया कि सचमुच वह स्थान प्रकृति ने साधना के लिये ही निर्मित किया था। एक जीर्ण शीर्ण शिवालय, उसके सामने मिट्टी के ऊँचे-ऊँचे टीले जिनके पीछे वर्षा का पानी इकट्ठा होकर एक कृत्रिम झील सी बन गई थी। चारों ओर उगे जंगली वृक्ष, झाड़ियां व खरपतवार आदि। पूरी तरह से प्राकृतिक एवं सुरम्य वातावरण, जिसे देखकर मन स्वत: ही ध्यान में लीन होने लगे। यह स्थान पूरी तरह से मेरी कल्पना के अनुरूप था। मैंने आनन्द पूर्वक अपना आसन लगाया, और साधना प्रारम्भ कर दी। प्रारम्भ में तो मुझे गुरु साधना ही करनी थी जिससे कि आगे की साधनाओं के लिये यथेष्ट आधार बन सके। मैंने उस शिवालय को साफ किया, और उसमें मंत्र जप प्रारम्भ किया। मैंने सायं के झुटपुटे में मंत्र जप आरम्भ किया था और धीरे-धीरे करके रात गहरा गई। बाहर मैंने कुछ लकड़ियों का प्रकाश कर रखा था। जिसकी धुंधली रोशनी शिवालय तक आ रही थी। प्राय: ७-८ बज चुका होगा। और मेरा मंत्र जप आगे बढ़ रहा था। कभी-कभी कोई जंगली पशु आवाज करता हुआ निकल जाता लेकिन मुझे कोई विशेष भय नहीं लगता। धीरे-धीरे रात का ११-१२ बजे का समय हो गया। मुझे ऐसा लगा मेरे चारों ओर कुछ पदचाप हो रहे हैं और कानाफूसी हो रही है। मैं प्रारम्भ में तो नहीं समझा किन्तु शीघ्र ही श्मशान साधना के अपने अनुभवों से समझ गया कि हो न हो ये भटकी हुई आत्माएं हैं, जो इस एकान्त में शिवालय में वास करती हैं, और मुझे पाकर के क्रुद्ध हो रही हैं। मैंने पूज्य गुरुदेव का स्मरण किया, वातावरण एक विचित्र प्रकार की दूषितता से ग्रस्त हो गया था जिससे मैं अपना मंत्र जप अधूरा ही छोड़कर शिवालय के बाहर लगे अपने आसन पर जाकर लेट गया, और पूज्य गुरुदेव के चिंतन में लीन हो गया। रात्रिकाल का लगभग दो बज चुका था, और उसी खिन्न अवस्था में मुझे हल्की सी नींद आ गई।

कोई २४-२५ की उम्र, अंडाकार लावण्य से भरा चेहरा, खूब बड़ी-बड़ी गहरी काली आँखे, चुम्बकीयता से भरी। मुझे देखकर बोली-संन्यासी हो, साधना करने आये हो ? मैं ठक् से रह गया।

थोड़ी देर बाद जब मेरी आंख खुली तो ऐसा लगा मानों मेरे सीने पर एक नहीं बल्कि दो-दो व्यक्ति चढ़े हैं, एक मेरे गले को दबा रहा है, और दूसरा पैरों को उमेठ रहा है। मैं हिल भी नहीं सकता था, बोल भी नहीं सकता था। छटपटा कर इतना ही चीख सका गुरुदेव! गुरुदेव!! मेरे इस आर्तनाद के बाद दबाव तो हट गया लेकिन मेरी नींद रात भर के लिये गायब हो गई। शेष रात मैंने बड़ी बैचेनी से काटी और सुबह होते ही सीधा उस स्थान पर गया जहां मेरी भेंट उस योगिनी से हुई थी। वह भी मेरी ही प्रतीक्षा में बैठी थी, मैंने उसे रात की सारी घटनाएं बताई और बताया कि किस तरह से पूज्य गुरुदेव ने मेरे प्राणों की रक्षा की। वह योगिनी जिसने बाद में अपना नाम सुंदरी बताया, कुछ भौंचक सी रह गई और मुझसे मेरी साधना के विषय में विस्तार से पूछा। उसने विशेष जोर देकर यह पूछा कि क्या तुम अपने साधना में तांत्रोक्त नारियल लेकर बैठते हो? मैंने तो यह तांत्रोक्त नारियल शब्द पहली बार सुना था। अत: मूर्खों की तरह उसकी ओर देखने लगा। वह भी आश्चर्य से देख रही थी, कि यह कैसा साधक है, जो तांत्रोक्त नारियल

से अपरिचित है, उसका नाम तक भी नहीं जानता। उसने जैसे मुझ पर तरस खाकर कहा अच्छा शाम को मिलना।

शाम को वह प्रसन्न मुद्रा में लगभग दौड़ती हुई मेरे पास आई और अपनी घाघरे में बनी जेब से मुझे नारियल के समान लगभग गोल सी एक वस्तु दी। उसका रंग सामान्य नारियलों के रंग से हटकर था। उस पर एक ओर नाक सी उठी थी और उसके नीचे एक छिद्र था, जैसे मानव मुख। उसने कहा मैं बड़ी कठिनाई से तुम्हारे लिये खोजकर यह तांत्रोक्त नारियल लाई हूं। एक साधक के लिये उसके जीवन में यह परम आवश्यक होता है इसको पास रखने से भूत प्रेत बाधा, तांत्रिक प्रभाव, भय व्याप्त हो ही नहीं सकता। मैं उसके निश्छल प्रेम से अभिभूत हो उठा। उसने मुझे मीठी झिड़की दी, कि कम से कम साधना प्रारम्भ करने से पहले मोटी-मोटी बातें तो जान लिया करो।

सुंदरी ने कुछ दिन बीतने के बाद, जब मेरी साधना सहज रूप से गतिशील हो गई रहस्य खोला कि वह मेरे पूर्वजन्म की गुरु बहन है और हम दोनों ने साथ-साथ अनेक साधनायें सम्पन्न की थीं। पूज्य गुरुदेव ने उसे मेरे आने से पूर्व आगमन का संकेत दे दिया था और यह तांत्रोक्त नारियल भी उसे पूज्य गुरुदेव के माध्यम से ही प्राप्त हुआ था। बाद में तो सुंदरी ने मुझे बताया कि इसी तांत्रोक्त नारियल पर अनेक प्रयोग संभव है। **साबर साधनाओं में तो यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। गुरु गोरखनाथ जी की परम्परा में हुये साबर मंत्रों के श्रेष्ठ विद्वान् श्री उड़िया नाथ जी ने तो तांत्रोक्त नारियल से संबंधित १०८ साधनायें लेकर पूरा एक ग्रन्थ लिख डाला, यह दुर्लभ वस्तु केवल साधु संन्यासियों के लिये ही नहीं अपितु गृहस्थ लोगों के लिये भी पर्याप्त उपयोगी है, केवल उपयोगी ही नहीं अतिआवश्यक कहना अधिक उचित होगा। मैं संक्षेप में मंत्र सिद्ध और गुरु गोरखनाथ जी के मंत्रों से चैतन्य तांत्रिक नारियल घर रखने पर होने वाले लाभों को बताना चाहता हूं, जो मुझे सुंदरी से ज्ञात हुये।**

१. तांत्रोक्त नारियल घर में रहने से स्वतः लक्ष्मी का वास प्रारम्भ हो जाता है और आर्थिक अनुकूलता होने लगती है।

२. इस नारियल को घर में रखने से यदि घर पर किसी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग किया हुआ हो तो वह दूर हो जाता है।

३. इस नारियल को घर में रखने से भूत प्रेत पिशाच आदि का भय व्याप्त नहीं होता।

४. इस नारियल को घर में रखने से वातावरण शुद्ध बना रहता है और आकस्मिक धन प्राप्ति की संभावनायें बनती हैं।

५.जिसके घर में तांत्रोक्त नारियल रहता है उसके घर के व्यक्तियों में परस्पर प्रेम भाई चारा और आत्मीयता बनी रहती है।

६. इस तांत्रोक्त नारियल के घर में रहने से बालकों की बुद्धि शुद्ध और निर्मल आध्यात्मिक बनी रहती है।

७. जिसके घर में तांत्रोक्त नारियल होता है उसके पूरे जीवन में किसी प्रकार का भय व्याप्त नहीं होता, न घर में महामारी, बीमारी आती है।

८. यदि तांबे के पात्र में तांत्रोक्त नारियल रखकर उस पानी को घर में छिड़क दिया जाय तो सभी प्रकार के कष्ट और बीमारियां स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

९. यदि स्नान करने की बाल्टी में तांत्रोक्त नारियल डाल कर उस पानी से स्नान किया जाय तो किसी भी प्रकार की बीमारी समाप्त हो जाती है।

१०. यदि तांत्रोक्त नारियल को लाल कपड़े में बांध कर किसी लकड़ी के सहारे छत पर लटका दिया जाय तो हवा लगने से ज्यों ज्यों वह लाल कपड़ा फहरायेगा त्यों त्यों उसके घर में लक्ष्मी का वास और आर्थिक उन्नति होती रहेगी।

११. तांत्रोक्त नारियल के द्वारा गृहस्थ जीवन में अनुरूपता और एकता लाई जा सकती है इसके घर में रहने से लड़ाई झगड़े, मतभेद, आदि स्वयं समाप्त हो जाते हैं और गृहस्थ जीवन में पूर्णता अनुकूलता आने लगती है।

१२. जिस घर में तांत्रोक्त नारियल रहता है, उसके घर में समस्त प्रकार की सिद्धियां स्वतः वास करती रहती हैं, और ऐसे साधक को प्रत्येक प्रकार की साधना में शीघ्र लाभ होता है।

इसके अलावा भी तांत्रोक्त नारियल से कई प्रयोग सिद्ध किये जा सकते हैं। सुंदरी ने मुझे तांत्रोक्त नारियल पर तीन अत्यन्त उपयोगी प्रयोग बताये थे जिसमें व्यापार वर्धक प्रयोग, वशीकरण प्रयोग, एवं विद्वेषण प्रयोग था। सुंदरी को साबर साधनाओं में अद्भुत रूचि थी और कोई भी उसके पास रहकर सहज भाव से सीख सकता है।

Scanned by CamScanner

अप्सरा साधनायें ही क्यों?

हम सौन्दर्य की परिभाषा भूल गये हैं सौन्दर्य साधना हमारे जीवन में रही ही नहीं, धन के पीछे भागते हुए हम अर्थ लोभी बन गये हैं, जिससे जीवन की अन्य वृत्तियां लुप्त सी हो गई हैं।

सौन्दर्यात्मिका अप्सरा साधना मानव जीवन की एक श्रेष्ठ और अद्वितीय साधना है। जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ हमारे शास्त्रों में बताये हैं। इनमें से अर्थ और काम की पूर्णता अप्सरा साधना के माध्यम से ही संभव है और अप्सरा साधना के द्वारा जब अर्थ प्राप्ति पूर्णता के साथ सम्पन्न होती हैं, तो उसके द्वारा धर्म भावना संपन्न होती है और उसके द्वारा व्यक्ति मोक्ष प्राप्त कर जीवन को पूर्णता प्रदान कर देता है।

यह अप्सरा क्या है?

भारतीय शास्त्रों में सौन्दर्य को जीवन का उल्लास और उत्साह माना है, यदि जीवन में सौन्दर्य नहीं है तो वह जीवन नीरस और उदास हो जाता है, हम में से अधिकांश व्यक्ति ऐसा ही जीवन जी रहे हैं, हमारे होठों पर से मुस्कराहट खत्म हो गई है जिसके फलस्वरूप हम प्रयत्न करके भी खिलखिला नहीं सकते उन्मुक्त रूप से हंस नहीं सकते, मुस्करा नहीं सकते, एक प्रकार से हमारा जीवन बंधा हुआ सा बन गया है और एक जगह बंधे हुए पानी में सड़ांध पैदा हो जाती है, इसी प्रकार रुका हुआ जीवन निराश और बेजान हो जाता है।

इसका कारण हम सौन्दर्य की परिभाषा भूल गये हैं सौन्दर्य साधना हमारे जीवन में रही ही नहीं है, हम धन के पीछे भागते हुए एक प्रकार से अर्थ लोभी बन गये हैं, जिसकी वजह से जीवन की अन्य वृत्तियां लुप्त सी हो गई हैं।

इसके विपरीत यदि हम अपने शास्त्रों को टटोल कर देखें तो देवताओं ने और हमारे पूर्वज ऋषियों ने प्रमुखता के साथ सौन्दर्य साधनाएं संपन्न की हैं, सौन्दर्य को जीवन में प्रमुख स्थान दिया है, देवताओं की सभा इन्द्र सभा में नित्य अप्सराएं नृत्य करती थी। वशिष्ठ आश्रम में स्थायी रूप से अप्सराओं का निवास था। विश्वामित्र ने अप्सरा साधना के माध्यम से जीवन को पूर्णता प्रदान की थी, यही नहीं अपितु सन्यासी शंकराचार्य ने भी सौन्दर्यात्मिका शशिदेव्य अप्सरा साधना सम्पन्न करने के बाद अपने शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा था कि साधना के माध्यम से साधक को यह विश्वास हो जाता है कि उसका अपने मन पर और अपनी इन्द्रियों पर पूर्णतः नियंत्रण है इसके माध्यम से जीवन की वे प्रमुख वृत्तियां जो जीवन में आनन्द और हास्य का निर्माण करती है, वे वृत्तियां उजागर होती हैं, और मनुष्य दीर्घायु प्राप्त करने में सफल हो जाता है। इस साधना के माध्यम से व्यक्ति के जीवन में अर्थ सुख, आनन्द और तृप्ति की किसी भी प्रकार से कोई न्यूनता नहीं रहती।

जीवन में नारी शरीर के माध्यम से ही सौन्दर्य की परिभाषा अंकित की गई है। यूं तो शास्त्रों में १०८ अप्सराओं का विवरण वर्णन मिलता है, और इन सभी का साधनाओं के बारे में विस्तार से वर्णन है। अप्सरा, सौन्दर्य का साकार जीता जागता प्रमाण है। यदि यह प्रश्न पूछा जाय कि सौन्दर्य क्या है, तो उसे हम किसी अप्सरा के माध्यम से ही स्पष्ट अंकित कर सकते हैं। अप्सरा का तात्पर्य एक ऐसी देवत्वपूर्ण सौन्दर्ययुक्त सोलह वर्षीय नारी प्रतिमा से है, जो मंत्रों के माध्यम से पूर्णतः अधीन होकर साधक के दुःख में भी सुख की बिजली चमकाने में समर्थ होती है, उसके तनाव के क्षणों में आनन्द प्रदान करने की सामर्थ्य रखती है। वह नित्य शरीर साधक के साथ दृश्य और अदृश्य रूप में बनी रहती है और प्रियतमा के रूप में

इसके माध्यम से जीवन की वह प्रमुख वृत्तियाँ जो जीवन में हास्य और आनन्द का निर्माण करती हैं, वे वृत्तियाँ उजागर होती हैं और मनुष्य दीर्घायु प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

उसकी प्रत्येक प्रकार की इच्छा पूर्ण करती रहती है।

प्रिय का तात्पर्य प्रदान करना होता है, जो लेने की इच्छा नहीं रखता, जिसमें केवल सामने वाले को सुख और आनन्द देने को ही भावना होती है। और अप्सरा अपने विचारों से अपने कार्यों से अपने व्यवहार से और अपने साहचर्य से साधक को वह सब कुछ प्रदान करती है, जो उसकी इच्छा होती है।

और यह इच्छा साधक के विवेक पर निर्भर है, यह आवश्यक नहीं है, कि अप्सरा केवल भोग्या के रूप में ही होती है, मधुर वार्तालाप, सही मार्गदर्शक भविष्य का पथ प्रदर्शन, निरन्तर धन प्रदान करने की क्रिया भी अप्सरा के माध्यम से ही संभव है, इसीलिए यह अप्सरा साधना साधकों के लिए, युवकों के लिए और वृद्धों के लिए भी समान रूप से उपयोगी है, यही नहीं अपितु स्त्रियों के लिए भी अप्सरा साधना का विशेष महत्व बताया है, जिससे कि उन्हें एक अभिन्न सखी मिल सके उसके जीवन में आनन्द और उत्साह प्रदान कर सकें।

कुल मिला कर अप्सरा सौन्दर्य की साकार प्रतिमा होती है। एक ऐसा सौन्दर्य युक्त शरीर, एक ऐसा महकता हुआ, फूलों की डाली की तरह लचकता हुआ कमनीय नारी शरीर, जो साधक को सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान करने में सुख और आनन्द देने में समर्थ है, यदि अप्सरा साधना को उचित और जीवन में आवश्यक बताया है, तो मेरी राय में यह साधना जीवन का आवश्यक तत्व होना चाहिए।

क्या वर्तमान में भी अप्सरा का प्रत्यक्ष दिखाई देना संभव है?

और मैं कहता हूं कि निश्चित और निःसन्देह उसका प्रत्यक्ष दर्शन और उसका साहचर्य संभव हैं। जिस प्रकार से हम किसी अन्य पुरुष को पेड़ को या मकान को देख सकते हैं, उसी प्रकार से अप्सरा को प्रत्यक्षतः देख सकते हैं, स्पर्श कर सकते हैं, और उसके साथ साहचर्य संभव है। क्या हवा को हम देख सकते हैं, सही परिभाषा कहें तो हम हवा को नहीं देख सकते, और हम यह दावे के साथ कह सकते हैं कि हवा होती है, जिससे हमारा जीवन गतिशील बना रहता है, इसी प्रकार अप्सरा भी होती है, और जीवन को गति एवं आनन्द प्रदान करती रहती हैं, और प्रत्यक्ष रूप में भी प्राप्त होती है, तथा उसके द्वारा निरन्तर धन द्रव्य, वस्त्र, आभूषण प्राप्त होते रहते है।

मैंने अपने जीवन में कई साधनाएं संपन्न की हैं, जब तक हम साधना क्षेत्र में उतरते नहीं तब तक उसका अहसास भी नहीं होता, और जब हम साधना क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, अपने मन को एकाग्र कर साधना क्षेत्र में आगे बढ़ते हैं तो विविध प्रकार के अनुभव होते रहते हैं, विविध प्रकार के दृश्य और बिम्ब दिखाई देते रहते हैं। और जब हमें साधना में सफलता मिल जाती है तो हमारा जीवन ही बदल जाता है, हम में आत्म विश्वास आ जाता है, एक निश्चितता प्राप्त हो जाती है कि हम वर्तमान युग में भी साधना कर सकते हैं, और उसमें पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

यदि यह प्रश्न पूछा जाय कि सौन्दर्य क्या है तो उसे हम किसी अप्सरा के माध्यम से ही स्पष्ट अंकित कर सकते हैं।

कुल मिला कर अप्सरा सौन्दर्य की साकार प्रतिमा होती है। एक ऐसा सौन्दर्य युक्त शरीर, एक ऐसा महकता हुआ, फूलों की डाली की तरह लचकता हुआ कमनीय नारी शरीर जो साधक को सभी दृष्टियों से सुख और भोग प्रदान करने में समर्थ हो।

शिष्यों का पर्व
२१ अप्रैल

सन्मंगलं शिष्यगणाधिनाथं संसार रोग हरमौषधम द्वितीयं।
लोकत्रयमनुतुदिनं परिपावयन्तं, नमामि सततं निखिलेश्वरं गुरुम् मंगलमूर्ति।।

अनन्त शिष्यों के अधिपति, भवरोग को हरण करने के लिए दिव्य औषध रूप, समस्त संसार को अपने तपः पुंज से पावन करने वाले गुरु देव निखिलेश्वरानंद के श्री चरणों मे हृदय से नमन करता हूँ।

जीवन में एक पर्व शिष्यों का होता है, यदि शिष्य समझ सकें तो। जीवन के प्रत्येक क्षण, प्रत्येक अवसर पर वह केवल पूजक या उपासक ही नहीं होता, वरन स्वयं पूज्य और उपास्य बन जाता है, क्यों कि वह साधारण नर से ऊपर उठकर नारायण बनने की प्रक्रिया में जो आ जाता है। इस तथ्य को सिंहवत् गर्जन के साथ वही स्पष्ट कर सकते है जो स्वयं में प्राणों के ही दूसरे स्वरूप हों, देव स्वरूप हों जो पूजन-अर्चन की छोटी मोटी लिप्साओं गुरुपद के आग्रह से सर्वथा मुक्त हों। यही सन्देश पिछले कई वर्षों से देते आये है पूज्य गुरुदेव, अपने शिष्यों व शिष्याओं, साधकों व साधिकाओं को। प्रत्येक वर्ष कहने को तो २१ अप्रैल उनके साधकों ने मनाया पूज्य गुरुदेव के जन्मदिन के रूप में लेकिन पूज्य गुरुदेव ने इसे सदैव मनाया शिष्य जन्म दिवस के रूप में। उनका तो बस एक ही स्वप्न है कि जब मेरे शिष्यों में गुरु या गुरुत्व के अंश आ जायेंगे तभी मै इस धरा पर अपना आगमन सफल मानूँगा। सजग शिष्य और साधक प्रत्येक वर्ष ही चैत्र नवरात्रि के बाद से प्रतीक्षा में लग जाते है अपने प्रिय पूज्य गुरुदेव के जन्म दिवस की प्रतीक्षा में। उनके लिए यह गुरु पूर्णिमा से बढ़कर पर्व है जिसमें वे साक्षात् गुरुदेव की उपस्थिति में उत्सव मय हो पाते है। इस बार इस राष्ट्रीय पर्व को मनाने का सौभाग्य मिला भारत के हृदय उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक और प्राचीन नगरी प्रयाग को। प्रयाग का जो महत्व है और महत्व से भी ज्यादा जो उससे जुड़ी जन जन की भावनायें हैं उनको रेखांकित करना आवश्यक ही नहीं।
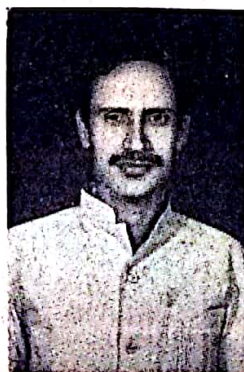
भला कौन भारतीय है जिसके अन्दर गंगा अपनी पूर्ण पवित्रता से न बह रही हो या उसके अन्दर जमुना की गहनता न हो। ऐसे ही गंगा व जमुना के तट पर बसी नगरी है प्रयाग। मानो कृष्ण की श्यामलता लिये हुये राधा ही यमुना बन कर बह रही हो और गंगा, गंगा तो साक्षात् मां भगवती पार्वती का गतिशील और मिठास भरा स्वरूप हैं। गंगा और यमुना इन्हीं दोनों का संगम है प्रयाग में, इसी से वह तीर्थराज कहलाया। जहां भी, जो भी जीवन में राधा की छटपटाहट और पार्वती की दुग्ध धवलता अपने में समा लेगा, वहीं तीर्थराज बनेगा। वहीं गुप्त सरस्वती गुरु के रूप में बहेगी। सरस्वती कोई अन्तः सलिला है ही नहीं। सरस्वती तो साक्षी भूत है गंगा-यमुना के मिलन की, जैसे गुरुदेव साक्षी भूत हैं हमारे अंदर के गंगा-यमुना के मिलन के, ये सब केवल शब्दों का ही विषय नहीं। यह सब साकार भी हुआ जब त्रिवेणी के संगम पर पूज्य पाद गुरुदेव ने अपने शिष्यो को विशिष्ट दीक्षायें दीं। जब ठीक संगम पर पूज्य गुरुदेव, पूज्यनीय माता जी सहित एक नाव पर विराजमान थे और साधकों के विभिन्न नावों

में जा जाकर उनका दिव्य शक्तिपात प्राप्त किया।

यह शिविर इस बार परम्परा को भंग कर तीन दिनों के स्थान पर चार दिनों का लगाया गया। जिसके पीछे पूज्य गुरुदेव के योग्य शिष्य और साधक **श्री सुरेन्द्र कुमार मिश्रा** का सुस्पष्ट और हृदय पूर्ण चिन्तन था कि उनके सभी गुरु भाई-बहिन जो इस अवसर पर न केवल देश के कोने-कोने से वरन विदेशों से भी आते है, वे अधिक से अधिक पूज्य गुरुदेव साहचर्य का लाभ ले सकें। उन्हीं के प्रयास से जो छावनी क्षेत्र में भी एक अत्यन्त रमणीक स्थान, यमुना के किनारे बने सरस्वती घाट के सुन्दर पार्क में आयोजन की अनुमति नगर प्रशासकों द्वारा मिल सकी। श्री सुरेन्द्र कुमार मिश्रा इससे पूर्व भी साधना शिविरों का आयोजन चित्रकूट व इलाहाबाद में करके अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर ही चुके है। अप्रत्यक्ष रूप से तो वे भारत में होने वाले किसी साधना शिविर में सहभागी रहते ही हैं।

उनके साथ हाथ से हाथ मिलाकर जिन लोगों ने सहयोग दिया वे हैं इलाहाबाद के **श्री एस.पी..बांगर, श्री राजकुमार वैश्य, श्री वासुदेव पाण्डे, बहन कनक लता पाण्डे** बस्ती
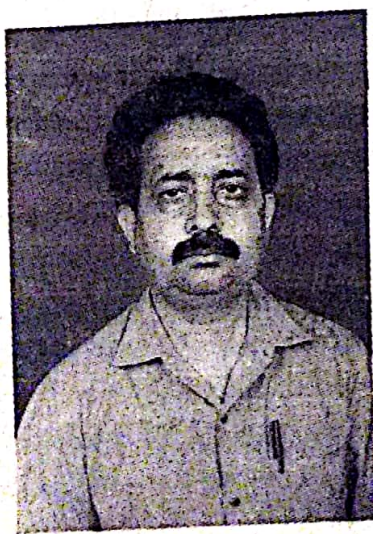
के **श्री हरीराम चौधरी**, रायबरेली के **श्री राजेन्द्र सिंह भदोरिया**, सिद्धाश्रम साधक परिवार के उपाध्यक्ष **डॉ. एस.के. बनर्जी**। बाहर से जो साधक अपनी टीम के साथ आये उनमें **श्री एम.पी. चतुर्वेदी** का नाम विशेष उल्लेखनीय है जो मध्य प्रदेश से अपनी टीम लेकर आये गुजरात के साधकों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे **श्री नाग जी भाई**। महाराष्ट्र से इस बार युवकों की टीम ही आगे आई जिसका नेतृत्व कर रहे थे बम्बई के **राजेश गुप्ता**। हिमाचल प्रदेश से भी इस वर्ष युवको की टीम ही आगे आई जिसका नेतृत्व कर रहे थे भारतीय स्टेट बैंक में कार्यरत और पूज्य गुरुदेव से वर्षो से जुड़े सजग साधक **कर्मदत्त शर्मा** जी।

उत्साह वर्धक बात तो यह थी कि इस वर्ष आशा के विपरीत पंजाब एवं बंगाल से भी साधकों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। चार दिन का कार्यक्रम मुख्य रूप से इस तथ्य पर केन्द्रित था कि वर्तमान स्थितियों को देखते और साधकों की मनोदशा को समझते हुये क्या उपक्रम किये जायें क्योंकि एक गृहस्थ शिष्य अपने को वर्षो तक चलने वाली साधनाओं में खपा नहीं सकता, इसकी पूर्ति करने के लिए पूज्य गुरुदेव ने अपने सभी साधको और शिष्यों को निरन्तर विशिष्ट दीक्षायें व शक्तिपात दिये। भौतिक व साधनात्मक जीवन की परिपूर्णता के लिए गणेश लक्ष्मी प्रयोग सम्पन्न कराया गया और यज्ञ का भी विधान रहा, किन्तु सर्वोपरि पूज्य गुरुदेव के द्वारा प्रदत्त राज्याभिषेक दीक्षा एवं शक्तिपात भी रहा, इसी अवसर पर पूज्य गुरुदेव ने **डॉ० रामचैतन्य शास्त्री** को सन्यस्त दीक्षा भी प्रदान की।

दिनांक २१ अप्रैल आप में सम्पूर्ण रूप से साधना से परे हटकर उत्सव का दिन था। सारा वातावरण हर्षोल्लास से भर उठा था। मानो साधक व साधिकायें इसी लक्ष्य के लिये तो आये थे। तीन दिन तक तो वे अपने को दबोच कर साधनाओं में लगाये थे। उनका मूल लक्ष्य तो पूज्य गुरुदेव के साथ उत्सव मय होना था, जो आज सम्भव हो पा रहा था। यमुना में उठती तेज लहरें साधकों के हृदय को ही वर्णित कर रही थी। शिविर स्थल की ढलान पर पीले फूलों से लदे वृक्ष थे। साधक व साधिकायें ही नहीं प्रकृति भी साधना के पीले वस्त्र पहिन कर पूज्य गुरुदेव से दीक्षित होने और उनके जन्म दिन को मनाने आ गई थी। इस अवसर पर वातावरण को संगीत से सुमधुरित किया भाई आनन्द एवं श्री भोला नाथ वाजपेई ने। नृत्य में किसका नाम वर्णित किया जाए ? डेढ़ हजार साधक व साधिकायें सभी तो नृत्य कर रहे थे। किसी के पांव थिरक रहे थे, किसी की आंखे किसी का हृदय और किसी की भावनायें। शायद ही कोई ऐसा रहा हो जिसने उस दिन नृत्य न किया हो।

उत्सव और आनन्द की सीमाओं से भी ऊपर उठकर यह क्षण थे पूज्य गुरुदेव के गंभीर आग्रह का कि अब इस संक्रमण काल में समय अत्यन्त कम रहा है। साधक तीव्रता से आगे आयें और वह सब कुछ प्राप्त करें जो पूज्य गुरुदेव उन्हें खुले हाथों से प्रदान कर ही देना चाहते है। ■
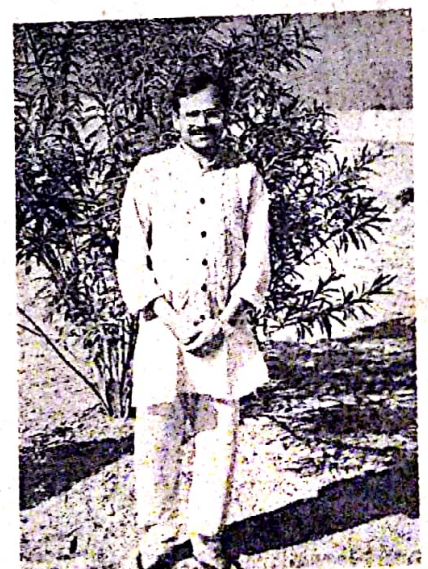
श्रावण मास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तांत्रिक दिवस

भाग्योदय दिवस

पूरे भारत वर्ष में श्रावण कृष्ण त्रयोदशी अर्थात् १७-७-९३ को "भाग्योदय दिवस" मनाया जाता है। शास्त्रों में और विशेष कर तांत्रिक ग्रन्थों में इस दिन का विशेष महत्व बताया गया है। मूलतः यह **तांत्रिक पर्व** है और उसी के अनुसार इससे संबंधित साधना करने पर जीवन में पूर्ण भाग्योदय संभव है।

भाग्योदय - तात्पर्य

यों तो प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में प्रयत्न और परिश्रम करता ही है, और उसके अनुसार लाभ एवं सुख प्राप्त करता है, परन्तु इस प्रकार का लाभ और सुख परिश्रम से उपार्जित माना गया है। भाग्योदय का तात्पर्य कम से कम परिश्रम में ज्यादा से ज्यादा धन-लाभ, ऐश्वर्य-प्राप्ति एवं आर्थिक उन्नति है। शास्त्रों में भाग्योदय का तात्पर्य बिना प्रयत्न किये स्वतः कार्य सिद्धि को माना है। कई व्यक्ति अत्यन्त प्रयत्न करने के बावजूद भी सफल नहीं हो पाते, परन्तु जिनका भाग्य प्रबल है, वे कम प्रयत्न में भी ज्यादा सफलता प्राप्त कर लेते हैं और अपने जीवन में पूर्ण उन्नति को प्राप्त कर यश, और सम्मान उपार्जित करते हैं।

शास्त्रों में भाग्योदय का तात्पर्य निम्न चौदह पदार्थों की अनायास प्राप्ति माना है। जिनके जीवन में स्वतः ही ये चौदह पदार्थ प्राप्त होते रहते हैं, और उनके माध्यम से निरन्तर उन्नति करता रहता है, उसे भाग्यशाली माना जाता है। ये चौदह पदार्थ हैं- १. स्वस्थ एवं सुन्दर देह, २. पूर्ण रोगरहित जीवन, ३. जरूरत से ज्यादा धन एवं ऐश्वर्य, ४. पूर्ण पराक्रम, पौरुष एवं बल प्राप्ति, ५. भूमि एवं भवन सुख, ६. पुत्र एवं संतान सुख, ७. शत्रु मर्दन, ८. सुयोग्य एवं सुन्दर पत्नी प्राप्ति एवं सफल गृहस्थ जीवन, ९. अकाल मृत्यु निवारण, १०. राज्य में सम्मान एवं निरन्तर उन्नति, ११. आय के विभिन्न स्त्रोत एवं अनायास धन प्राप्ति, १२. तीर्थ यात्रा एवं विविध स्थानों का भ्रमण, १३. मन में पूर्ण शान्ति एवं मृत्यु के उपरान्त मोक्ष प्राप्ति।

उपरोक्त चौदह पदार्थों को भाग्य माना गया है, जिसके जीवन में ये सभी पदार्थ स्वतः ही उपलब्ध होते रहते हैं, जो इसके माध्यम से निरन्तर उन्नति करता रहता है, वही वास्तव में भाग्यशाली माना जाता है।

परन्तु यह जरूरी नहीं है कि प्रत्येक को ये सभी पदार्थ या सुविधाएं आसानी से उपलब्ध हों, व्यक्ति परिश्रम करने के बावजूद भी पूर्ण सफलता नहीं प्राप्त कर पाता, दवाइयां लेने के बावजूद भी शरीर में कोई न कोई बीमारी बनी ही रहती है। इसके अलावा आर्थिक अभाव, पति पत्नी में मतभेद, संतान सुख में न्यूनता या राज्य-बाधा, शत्रु-कष्ट आदि कई तथ्य ऐसे हैं, जो चाहे-अनचाहे व्यक्ति के जीवन में बने रहते हैं, और इसकी वजह से व्यक्ति जितनी उन्नति करना चाहे, उतनी उन्नति नहीं कर पाता। उसके जीवन का अधिकांश भाग और उसकी शक्ति इन बाधाओं और समस्याओं का प्रतिकार करने में ही लग जाती है, और उसका पूरा जीवन परेशानी पूर्ण समस्याओं से ग्रस्त और चिंतित बना रहता है, इसीलिए तांत्रिक ग्रन्थों में **"भाग्योदय दिवस"** मनाये जाने की प्रथा है, जिससे कि भाग्य बाधा समाप्त हो सके, जिससे भाग्य में यदि किसी प्रकार की कोई रुकावट हो, तो वह दूर हो सके, जिससे कि जीवन में पितृ दोष हो, तो वह दूर हो सके, और जीवन पूर्ण सौभाग्यशाली बन सके।

भाग्योदय पर्व

भाग्योदय दिवस को देवता तो मनाते ही थे, ऋषियों, मुनियों, साधुओं, सन्यासियों ने भी इस महत्व को अनुभव किया है। इस पर्व को वे पूर्ण श्रद्धायुक्त ढंग से मना कर अपने जीवन के अभाव दूर करते थे, और जीवन में पूर्ण सौभाग्य सफलता एवं ऐश्वर्य उपार्जित करते थे।

मुण्डकोपनिषद में इस पर्व को मनाने के बारे में प्रमाणिक विवरण दिया है। मैंने स्वयं यह अनुभव किया है कि, यदि वर्ष में एक बार इस दिवस को और इस साधना विधि को भली प्रकार से मना लेते हैं, तो पूरा वर्ष उसके जीवन में सौभाग्यदायक बना रहता है।

इस साधना को घर के सभी सदस्यों को मनाना चाहिए, जो समझदार है वह चाहे पुरुष हो या स्त्री, पुत्र हो पुत्री उसे इसदिन का प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए, जो बालक है और स्वयं प्रयोग सम्पन्न नहीं कर सकते उनको चाहिए कि उनके मां बाप या रिश्तेदार उनके लिए वह प्रयोग सम्पन्न करे।

प्रयोग विधि

भाग्योदय दिवस को प्रातः उठ कर प्रसन्नता के साथ स्नान आदि कर पीली धोती पहिन कर साधक अपने पूजा स्थान में अपनी पत्नी और परिवार के साथ बैठ जाय और सामने प्रत्येक के लिए अलग अलग "भाग्योदय

यंत्र'' स्थापित करे जो कि तांत्रोक्त रूप से सिद्ध हो। यह **भाग्योदय यंत्र** अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है इसका निर्माण विशेष विधि से किया जाता है, यदि साधक चाहे तो केवल अपने लिए ही भाग्योदय यंत्र मंगावे या अपनी पत्नी, पुत्र या पुत्री के लिए भी मंगा सकता है, यह उसके विवेक पर निर्भर है।

सबसे पहले गणपति का पूजन करे, और गणपति से प्रार्थना करे कि उसके जीवन का सभी दृष्टियों से भाग्योदय हो, इसके बाद सामने एक थाली में सभी भाग्योदय यंत्र रख दें, और प्रत्येक यंत्र के सामने एक एक घी का दीपक प्रज्जलित करें और अगरबत्ती लगावें। इसके बाद हाथ जोड़ कर पुरन्दर ऋषि द्वारा निम्न कवच का २१ बार उच्चारण करे-

रक्षा कवच

वज्रिणी पूर्वतो रक्षेंत आग्नेय्या परमेश्वरी।
दण्डिनी दक्षिणे रक्षेत नैऋत्यां खड्गिनी सदा।।
पश्चिमे पास-हस्ता च ध्वजस्था वायु दिड्-मुख।
गदाधरी तथादिच्यां ऐशान्या च महेश्वरी।।
ऊर्ध्व देशे पदमिनी मां अधस्तात पातु वैष्णवी।
एवं दश दिशें रक्षेत् सर्वदा भुवनेश्वरी।।

इसके बार सामने दूसरी थाली में निम्न प्रकार से भाग्योदय अक्षर का निर्माण अष्ट गन्ध से करे। अष्ट गन्ध में निम्न प्रकार की आठ वस्तुएं होती हैं। १. चन्दन, २. अगर, ३. केसर, ४. कुंकुम, ५. रोचन, ६. शिला रस, ७. जटामासी, ८. कपूर, इन आठों को पीस कर स्याही बना कर किसी चान्दी की सलाका या तिनके से थाली में यंत्र निर्माण करें। आपने जितने भाग्योदय यंत्र प्राप्त किये हैं उतनी ही थालियों में निम्न यंत्र भी निर्माण होंगे।

भाग्योदय अक्षर निर्माण

फिर इस यंत्र पर जो आपने भाग्योदय यंत्र प्राप्त किया है, उसको रख दें और अपना बांया हाथ हृदय पर रखें, तथा दाहिने हाथ में पुष्प लेकर निम्न मंत्र क्रमशः पढ़ता हुआ प्राण प्रतिष्ठा करे

प्राण प्रतिष्ठा मंत्र

ॐ आं ह्रीं क्रीं यं रं लं वं शं षं सं हं हंस: सोहं मम प्राणाः इह प्राणाः ॐ ॐ हां क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंस: सोहं एवं इन्द्रियाणि इह मम ॐ आं क्रीं क्रां यं रं लं वं शं षं सं हं हंस: लोहं मम वाड् मनचक्षु श्रोत्र-जिव्हा-घ्राण प्राणा इहागत्य सुखं चिरंतिष्ठतु स्वाहा।

उपरोकत प्राण प्रतिष्ठा मंत्र में तीन स्थान पर ''मम्'' शब्द आया है, इस ''मम्'' शब्द के स्थान पर साधक को अपना नाम उच्चारण करना चाहिए, या जिसके लिये भाग्योदय यंत्र सम्पन्न हो रहा है, उसका नाम उच्चारण करना चाहिए।

इसके बार साधक को चाहिए कि निम्न मंत्र की १ माला मंत्र जप सम्पन्न करे, यदि एक भाग्योदय सिद्ध करना हो या एक से ज्यादा भाग्योदय यंत्र सिद्ध करने हो तो भी केवल १ माला मंत्र जप ही पर्याप्त है। इसके ज्यादा मंत्र जप करने की जरूरत नहीं है। यह मंत्र जप केवल **शुद्ध स्फटिक माला** से ही सम्पन्न करने का विधान है जो पहले किसी साधना में प्रयुक्त न हुई हो।

।। ॐ ॐ ऐं ऐं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं ऐं ॐ ॐ ।।

मंत्र के बाद जो यंत्र सामने रखे हुए हैं, और जिन जिन के ये यंत्र हैं, उन यंत्रों को संबंधित व्यक्ति धारण कर लें। इस यंत्र में कोई धागा या चैन पिरो सकते हैं, और यदि यंत्र पहिनने की व्यवस्था न हो तो साधक को चाहिए कि वे यंत्र पूजा स्थान में ही रख दें, परन्तु महीने में एक बार २४ घंटों के लिए इस यंत्र को अवश्य ही धारण करें।

मैंने उपरोक्त प्रयोग पूर्णता के साथ स्पष्ट कर दिया है, जो तंत्र क्षेत्र में जाना चाहते हैं उनको चाहिये कि वे आत्म कल्याण हेतु इस प्रकार के प्रयोग सम्पन्न करें और ज्यादा से ज्यादा पीड़ित एवं दुखी लोगों का कष्ट दूर करें।

स्वप्न में देवता से बात करिये

सामग्री -	स्वप्नेश्वरी यंत्र, केसर, अक्षत, जल, दीपक आदि।
माला-	कार्य सिद्धि माला
दिशा-	पूर्व दिशा
आसन-	सफेद रंग का सूती आसन
समय-	रात्रि कालीन
जप की अवधि-	९० मिनट, ग्यारह दिन तक।

मंत्र- ॐ ह्रीं विचित्र वीर्य स्वप्ने इष्टं दर्शय नमः।।

प्रयोग- यंत्र की सामान्य पूजा करें और दीपक लगाकर किसी भी रविवार से मंत्र जप प्रारम्भ करें। मंत्र जप पूर्ण होने पर जिस रात्रि को अपने इष्ट या देवता से बात करनी हो उस रात्रि को एक बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण कर सो जायें तो रात्रि में उस देवता से बातचीत हो सकती है।

अंकों के अनुसार जून मास का भविष्य

(१) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथि १, १०, १९ या २८, है।
शारीरिक कष्टों में किंचित् सुधार अपेक्षित। मादक पदार्थों को दृढ़ता पूर्वक छोड़िये, मित्र वर्ग से सामंजस्य नहीं। धन संचय की स्थिति सन्तोष जनक। मन में उत्साह और उत्फुल्लता की स्थितियां बनी रहेंगी।
अनुकूल तिथियां ५, १४, २३
विपरीत तिथियां १, ७, २५
यात्रा ८, १३, २४,
प्रेम प्रसंग ८, १७, २१

(२) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथि २, ११, २० अथवा २९ हैं।
पत्नी की ओर से उसके स्वास्थ्य के कारण खेद रहेगा। मित्र वर्ग से विशेष सहयोग नहीं। सन्तान की पढ़ाई पर ध्यान दें। खर्च को नियंत्रित करें अन्यथा जिस धनागम का योग बन रहा है वह व्यर्थ हो जायेगा।
अनुकूल तिथियां ५, १७, २३
विपरीत तिथियां ७, ११, २२
यात्रा तिथियां ९, १८
प्रेम प्रसंग ५, १४

(३) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथियां ३, १२, २१ अथवा ३० हैं।
मित्रों के सहयोग से गुत्थियां सुलझेंगी एवं विवाद निपटेंगे। समय का अपव्यय न करें। परिवार पर विशेष ध्यान दें। आकस्मिक धन लाभ की संभावनाएं दिखती हैं।
अनुकूल तिथियां ४, ११,
विपरीत तिथियां ५, ७, १६
यात्रा प्रसंग ९, २४,
प्रेम प्रसंग २, ९, १८,

(४) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथि ४, १३, २२ या ३१ हैं।
आकस्मिक यात्रा की संभावना। कार्यालय में सहयोगियों से मेल जोल बनाकर रखना आवश्यक। मित्र वर्ग से उपेक्षा किंतु चिंता न करें। शीघ्र ही अनुकूल परिस्थितियां बनेंगी। स्वजन विशेष लाभकारी सिद्ध होंगे। धन की स्थिति बहुत अच्छी नहीं।
अनुकूल तिथियां ९, १२, ३०
प्रतिकूल तिथियां ७, १७, २२
यात्रा ४, १८, २०
प्रेम प्रसंग ६, १४

(५) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथि ५, १४ अथवा २३ हों।
मानसिक चिन्तायें कुछ और समय रहेंगी। पत्नी का विशेष सहयोग मिलेगा। उदर रोगों से कष्ट संभव। सामाजिक स्थिति में सम्मान वृद्धि।
अनुकूल तिथियां २०, १८, २७
विपरीत तिथियां ७, ९, २८
यात्रा २, १३, १४
प्रेम प्रसंग ५, १४, २३

(६) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथियां ६, १५ अथवा २४ हैं।
किसी घनिष्ठ मित्र की सलाह से अपनी योजनाओं को मूर्त रूप दें। अनुकूल समय आ गया है। व्यापारिक प्रतिद्वन्दी घात प्रतिघात कर सकते हैं। उत्साह बनायें रखें। सन्तान से सुख। कोई नवीन प्रेम प्रसंग भी संभव।
अनुकूल तिथियां २, ४, २६
विपरीत तिथियां ५, १३, १४
यात्रा ८, २३, १७
प्रेम प्रसंग ६, ७

(७) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथि ७, १६ अथवा २५ हो।
अधीनस्थ कर्मचारियों से व्यवहार कुशलता एवं प्रेम से कार्य लें। कार्यो की अधिकता का स्वास्थ्य पर प्रभाव न पढ़ने दें। पुत्र की पढ़ाई पर विशेष ध्यान दें। स्वास्थ्य उत्तम। मानसिक चिन्ताएं छोड़ दीजिए।
अनुकूल तिथियां ७, ९, १८
प्रतिकूल तिथियां १२, २३
यात्रा १७, २५, १९
प्रेम प्रसंग ६, १३, २०

(८) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथि ८, १७ अथवा २६, है।
प्रेमिका की ओर से मधुर संकेत। धनआगम की नवीन स्थितियां। कार्य क्षमता में वृद्धि। शारीरिक सुख में कमी। धन के लुप्त हो जाने या अनावश्यक खर्च हो जाने से बचाइये।
अनुकूल तिथियां १२, १७, २५
प्रतिकूल तिथियां १४, २८
यात्रा २३, २५
प्रेम प्रसंग ८, २७, २९

(९) व्यक्ति जिनकी जन्म तिथि ९, १८ अथवा २७ है।
पिछले माह की अनुकूल स्थितियां अभी भी बनी रहेंगी अतः समय का सदुपयोग कीजिए अपनी योजनाओं को मूर्तरूप दीजिए। कार्यों को स्थायित्व प्रदान कीजिये। विद्यार्थी वर्ग के लिए श्रेष्ठ समय। महिला वर्ग भी विशेष उमंग का अनुभव करेंगी।
अनुकूल तिथियां ७, २३, २१
प्रतिकूल तिथियां १४, २०,
यात्रा १०, १४, १८,
प्रेम प्रसंग ११, १९, ३०,

शेयर व राजनीतिक भविष्य

जून मास के आरम्भ में सूर्य वृषभ राशि में स्थित है जो १४ तारीख से अपने मित्र बुध की राशि मिथुन में चले जायेंगे। मंगल इस माह के प्रारम्भ में कर्क राशि में स्थित है तथा १२ तारीख को १.४१ पर सिंह में चला जायेगा। बुध माह के प्रारम्भ में स्वराशि मिथुन में है तथा १९ तारीख को राशि से कर्क में जा रहा है। यह ग्रह २९ तारीख से वक्री हो रहा है। शुक्र प्रारम्भ से तो मेष पर है किन्तु मास के अन्त में अर्थात् ३० तारीख को वृषभ राशि में जा रहा है। गुरु कन्या राशि में है। शनि पहले ही संक्रमित होकर कुम्भ में जा चुके हैं और १० तारीख से वक्री हो रहे है। शेष दो छाया ग्रह–राहु वृश्चिक में एवं केतु वृषभ में पूर्ववत् हैं।

राजनीतिक भविष्य

इस माह की १२ तारीख तक देश की स्थितियां तनाव पूर्ण रहेंगी, देश व्यापी विवाद के कारण कटुता का वातावरण फैल जायेगा। बिहार में दंगों की स्थिति गम्भीरतम होगी। संसद में सरकार को अपनी स्थिति बचाये रखना कठिन होगा। विपक्षी दलों के तालमेल से भी उनके सामने गम्भीर संकट आयेंगे। मध्यावधि चुनाव की मांग एवं स्थितियाँ गहरायेंगी। सम्भव है कि ऐसा हो भी। कोई वरिष्ठ राजनयिक देश के उच्चपद को कुछ समय के लिए अप्रत्याशित घटनाओं के कारण सुशोभित करेगा। किसी वरिष्ठ राजनयिक के इस्तीफे की भी संभावना है।

आतंकवादी इस उहापोह एवं प्रशासन की किंकर्तव्यविमूढ़ता से लाभ लेकर कोई भीषण कांड कर सकते हैं। पंजाब में आंतकवाद की स्थिति समाप्त होगी। पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं दिल्ली के इलाके में उनकी गतिविधि बढ़ेगी। संभव है पश्चिमी उत्तर प्रदेश का कोई भाग सेना के हवाले करना पड़े।

पड़ोसी राज्य भी लाभ उठाकर सीमा पर तनाव पैदा करेंगे और आतंकवाद का खुल्लमखुल्ला समर्थन करेंगे। सीमा पर भारतीय सैनिकों से कड़ी झड़पें होंगी। हताहत भी होंगे, और युद्ध की स्थिति बन जायेगी, किन्तु प्रकट रूप से युद्ध अभी नहीं छिड़ेगा।

देश में मंहगाई चरम सीमा पर होगी। सर्वत्र भय व आतंक का माहौल होगा। उड़ीसा के तटवर्ती इलाकों में तेज तूफान से विनाशलीला अवश्यम्भावी है। किसी महत्वपूर्ण राजनेता का दुखद निधन भी देश को सहना पड़ सकता है।

विश्व के रंगमंच पर अमेरिका के नये राष्ट्रपति का कठोर रुख सभी के सामने आकर चौंका देगा। वे अत्यधिक अनुदार राष्ट्रपति सिद्ध होंगे। भारत के हितों के विपरीत वे कोई विशेष घोषणा भी करेंगे। इस समय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत नितांत अकेला पड़ जायेगा। अमेरिका, ईराक के प्रति अपना रुख कड़ा करेगा और भीषण हवाई हमलों की पुनरावृति होगी। मुस्लिम राष्ट्र एक जुट नहीं होंगे। उनके कलह बढ़ते ही रहेंगे। रूस की स्थिति भारत के प्रति और स्वयं उसके आन्तरिक रूप से भी शोचनीय रहेगी। एक बात जो उत्साह वर्धक है वह यह कि चीन से आर्थिक व सांस्कृतिक मसलों को लेकर उच्चस्तरीय शिष्टमण्डल आयेंगे और यहां से भी चीन जायेंगे। चीन में धार्मिक पक्ष को लेकर भी उदारता आयेगी जिससे भारत से संबंध तेजी से मधुर होंगे। संभव है दोनों देशों के मध्य कोई सन्धि भी हो जाये।

शेयर बाजार

विगत माह में देश में हुई राजनैतिक अस्थिरता के कारण शेयर मार्केट की स्थिति डावांडोल ही रहेगी। चूंकि इस माह से मंगल को राशि परिवर्तित हो रही है। अत: षडाष्टक योग तो भंग होगा किन्तु पश्चात् वर्ती दुष्प्रभाव तो नष्ट होने में कुछ समय लगेगा। शनि और मंगल की संयुक्ति का दुष्प्रभाव हम टी०वी०, रेफ्रीजिरेटर उद्योग पर पड़ने वाले कुप्रभाव के रूप में देख ही चुके हैं।

माजदा के शेयर की स्थिति उल्लेखनीय नहीं रहेगी जब कि टिस्को, ए०सी०सी मामूली व्यापार करके रह जायेंगे। कुछ एक अत्यधिक महत्वपूर्ण कम्पनियाँ घाटे का व्यापार करेंगी। माइक्रो, हिन्द लिवर, नेस्ले, आने वाले समय में अच्छा प्रत्युत्तर देंगी। लिप्टन एवं हिन्डालको के विषय में अभी निश्चित रूप से अनुकूल मत नहीं दिया जा सकता। एस०बी०आई० म्यूचुअल फण्ड की स्थिति भविष्य में भी सुरक्षित रहेगी।

घी एवं रूई के भावों में तेजी आयेगी। वनस्पति व तिलहन में मामूली सा सुधार होकर रह जायेगा। ज्वार, बाजरा, मोठ, उड़द मूंग के भाव उठेंगे। सुपारी, मिर्च, राई, हींग में स्थिरता ही रहेगी। छींट के वस्त्र सस्ते होंगे। कोयले के भाव में मन्दी समाप्त हो चुकी होगी किन्तु अभी खरीदना उचित नहीं रहेगा। गेहूँ, जौ, चना, अलसी के भाव बढ़कर स्थिर हो जायेंगे।

हीरा मोती मणि आदि जवाहरातों का व्यापार अभी भी मन्दा ही चलेगा। सोने के भाव में मन्दी आने का संकेत है, चांदी में स्थिरता रहेगी। शेष धातुऐं जैसे तांबा, लोहा भी कुल मिलाकर स्थिर ही कही जा सकती हैं।

ज्योतिष प्रश्नोत्तर

१. कुंकुम सक्सेना, रांची

प्रश्न: मैं इंटर करने के बाद किस विषय में प्रवेश लूं।

उत्तर: आप मेडिकल कोर्स हेतु तैयारी करें। अगले वर्ष सफलता की निश्चित स्थिति है।

२. देवेश वर्मा पटना

प्रश्न: क्या मैं वस्त्रों के व्यापार में पार्टनरशिप लूं।

उत्तर: नहीं। आपके लिए जनरल मर्चेंट का कारोबार अधिक अनुकूल रहेगा।

३. श्रीकांत रमणलाल,अकोला

प्रश्न: मेरे पड़ोसी से विवाद कब तक शांत होगा।

उत्तर: परस्पर मिलकर निपटारा करना श्रेयस्कर रहेगा अन्यथा मुकदमें बाजी में लम्बा समय लगेगा।

४. सत्यप्रकाश, अम्बिकापुर

प्रश्न: मेरी बहन के सफेद दाग है क्या करें ?

उत्तर: पूर्ण रूपेण जाने में अभी समय लगेगा। मणिमाला धारण करायें।

५. विद्याधर, रतन गढ़

प्रश्न: अधिकारी वर्ग से सुलह समझौता क्या संभव है ?

उत्तर: अभी तीन मास विषम हैं फिर अनुकूलता मिलेगी। मन:शांति के लिए कमलगट्टे की माला धारण करें।

६. कुमारी प्रीति नागपुर

प्रश्न: मेरे विवाह में बार बार अड़चन क्यों ?

उत्तर: आपके शुक्र की स्थिति ठीक नहीं । स्फटिक मणिमाला धारण करें।

७. श्रीमती रत्ना बंसल अहमदाबाद

प्रश्न: मेरे चार वर्ष के पुत्र ने अभी भी ठीक से बोलना नहीं सीखा ?

उत्तर: सूर्य की निर्बल स्थिति के कारण उसे विलम्ब हो रहा है। उचित साधना संपन्न करायें।

८. हरिहर दूबे लखनऊ

प्रश्न: दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं।

उत्तर: आप मूंगा रत्न पर साधना सम्पन्न करें अन्यथा तलाक भी संभव।

९. राजेश नारायण फैजाबाद

प्रश्न: मेरा स्वयं का वाहन कब तक होगा ?

उत्तर: सात माह के उपरांत आपको मनोवांछित वाहन प्राप्त होगा।

१०. जसवंत भाई सूरत

प्रश्न: कारखाने के कर्मचारियों से समझौते के आसार कब तक ?

उत्तर: तीन माह तक स्थिति डांवाडोल रहेगी। कुबेर यंत्र, कनकधारा यंत्र, एवं श्रीयंत्र की स्थापना अति आवश्यक।

११. श्रीश जलगांवकर मनमाड

प्रश्न: मैं अपना निवास स्थान कहां बनाऊं ?

उत्तर: कृपया जन्म चक्र एवं जन्म स्थान के साथ पूर्ण विवरण भेजिए।

१२. सुप्रिया सम्बलपुर

प्रश्न: मुझे साधनाओं में सफलता क्यों नहीं मिल रही ?

उत्तर: आपके गुरु की महादशा आरम्भ होने पर सफलता शीघ्र। दीक्षा ग्रहण करना आवश्यक।

१३. कनक लता बस्तर

प्रश्न: मेरे पति की पदोन्नति कब तक ?

उत्तर: वर्तमान में सम्भव नहीं। स्थानान्तरण भी सम्भव।

१४. सुभाष यादव उज्जैन

प्रश्न: मेरे लिए कौनसी साधना उपयुक्त रहेगी ?

उत्तर: आप इस विषय में पूज्य गुरुदेव से मिलकर ज्ञान अर्जित करें।

१५. भावना शर्मा कानपुर

प्रश्न: मैं कोई रत्न धारण करना चाहती हूं, उचित मार्ग दर्शन दें ?

उत्तर: आप पांच रत्ती का मोती धारण करें।

जून मास काल निर्णय

पिछले माह के अंक में हम १३ जून तक का काल निर्णय सप्ताह के प्रत्येक दिन के अनुसार दे चुके हैं। प्रस्तुत है इस अंक में इसके आगे का काल निर्णय। भारतीय पद्धति एवं ईस्वी कलैन्डर का सामंजस्य करके ....

सम्पादक

१४ जून से ३ जुलाई तक

रविवार

अमृत ६.०० से ८.२४ बजे तक
वक्र ८.२४ से ११.३६ बजे तक
अमृत ११.३६ से २.४८ बजे तक
शून्य २.४८ से ३.३६ बजे तक
महेंद्र ३.३६ से ४.२४ बजे तक
शून्य ४.२४ से ६.०० बजे तक
(किन्तु इसमें राहु काल भी समाविष्ट होने से अत्यन्त दूषित है)

सोमवार

अमृत ६.०० से ७.३६ बजे तक (राहु काल प्रविष्ट)
वक्र ७.३६ से ९.१२ बजे तक (राहु काल की प्रविष्टी से दूषित)
अमृत ९.१२ से ११.३६ बजे तक
वक्र ११.३६ से ६.०० बजे तक

मंगलवार

शून्य ६.०० से ७.३६ बजे तक
वक्र ७.३६ से १०.०० बजे तक
अमृत १०.०० से ११.३६ बजे तक
शून्य ११.३६ से १.१२ बजे तक
वक्र १.१२ से ३.३६ बजे तक (राहु काल प्रविष्ट)
शून्य ३.३६ से ४.२४ बजे तक (राहु काल समाविष्ट)
अमृत ४.२४ से ६.०० बजे तक (राहु काल ४.३० तक)

बुधवार

शून्य ६.०० से ६.४८ बजे तक
महेंद्र ६.४८ से ८.२४ बजे तक
अमृत ८.२४ से १०.०० बजे तक
वक्र १०.०० से १२.२४ बजे तक (इसमें अन्त में राहु काल आरम्भ हो चुका होगा)
शून्य १२.२४ से १.१२ बजे तक (इसमें सम्पूर्ण रूप से राहुकाल व्याप्त होगा)
वक्र १.१२ से २.४८ बजे तक
अमृत २.४८ से ५.१२ बजे तक
शून्य ५.१२ से ६.०० बजे तक

गुरुवार

अमृत ६.०० से ७.३६ बजे तक
वक्र ७.३६ से १०.०० बजे तक
अमृत १०.०० से ११.३६ बजे तक
शून्य ११.३६ से १.१२ बजे तक
वक्र १.१२ से ३.३६ बजे तक (राहु काल युक्त)
शून्य ३.३६ से ४.२४ बजे तक
अमृत ४.२४ से ६.०० बजे तक

शुक्रवार

अमृत ६.०० से ६.४८ बजे तक
वक्र ६.४८ से ७.३६ बजे तक
अमृत ७.३६ से १०.०० बजे तक
वक्र १०.०० से १२.२४ बजे तक (राहु काल युक्त)
अमृत १२.२४ से ३.३६ बजे तक
शून्य ३.३६ से ४.२४ बजे तक
वक्र ४.२४ से ६.०० बजे तक

शनिवार

महेन्द्र ६.०० से ६.४८ बजे तक
शून्य ६.४८ से ९.१२ बजे तक
अमृत ९.१२ से १२.२४ बजे तक (राहु काल १०.३० बजे तक)
वक्र १२.२४ से ४.२४ बजे तक
शून्य ४.२४ से ६.०० बजे तक

३ जुलाई से १४ जुलाई तक

रविवार

महेन्द्र ६.०० से ६.४८ बजे तक
अमृत ६.४८ से १०.०० बजे तक
वक्र १०.०० से २.०० बजे तक
शून्य २.०० से ५.१२ बजे तक (राहु काल युक्त)
अमृत ५.१२ से ६.०० बजे तक

सोमवार

अमृत ६.०० से ७.३६ बजे तक
वक्र ७.३६ से १०.४८ बजे तक
अमृत १०.४८ से १.१२ बजे तक
वक्र १.१२ से ३.३६ बजे तक
अमृत ३.३६ से ५.१२ बजे तक
शून्य ५.१२ से ६.०० बजे तक

मंगलवार

अमृत ६.०० से ८.२४ बजे तक
शून्य ८.२४ से ९.१२ बजे तक
वक्र ९.१२ से १०.०० बजे तक
अमृत १०.०० से १२.२४ बजे तक
शून्य १२.२४ से ३.३६ बजे तक (राहु काल समाविष्ट)
अमृत ३.३६ से ५.१२ बजे तक (राहु काल समाविष्ट)
शून्य ५.१२ से ६.०० बजे तक

बुधवार

वक्र ६.०० से ७.३६ बजे तक
अमृत ७.३६ से ९.१२ बजे तक
वक्र ९.१२ से ११.३६ बजे तक
अमृत ११.३६ से १.१२ बजे तक (राहुकाल युक्त)
शून्य १.१२ से २.०० बजे तक (राहुकाल १.३० बजे तक)
वक्र २.०० से ३.३६ बजे तक
महेन्द्र ३.३६ से ४.२४ बजे तक
अमृत ४.२४ से ६.०० बजे तक

गुरुवार

अमृत ६.०० से ८.२४ बजे तक
शून्य ८.२४ से ९.१२ बजे तक
वक्र ९.१२ से १०.४८ बजे तक
अमृत १०.४८ से १.१२ बजे तक
वक्र १.१२ से ४.२४ बजे तक (राहु काल युक्त)
अमृत ४.२४ से ६.०० बजे तक

शुक्रवार

शून्य ६.०० से ६.४८ बजे तक
अमृत ६.४८ से १.१२ बजे तक (राहु काल युक्त)
वक्र १.१२ से ४.२४ बजे तक
अमृत ४.२४ से ५.१२ बजे तक
शून्य ५.१२ से ६.०० बजे तक

शनिवार

शून्य ६.०० से ७.३६ बजे तक
वक्र ७.३६ से ८.२४ बजे तक
शून्य ८.२४ से ९.१२ बजे तक (राहुकाल युक्त)
अमृत ९.१२ से १२.२४ बजे तक (राहुकाल युक्त)
शून्य १२.२४ से १.१२ बजे तक
वक्र १.१२ से २.०० बजे तक
शून्य २.०० से ३.३६ बजे तक
अमृत ३.३६ से ५.१२ बजे तक
शून्य ५.१२ से ६.०० बजे तक

राशिफल

मेष

यह मास आपके लिए अभी भी दिक्कतों से भरा रहेगा। विशेष रूप से जो लोग नौकरी पेशा है उनके लिए अवरोध अधिक होंगे। व्यापारी वर्ग को मंदी का सामना करना पड़ सकता है। यात्रायें होगी। शत्रु पक्ष क्रियाशील होगा। आपके हाथों शुभ कार्य होने का योग बनता है।

वृषभ

राज्य पक्ष से अनुकूलता। मुकदमें, सरकारी कार्यों में रुकावट जैसी स्थितियों में अब आपके पक्ष में निर्णय। यश में वृद्धि। यात्रा की स्थिति से बचें। व्यय पर भी नियंत्रण रखना बुद्धिमता होगी। पारिवारिक सुखों में न्यूनता।

मिथुन

कोई प्रेम प्रसंग हो सकता है। अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें। यात्रा सुखद रहेगी। गृहस्थ जीवन भी आनंदप्रद रहेगा। आय व्यय की स्थिति बस संतोषजनक रहेगी। अभी संचय के आसार बनते नहीं दिखते।

कर्क

यह माह उनके लिए अतिश्रेष्ठ है जो विद्यार्थी वर्ग से संबंधित है अथवा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं। दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने वालों के लिए समय अच्छा नहीं है। उन्हें परस्पर तालमेल बैठाना पड़ेगा। संपत्ति विवाद भी उठ खड़े होंगे तथा धन की चिंता में समय व्यतीत होगा। रक्त विकार एवं उदर रोग से बचें।

सिंह

शत्रु पक्ष सक्रिय रहेगा। चोट लगने के भी योग हैं। नयी योजना अभी स्थगित कर दीजिए। धार्मिक कार्यों में समय व्यतीत कीजिए। किसी दूरस्थ रिश्तेदार से महत्वपूर्ण सहयोग मिलने की आशा। संतान पढ़ाई में उन्नति करेगे।

कन्या

इस माह आपको कोई विशेष सफलता मिलने का योग है। आकस्मिक धन लाभ की भी संभावनायें है। जो व्यक्ति कला जगत से जुड़े हैं उनके लिए श्रेष्ठ समय है। गृहस्थ पक्ष सामान्य रहेगा। परिवार में रोगों की अधिकता सी ही रहेगी।

तुला

यह माह अत्यधिक व्ययपूर्ण रहेगा एवं आकस्मिक खर्चों की बाढ़ सी रहेगी। धनागम की भी विशेष स्थितियों नहीं दिखतीं। शत्रु पक्ष शांत हो जायेगा। प्रियजनो के अनुकूल व्यवहार न होने से चिंता रहेगी। प्रेम प्रसंगों में सावधान रहें।

वृश्चिक

संपत्ति संबंधी विवादों को आपस में ही मिल बैठकर निपटा लीजिए। यथा संभव मुकदमेबाजी से बचें। राज्य पक्ष की अनुकूलता नहीं। स्वभाव में उग्रता का निषेध करें। पत्नी से विशेष सहयोग मिलेगा। धन संबंधी मामले संतोषजनक रहेंगे।

धनु

जो आपके सहयोगी है उन पर विश्वास करें। डांवाडोल मनः स्थिति का त्याग करें। धन संबंधी चिंतायें निश्चित रूप से समाप्त होंगी। गृहस्थ पक्ष से अनुकूलता रहेगी। प्रेम प्रसंग भी संभव।

मकर

जो लोग सामाजिक कार्यों में सक्रियता से जुटे हैं उनको सम्मान लाभ होगा। विद्यार्थी वर्ग को कठोर श्रम करना पड़ेगा। प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। व्यापारी वर्ग को कुछ ऊंच-नीच देखनी पड़ सकती है।

कुंभ

ब्लडप्रेशर एवं हृदय रोग से संबंधित व्यक्ति तनाव पूर्ण स्थितियों से बचें। पारिवारिक उलझनों का निवारण करने में किसी विशिष्ट मित्र अथवा रिश्तेदार का सहयोग रहेगा। धन की चिंता प्रायः नहीं रहेगी। संतान से कुछ खेद हो सकता है।

मीन

सृजनात्मक कार्यों में संलग्न व्यक्तियों के लिए उन्नतिदायक समय। प्रेम प्रसंगों में अनुकूलता। आर्थिक पक्ष की मजबूती। आत्म विश्वास में और अधिक दृढ़ता। सम्पूर्ण रूप से श्रेष्ठ समय।

सम्मोहन विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

पत्रिका पाठकों की विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए, पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक साधनाओं में संबंधित सामग्री की व्यवस्था करने का अथक प्रयास किया जाता है, दुर्लभ एवं कठिनाई से प्राप्त होने वाली सामग्रियों को उचित न्यौछावर पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जाती है, तथा साधना से संबंधित दीक्षा देने की विशेष व्यवस्था भी की जाती है।

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
वशीकरण यन्त्र	३	१००/-
सम्मोहन सिद्धि दीक्षा	११	३०००/-
सिद्ध नारियल	१२	१५०/-
मूंगे की माला	१२	१५०/-
सम्मोहन वशीकरण यंत्र	१६	३००/-
सम्मोहन माला	१६	१५०/-
पारद गणपति	१७	३००/-
शक्तिपात	२१	२१००/-
कुलाल चक्र	२४	१५०/-
सम्मोहय यंत्र	२६	३००/-
अर्हत यंत्र	२६	१००/-
सम्मोहन यंत्र	३०	२४०/-
सिद्ध उर्वशी यंत्र	४०	३००/-
कुण्डलिनी यंत्र	४५	१५०/-
धनवन्तरी दीक्षा	४९	६००/-
सात हकीक-पत्थर एक अन्नपूर्णा नारियल	५४	४५०/-
हरित माला		
लक्ष्मी सम्मोहन यंत्र	५९	१५०/-
धनाधीश कुबेर यंत्र चार महालक्ष्मी फल	६१	२१०/-
स्फटिक माला	६२	१५०/-
शशिदेव्यअप्सरा यंत्र	६५	२४०/-
तांत्रोक्त नारियल	६६	१५०/-
भाग्योदय यंत्र	७३	१५०/-
स्वप्नेश्वरी यंत्र	७४	१००/-

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे।

ड्रॉफ्ट किसी बैंक का हो, वह "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान'' के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्रॉफ्ट भेजने का पता :

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज.), टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आवें

३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली, टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

मुद्रक एवं प्रकाशक - श्री कैलाश चंद्र श्रीमाली द्वारा प्रिंट इंडिया, A-38/2, मायापुरी, नई दिल्ली से मुद्रित
कंपोजिंग - फिफ्थ जनरेशन सॉफ्टवेयर प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, फोन - 503299

विशेष तंत्र रक्षा कवच

यह अत्यधिक दुर्लभ, महत्वपूर्ण एवं आपके लिये सौभाग्य दायक योजना है

* यह एक जीवन की पूर्णता प्रदायक योजना है, जिसके माध्यम से आप अपने जीवन को निडर भाव से आगे बढ़ा सकते हैं
* आप निश्चिन्त भाव से लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि इस योजना के माध्यम से हम आपके साथ हैं, प्रतिपल प्रति क्षण सम्पूर्ण जीवन भर ......

हमारे समाज में हर दूसरा या तीसरा परिवार अपने शत्रु या स्वजनों द्वारा शत्रुतावश किये हुए या दूसरों से करवाये हुए तांत्रिक प्रयोग से अत्यन्त परेशान रहता है। ये तांत्रिक प्रयोग जिस पर किया जाता है, उस व्यक्ति का सर्वनाश सा हो जाता है, इसमें व्यापार बांधना, मानसिक डिप्रेशन, बुद्धि काम न करना, कमाई होते हुए भी पैसे उड़ जाना, बीमारी से ग्रस्त होना तो होता ही है, यहां तक कि मारण प्रयोग से मृत्यु भी हो जाती है, आदमी जिन्दा लाश बनकर रह जाता है। इस तरह के सैकड़ों पत्र कार्यालय में प्रतिदिन आते हैं एतदर्थ विशेष तांत्रिक पण्डितों ने करुणावश सर्वजन हिताय पूर्ण मंत्रसिद्ध, प्राणप्रतिष्ठित सद्यः लाभप्रद "आजीवन तंत्र रक्षा-कवच" सुलभ किया है, जो अद्वितीय एवं दुर्लभ है। इसके धारण करने के कुछ समय बाद ही इसके अचूक प्रभाव से व्यक्ति प्रभावित होने लगता है। यन्त्र जिस व्यक्ति विशेष के नाम से संकल्पित करके तैयार किया जायेगा, उसी को ही इसके लाभ मिल सकेंगे। इस कवच को धारण करने वाले व्यक्ति पर संसार के किसी भी तांत्रिक या मांत्रिक का तंत्र प्रयोग निष्प्रभावी रहेगा।

कवच धारक पर किसी तंत्र प्रयोग का कोई असर नहीं होगा, उल्टे प्रयोग कर्ता की स्थिति भयानक हो सकती है।

यदि किसी व्यक्ति पर कवच धारण से पूर्व ही किसी ने तंत्र प्रयोग करवा रखा हो तो कवच धारण करने के एक महीने के भीतर-भीतर उस प्रयोग का दुष्प्रभाव समाप्त होने लग जायगा।

इस कवच को धारण करने वाला व्यक्ति आजीवन किसी भी प्रकार की तंत्र बाधा एवं भूतप्रेत आदि बाधाओं से सुरक्षित रहेगा।

इस दिव्यतम कवच की न्यौछावर मात्र ११०००/- रुपये (ग्यारह हजार) है। यह कवच गुरुधाम में आकर प्राप्त कर सकते हैं, या पत्र आने पर भिजवाया जा सकता है।

और फिर इतने बड़े अनुष्ठान को देखते हुए यह धनराशि है क्या ... कुछ भी तो नहीं

आप क्या करें

कुछ भी नहीं, न पंडितों-पुरोहितों के चक्कर काटें और न परेशान हों ... सब कुछ हम पर छोड़ दें

धनराशि अग्रिम मनिआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से भेजें, बैंक ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो पर जोधपुर में देय हो एवं "मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान जोधपुर" के नाम से बना हो।

यह धनराशि वापिस लौटाई नहीं जायगी और न इस संबंध में किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य होगी और पत्रिका के प्रथम पृष्ठ पर छपे सभी नियम मान्य होंगे।

इस योजना का लाभ केवल भारत में रहने वाले साधक शिष्य या पत्रिका पाठक ले सकते हैं।

ड्राफ्ट इस पते पर भेजें :

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)-३४२००१, टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

अथवा

आप दिल्ली में-३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं - टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

रजिस्ट्रेशन नं०. ३५३०५/८१ A.H.W. पोस्टल-एल. आंर. जे. ३६६७/८६-८७

हिप्नोटिज्म के क्षेत्र में

अपने आप में एक दुर्लभ पुस्तक

आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के १०० स्वर्णिम सूत्र

लेखक

पूज्य गुरुदेव

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

- ऐसे सूत्र - जिनके माध्यम से प्रयत्न एवं पारंगतता प्राप्त करने पर किसी को भी अपने वश में किया जा सकता है। पति, पत्नी, अधिकारी, कर्मचारी, प्रेमी, प्रेमिका या कोई भी स्त्री या पुरुष हो, आप इन सूत्रों के द्वारा अभ्यास कर पारंगत होने पर पत्थर को भी वश में करने की क्षमता प्राप्त कर सकते हैं।
- आत्म-सम्मोहन, स्व सम्मोहन, व्यक्तित्व सम्मोहन भीड़ को सम्मोहित करने की कला में सहायक पुस्तक, अपने व्यक्तित्व को आकर्षक लोकप्रिय एवं अद्वितीय बनाने में उपयोगी पुस्तक।

आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के १०० स्वर्णिम सूत्र

"मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान" पत्रिका के लेखों से संग्रहित

मूल्य - ६०/-

सम्पर्क

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर (राजस्थान)

टेलीफोन - ०२९१-३२२०९